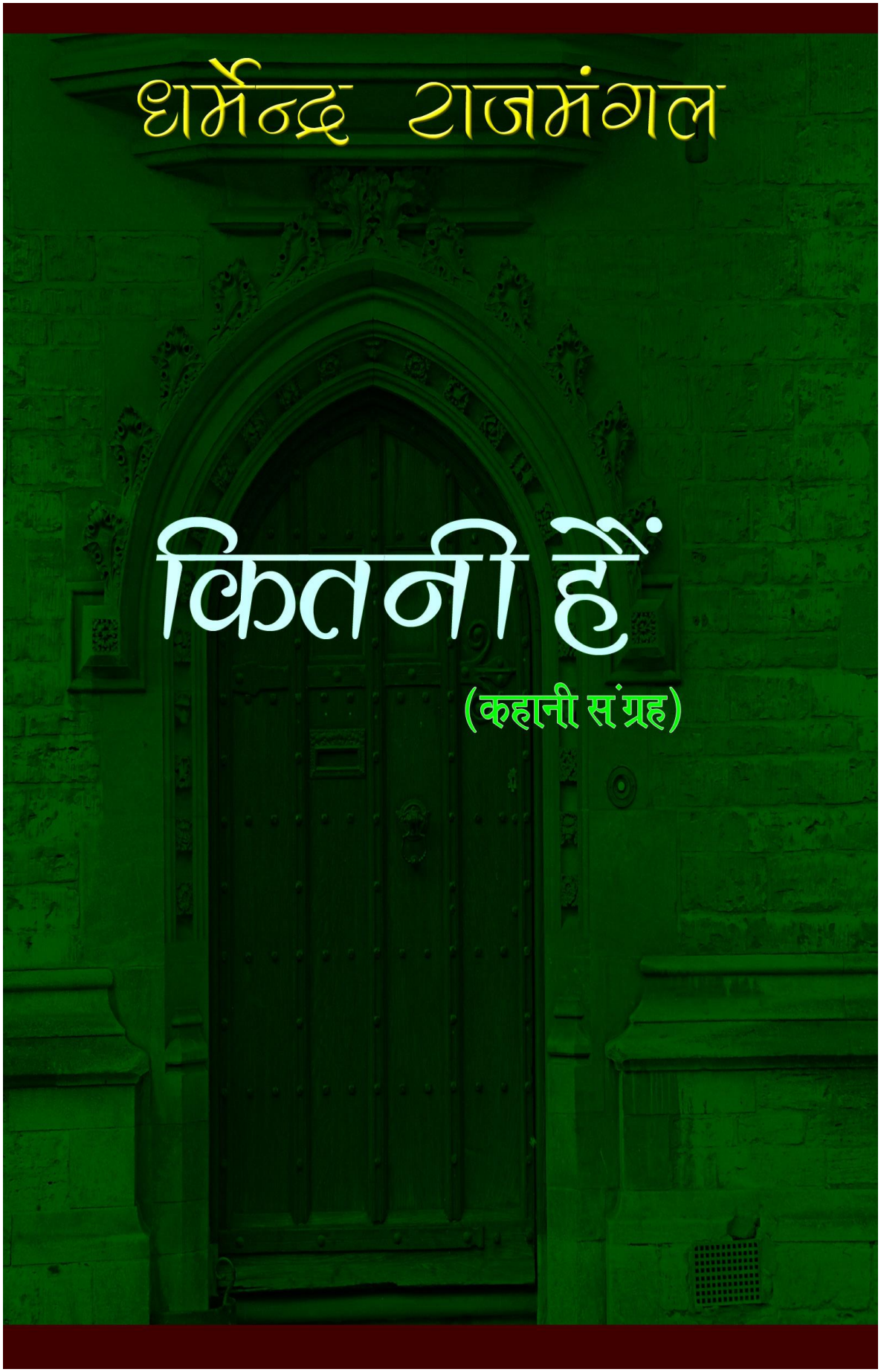
धर्मेन्द्र राजमंगल
कितनी हैं
(कहानी संग्रह)

कितनी हैं

(कहानी संग्रह)

By

धर्मेन्द्र राजमंगल

All Right Reserved @ 2017

Dharmendra Rajmangal

भूमिका

ये है मेरा कहानी संग्रह -कितनी हैं-. इस संग्रह है पच्चीस कहानियां हैं, जो मेरे शुरूआती नौसिखिया लेखन की निशानी हैं. इन पच्चीस कहानियों में आपको हर तरह की कहानी मिलेगी. जिसमें आप ख़ुश होएँगे. थोडा रोयेंगे. हसेंगे भी खूब. सोचने पर मजबूर भी हो जायेंगे. एकाध कहानी आपको किसी की याद भी दिला देगी.

और एक बात और. आपको इन कहानियों में कुछ कमी भी नजर आएगी. तो कृपया नाराज़ न होना. क्योंकि ये मेरी शुरूआती कहानी है. जिनमें अपरिपक्वता भरी हुई है. मैं चाहता तो इन्हें फिर से सम्पादित कर सकता था. लेकिन फिर इनमें वो भाव नहीं होता जो अब मौजूद है.

मुझे उम्मीद है आप इन सब गलतियों को भुलाकर कहानी की अंदरूनी तह को समझेंगे. आप के लिए ही तो लिखता हूँ. फिर आप नहीं पढेंगे तो कौन पढ़ेगा? शुक्रिया.

भागी हुई लडकी

सुबह का समय था. राजू सोया पड़ा था कि तभी किसी ने उसे झकझोर कर उठाया. राजू आँखे मलते हुए उठ गया. सामने मामी खड़ी थीं. मामी ने हांफते हुए कहा, “तुम्हे पता है रात छबीली घूरे के साले के साथ भाग गयी.” राजू ने आँखे मिचमिचा कर देखा कि कहीं वो सपना तो नही देख रहा है. राजू मामी से बोला, “किसने बताया आपको?”

मामी हैरत से बोली, “कौन बतायेगा? पूरे गाँव को पता चल गया.” राजू को बड़ा आश्चर्य हो रहा था. जब रात अपनी मौसी के देवर के साथ छत वाले कमरे में था तो छबीली घूरे के साले कलुआ के साथ इधर से उधर भाग रही थी. तब राजू ने सोचा था कि होगा कोई काम. क्योंकि गाँव में रामलीला चल रही थी. उसमे छबीली के पिता रावण का रोल करते थे और भाई मेघनाथ का

सारा घर रामलीला देख रहा था. इतने में छबीली कलुआ के साथ नौ दो ग्यारह हो गयी. लेकिन राजू के समझ में एक बात न आ रही थी कि छबीली ने कलुआ में ऐसा क्या देखा जो उसके साथ भाग गयी? क्योकि कलुआ का रंग तवे की कारोंच सा काला था. तभी तो नाम कलुआ पड़ा था. उसकी लम्बाई बांस की तरह लम्बी थी और उसी की तरह देह पतली. देखकर लगता था कि कोई मरियल आदमी चला आ रहा है. दांत पीले रंग के और रात में तो कलुआ के सिर्फ पीले दांत ही दिखाई पड़ते थे.

जबकि छबीली गोरी चिट्टी. भरे बदन की थी. उसे देख कर कोई भी लड़का दिल दे बैठे. गोरे मुखड़े पर काली काली आँखें. गालों पे काला तिल. लम्बी नाक उसपर गोल नथुनी. सुनहरे सोने से बाल जो कमर को छूते थे. तो फिर छबीली कलुआ के साथ क्यों भागी. राजू को इस बात का सबसे ज्यादा दुःख था न कि भागी क्यों इस बात का.

राजू फटाफट बिस्तर से उठा और बाहर की गली में आया जिधर छबीली का घर था और थोड़े से आगे कलुआ के जीजा घूरे का घर था. जैसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान का बार्डर और वैसी ही कुछ हालत थी वहां की.

कलुआ की बहन काली और छबीली की माँ रामजनी के बीच शब्दों के गोले दागे जा रहे थे. काली कह रही थी, “अपनी बेटी को संभालो तब मेरे भाई से कुछ कहना. जब लडकी दावत बाँटती फिरे तो लडके खावेंगे नही. बड़ी आयीं कलुआ को बदनाम करने वाली.”

इधर रामजनी का कहना था, “मेरी लडकी सीधी साधी है. उसे इस काले कलूटे कलुआ ने बहका दिया होगा. वरना इतनी संस्कारी लडकी भाग क्यों जाती.” राजू को रामजनी की बात में दम लगा. क्योंकि छबीली को देखकर नही लगता था कि ऐसा कुछ कर डालेगी. लेकिन ये कहना कि सिर्फ कलुआ की

सारी गलती है. ये सही नही था.

राजू तो पहले से ही गुस्सा था. ऊपर से छबीली रिश्ते में उसकी मौसी लगती थी. राजू को कलुआ पर ज्यादा गुस्सा थी इस कारण वह छबीली के घर वालों के गुट में जा मिला.

राजू ने छबीली के पिता को बताया कि रात मैंने छबीली मौसी को कलुआ के साथ छत पर इधर उधर भागते हुए देखा था. छबीली का बाप मलूका पहले तो राजू पर गुस्सा हुआ फिर बोला, "तू रात में नही बता सकता था. अगर रात में बता देता तो इतनी नौबत ही न आती. रात में ही उस कलुआ के बच्चे की टांगें तोड़ लंगड़ा बना देता."

राजू तनकर बोला, "मुझे क्या पता था कि छबीली मौसी ये धमाका कर जायेंगी वरना में ही कलुआ से दो दो हाथ कर डालता." राजू को पता था कि कलुआ उसको उल्टा पीट डालता लेकिन मलूका की नजरों में इज्जत पाने के लिए उसने ऐसा कहा था और ऐसा हुआ भी.

मलूका नर्म पडकर राजू से बोला, "अच्छा चल जो भी हुआ उसे छोड़ और ये बता कलुआ छबीली को लेकर कहाँ गया होगा. कुछ तो सुना होगा तूने." राजू ने सुन रखा था कि लड़का जब लडकी को भगा कर ले जाता है तो किसी होटल या अपने दोस्त के यहाँ जाता है. तो राजू ने तुक्का लगाते हुए कहा, "मैंने सुना था कि वो किसी दोस्त के यहाँ जाने की बात कर रहा था."

सारी पंचायत राजू की कायल हो गयी. क्योंकि उसने कलुआ का पता जो बता दिया था. लेकिन एक बात फिर आ लटकी कि कलुआ कौन से दोस्त के यहाँ गया होगा?. और दोस्त रहता कहाँ होगा?. अब राजू इस बात पर अपना तुक्का नहीं लगा सकता था. इस कारण वह चुप रहा. फिर लोगों ने सोचा कलुआ के एक दोस्त का पता चले तब सारे दोस्तों की खबर अपने आप लग जाएगी.

सब लोग गाड़ी में बैठ कलुआ के गाँव पहुंचे. वहां से कलुआ के एक दोस्त को पकड़ा. उसे दारू पिलाई. डराया धमकाया तब जाकर उसने जाकर उसने दोस्तों की डायरेक्टरी बता दी और घुमाने लगा दोस्तों के ठिकाने पर.

एक जगह जाकर कलुआ का पता चला. एक दोस्त के कमरे में कलुआ छुपा बैठा था. छबीली उसकी गोद में सर रखे लेटी थी. दोनों अपने अपने घर के लोगो की मनोदशा पर सोच के घोड़े दौड़ा रहे थे. छबीली कहती थी, "मेरी अम्मा तो मुझे सामने पाकर मेरे दो हिस्से कर डाले." कलुआ कहता था, "मेरा जीजा मुझे देखे तो मेरा मुंह काले से लाल कर डाले."

तभी दरवाजा बजा. दोनों बिजली के करेंट लगे आदमी की तरह उठ खड़े हो गये. बाहर से आवाज आई, "दरवाजा खोलो." आवाज मलूका की थी. जिसे दोनों प्यार के पंक्षी अच्छे से समझ गये.

मलूका फिर बोला, "दरवाजा खोल दो नहीं तो तोड़ डालूँगा या कमरे को बाहर से बंद कर आग लगा

दूंगा." दोनों प्रेमियों के दिल काँप उठे और फिर तभी छबीली की आँखों में क्रोध की अग्नि जल उठी. उसने कलुआ के दोस्त का रखा देसी कट्टा निकाल लिया और कलुआ को अपने पीछे कर दरवाजा खोल दिया.

लोग कमरे में घुसने वाले ही थे कि छबीली को काली माता के रूप में देख दो दो कदम पीछे हट गये. ऊपर से उसके हाथ में देसी कट्टा भी था. छबीली कट्टा तान कर बोली, "सब के सब भाग जाओ नहीं तो जान से हाथ धो बैठोगे."

लोगों ने ये बात सुनकर अपने कदम और पीछे खींच लिए. तभी छबीली का भाई गोबर आगे बढ़ा. उसने सोचा इज्जत जाने से अच्छा है जान चली जाय. इतना सोच छबीली के सामने जा खड़ा हुआ और बोला, "चला गोली. में भी तो देखूं फिर क्या होता है. एक गोली से ज्यादा तो नही होगी इस देसी कट्टे में. फिर तेरी जो हालत होगी उसका भी अंदाजा कर लेना."

छबीली पर आज इश्क का भूत सवार था. उसने कट्टा का निशाना गोबर के सीने पर लगाया और ट्रिगर दबा दिया और जैसे ही ट्रिगर दबा लोगों ने आँखें बंद कर ली.

लेकिन ये क्या? कट्टा से गोली चली ही नही किन्तु डर के मारे गोबर की पेशाब पेंट में ही निकल पड़ी. गोली न चलने का कारण था कि कट्टे में गोली ही नही थी. अब तो छबीली के भी होश उड़ गये.

मलूका ने आगे बढ़ कर छबीली के बाल पकड़ लिए और कमरे से घसीटते हुए बाहर ले आया. कलुआ की हालत पतली हुई उसे वहीं पर दस्त छूट गये. गोबर और कलुआ की हालत एक जैसी थी दोनों शर्म के मारे सर न उठा सके. लेकिन गोबर का पक्ष आज ज्यादा मजबूत था तो उसने गुस्से में आ कलुआ के लातें बजा दी. कलुआ पहले से ही गन्दा हुआ खड़ा था. लोगों ने उसे छूने की हिम्मत न की बल्कि गोबर को समझाया कि मर गया तो केस हो जायेगा. लडकी मिल गयी चलो अपने घर.

सभी लोग छबीली को ले घर आ पहुंचे. छबीली को देख उसकी माँ रामजनी उसे चप्पल से पीटने लगी. मोहल्ले की औरतों ने जैसे तैसे छबीली को छुड़ाया. रामजनी तो कहतीं थी कि आज दरांती से इसके छोटे छोटे टुकड़े कर कुत्तों को खिला दे. लेकिन ऐसा करने की हिम्मत न हुई. आखिर उन्ही का तो खून था उसमें.

सब शांत हो जाने के बाद तय हुआ कि छबीली की शादी तुरंत येंन केन प्रकारेण कर दी जाय. सारे रिश्तेदारों को खबर कर दी गयी. लेकिन मुसीबत कहाँ थमने वाली थी. कोई भी अच्छा लड़का उससे शादी करने को तैयार न होता था.

लेकिन तभी एक रिश्तेदार ने खबर दी कि उनके मोहल्ले में एक लड़का है जो छबीली से शादी कर सकता है. एक दूसरे की देखाभारी हुई. रिश्ता पक्का हो गया. लेकिन लड़का मोटा था. साथ ही छबीली

से ज्यादा उम्र का था किन्तु शादी तो करनी ही थी. दामन पर लगा दाग जो छुड़ाना था. किसी तरह लडकी के हाथ पीले जो करने थे. छबीली से एक भी बार ये न पूछा गया कि लड़का तुम्हें पसंद है या नहीं.

शादी हुई उस दिन मोहल्ले वाले लोगों को लड़के वालों के पास न फटकने दिया गया. इसलिए कि कोई बोल न दे कि लडकी भाग गयी थी. इस आफत से बचने के लिए सिखाये पढाये. चुस्त लडके लगाये गये. उनसे कहा गया कि मोहल्ले का कोई भी आदमी लडके वालों से बात न कर पाए.

बड़ी मुश्किल से रामराम कह छबीली की शादी की रस्में पूरी हुई. छबीली के बाप मलूका ने पंडित को दो चार बार झिडक दिया. बोला, “एकाध मंतर भूल जाओगे तो आफत न आ जाएगी.” पंडित मलूका से बोला, “मैं तो भूल जाऊं पर सामने लडके पक्ष का पंडित नहीं भूलेगा. उसका क्या करु.”

छबीली चुपचाप मंडप में बैठी रही. उसे शादी में आनंद न आ रहा था. उसकी आँखे तो सिर्फ कलुआ की सूरत देखना चाहती थी. लेकिन जो वर छबीली के बगल में बैठा था वो छबीली को देख फूला न समा रहा था.

शादी निपट चुकी थी. छबीली बिदा होने को हुई. माँ रामजनी का दिल भर आया. दोनों माँ बेटी लिपट कर खूब रोयीं. माँ रामजनी ने कसम दी और बोली, “बेटी अब जैसा भी है वो मंजूर करो. पुरानी बातें गलती समझ भुला डालो. शायद तुम्हारी शादी अच्छी जगह करते लेकिन तुम्हे जमाने का हाल तो पता ही है. हम मजबूर है हमें माफ़ करना. अब किसी को शिकायत का मौका न देना.”

छबीली भी माँ के गले मिल कर रो रही थी. बोली, “माँ तुम्हें कभी दुःख न दूंगी. अब ससुराल से केवल मर के ही बापिस आउंगी. तुम मेरी चिंता भूल जाओ और मेरा कहा सुना भी माफ़ करना.” सारे मन के दाग धुल चुके थे. राजू की आँखे भी नम थी. सोचता था कि प्यार इंसान को कितना सुधार देता है और बिगाड़ भी सकता है. छबीली के बाप मलूका की आँखे भी बेटी को विदा होते देख नम थी.

उसके बाद छबीली अपनी ससुराल चली गयी. कलुआ फिर कभी उस गाँव में नही आया. छबीली भी शायद उसे भूलती जा रही थी. आज वह एक बच्चे की माँ थी. आज सब कुछ शांत सा था. जैसे कुछ हुआ ही न हो. लेकिन इतिहास की कई परतें कई कहानियाँ लिए मौजूद है. लेकिन उन्हें कुरेदे कौन? सब अपने में व्यस्त है. परन्तु राजू के दिमाग में यह अभी भी वैसा ही है. जैसा तब था.

***

खुजली की दवा

कस्बे के सबसे लोभी आदमियों में कल्लू की गिनती होती थी. लोग उन्हें कल्लू मामा कहकर पुकारा करते थे. यह बात तब की है जब कल्लू मामा के खाज खुजली हुई थी. शुरुआत में खुजली बहुत थोड़ी सी थी लेकिन धीरे धीरे यह पूरे शरीर पर फैल गयी. कल्लू मामा नित नये नये इलाज कम घरेलू नुस्खे अपनाते फिरते किन्तु कोई फायदा न हुआ.

कल्लू मामा जी से खुजली इलायची मामी के लग गयी अब तो मामी जी ने आफत खड़ी कर दी. बोली, "हफ्ते भर में अगर खुजली ठीक न करायी तो घर में न घुसने दूंगी." कल्लू मामा तुनककर बोले, "अरे ये भी कोई बात हुई. ये खुजली है कोई भागवत का पाठ नही जो हफ्ते भर में खत्म हो जाय. और ये मैंने जानबूझ कर तो नही की जो मुझे घर में न घुसने दोगी?"

इतना कह मामा जी खुजली ठीक करने का कोई सस्ता उपाय ढूढने लगे. उन्हें किसी ने बताया कि गो मूत्र लगाओ भयकर से भयंकर खुजली का सफाया हो जाता है. कल्लू मामा को ये उपाय जम गया. क्योंकि मुफ्त का रामवाण इलाज था. लेकिन उसमे शर्त यह थी कि गो मूत्र ताजा होना चाहिए.

कल्लू मामा ने सोचा ये कौन सी बड़ी बात है. और चल दिए ताजा गो मूत्र लेने. हाथ में लोटा था और सर पर गमछा. जाकर एक पडोस के गाय भैस के बाड़े में घुस गये. वहां पर एक काली गाय बंधी हुई थी. कल्लू मामा ने सोचा चलो ये सही रहा. काली गाय का मूत्र तो और ज्यादा कारगर होता है.

कल्लू मामा ने गाय के हाथ जोड़े और प्रार्थना की, "हे गऊ माता. थोडा जल्दी करना मुझे ताजा गो मूत्र ले जाना है." गाय ने सर हिलाया सोचा शायद कुछ खाने के लिए लाया होगा. लेकिन कल्लू मामा ने उस बात का दूसरा मतलब निकला. वे सोचने लगे गाय ने मेरी प्रार्थना सुन ली.

थोड़ी देर बैठने के बाद कल्लू मामा ने देखा कि गाय ने पूंछ उठाई है. उनमे बिजली का करंट दौड़ गया. उठकर गाय के पीछे पहुंचे और लोटा लगा दिया. लेकिन ये क्या गाय ने मूत्र की जगह गोबर का त्याग कर दिया. कल्लू मामा का लोटा गोबर से भर गया.

कल्लू मामा ने सोचा चलो अभी गोबर किया है. अब मूत्र भी करेगी. यह सोच वे सरकारी नल पर अपना गोबर से सना लोटा धोने चले गये. लौटकर आये तो देखा कि गाय अपने मूत्र का त्याग कर चुकी है. कल्लू मामा का दिमाग सनक गया लेकिन क्या कर सकते थे. अब गाय को अपना मूत्र त्याग करने के लिए कल्लू मामा की इजाजत थोड़े ही न लेनी पड़ेगी. वो तो अपने मन से यह सब करेगी.

कल्लू मामा अपने धैर्य को इकट्ठा कर फिर से अपनी पोजीसन ले बैठ गये. उनकी आँखे गाय पर थीं

कि कब वह पूंछ उठाये और कब वे लौटा लगायें. लेकिन गाय को किसी का इन्तजार न था.

थोड़ी देर बाद अचानक गाय ने अपनी पूंछ उठाई. कल्लू मामा को फिर करंट लग गया. वो पलक झपकते ही लौटा ले गाय के पीछे पहुंच गये. गाय ने थोडा मूत्र त्यागा ही था कि कल्लू मामा को देख रुक गयी.

कल्लू मामा भी पशुओ के थोड़े जानकार थे समझ गये ये मेरी वजह से रुक गयी है. उन्होंने लौटा गाय के ठीक पीछे उस जगह पर रखा जहाँ मूत्र की धार आनी थी और खुद दूर आकर खड़े हो गये.

लेकिन ये तो कमाल हो गया. गाय के मूत्र से लौटा भर गया. कल्लू मामा की बांछे खिल गयी. सोचा चलो ये ठीक हुआ. लेकिन जैसे ही आगे बढ़कर लौटा उठाने को झुके. तभी उस काली गाय ने कल्लू मामा के मुंह पर खींच कर ऐसी लात दी कि कल्लू मामा बिलबिला कर वही गिर पड़े. गौमूत्र का लौटा भी पूरा फैल गया.

कल्लू मामा जब नीचे गिरे तो पूरा बदन गोबर और गौमूत्र में सन गया. जैसे तैसे उठकर घर आये. दो दिन कल्लू मामा की सिकाई चली. तभी एक बुढिया ने आकर बताया कि चोट पर गौमूत्र लगाने से चोट जल्दी ठीक हो जाती है. जाकर थोडा गो मूत्र ले आओ आज ही ठीक हो जाओंगे.

कल्लू मामा चिढ कर उस बुढिया से बोले, “अम्मा मेरे सामने गौमूत्र का तो नाम ही न लो. ये जो मेरी दो दिन से सिकाई हो रही है वो गो मूत्र का ही वरदान है.” इतना सुन बुढिया सिटपिटा गयी.

कल्लू मामा जैसे ही ठीक हुए वैसे ही खाज खुजली की दवाई फिर से शुरू कर दी लेकिन विना जोखिम वाली. किसी मसखरे बुड्ढे ने उन्हें बता दिया कि तुम नया मोमीलाल(मोबिओइल) लगा लो. दो दिन में खुजली की अम्मा मर जायेगी. चूँकि किसी बुजुर्ग ने उन्हें उपाय बताया था और किफायती भी था तो उन्होंने उसे आजमाने का मन बनाया. उन्हें क्या पता था कि बुड्ढे ने उनके साथ मजाक किया है.

कल्लू मामा साईकिल ले कर बाज़ार गये और ताजा मोबिओइल ले आये. जो गाड़ी के इंजिन में डाला जाता है. ऑइल लेकर मामा जी घर आये और आयल को एक कटोरे में पलट लिया. अपने सारे कपड़े उतारे (केवल निक्कर पहने रहे) फिर सारे शरीर पर ओयल मलने लगे. इतने में इलायची मामी भी आ गयी. बोली, “ये क्या लगा रहे हो?”

मामा जी बड़े जोश में बोले, “दवा लगा रहा हूं. ऐसी दवा जो खुजली की अम्मा को भी मार डाले.” थोड़ी बहुत खुजली मामी इलाइची के भी थी वे बोली, “अच्छा लाओ थोडा मैं भी लगा लूँ.” कल्लू मामा इलायची मामी को ऑइल देते हुए बोले, “अर्जेंट दवा है अच्छी तरह मालिश करके लगाना.” इलायची मामी ठीक है कहते हुए चली गयी और कमरे में बैठ कर ऑइल की मालिश करने लगी.

कल्लू मामा पूरे शरीर पर मोटर का इंजिन आयल मल चुके थे. इधर मामी भी अपनी मालिश ऑइल से कर चुकीं थी. अभी कल्लू मामा को मालिश किये दस मिनट भी न हुए थे कि सारे शरीर में आग सी पड़ने लगी. इलायची मामी की भी यही हालत हो गयी.

इलायची मामी ने जब ये महसूस किया तो मामा जी से बोली, “ये क्या आग धतुरा ले आये इससे तो आग सी पड़ रही है?” कल्लू मामा बोले, “दवा है अब असर करेगी तो थोड़ी चैंटन तो पड़ेगी ही.” लेकिन थोड़ी देर बाद जलन की मात्रा बढ़ी तो मामा जी से भी न रहा गया. बिलविलाते हुए मामी से बोले, “मैं तो नहाने जा रहा हूं. तुम भी नहा लो लगता है दवाई कुछ ज्यादा ही असर कर गयी.”

इलायची मामी भी तडप रही थी वो भी नहाने लगी और कल्लू मामा को गालियां सुनाने लगी और बोली, “अब शाम को खाना खाने आना तब बताऊगी तुम्हे.”

कल्लू मामा की समझ में आ गया कि बुड्ढे ने मेरे साथ मजाक कर दी. यह सोच नल के नीचे बैठ गये. घंटा भर नहाने के बाद थोडा सुकून मिला. अब डर था मामी इलायची के सामने जाने का. जिन्हें कल्लू मामा ने उसी मोटर ऑइल की मालिश करवा दी थी और कहा था की ये बहुत अर्जेंट दवा है.

काफी देर बाद डरते डरते कल्लू मामा घर गये. फिर इलायची मामी से माफ़ी मांगी तब जाकर उन्हें शाम की रोटी नसीब हुई. कल्लू मामा ने कसम खायी कि अब किसी और का बताया नुस्खा बिना जाने बूझे इस्तेमाल नही करेंगे.

***

बहादुर मौसा जी

कुंती के घर में भीड़ जमा थी. इसकी वजह यह थी कि आज कुंती के मौसा जी उसके घर आये हुए थे. मौसा जी का नाम अंगद था. जैसा नाम वैसा ही कद काठी. वैसे ही कारनामे. अंगद मौसा जी के किससे बड़े मशहूर थे. जहाँ भी जाते अपनी यादें छोड़ आते. इसी कारण लोग उन्हें दोबारा बुलाते. कहते थे कि अंगद मौसा जी जिंदादिल आदमी हैं. उनके घर में आते ही रौनक आ जाती.

चूँकि कुंती ने अपनी ससुराल में अंगद मौसा जी के बहादुरी वाले इतने किस्से सुनाये कि लोग उनके दर्शन के लिए बेताब हो गये. और आज जब अंगद मौसा जी कुंती की ससुराल आये तो मुहल्ले में हल्ला हो गया. एक औरत से दस ओरतों में बात फैली. उन दसों ने पूरे गाँव में बात फैला दी. सब के सब कुंती के घर की ओर दौड़ पड़े. गाँव वाली बात. लोगों को एक दूसरे के घर जाने का बहाना चाहिए.

किसी का रिश्तेदार आता तो दो चार लोग उस आदमी के घर जमा हो जाते थे. देखना चाहते कि रिश्तेदार क्या लाया है? केले. संतरे या पेठे की मिठाई. कितनी लाया है? देखने में कैसा है? शादी हुई कि नही? अगर हुई तो अपनी बहू लेकर आया या नही. अगर शादी नही हुई तो कब होगी? जरूर लडके या लड़की में कुछ कमी होगी.

लेकिन मौसा जी तो गाँव में विश्व प्रसिद्द थे. कुंती ने मौसा जी के बारे इतना बता जो रखा था. देखने में लग रहा था कि मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों में ज्यादा उत्सुकता थी अंगद मौसा जी को देखने की. इसी कारण पुरुष तो दो चार ही थे. लेकिन महिलाओं से कुंती का घर खचाखच भर गया.

अंगद मौसा जी की हालत चिड़िया घर के शेर जैसी हो गई. जहाँ शेर तो एक ही होता है लेकिन देखने वालों की संख्या हजारों में होती है. मौसा जी भीड़ को देख कर सकुचा रहे थे लेकिन आश्चर्य चकित भी थे. सोचते थे कि इतने लोग मुझे देखने आये हैं. अब उन्हें आश्चर्य की जगह गर्व होने लगा. वो सोच रहे थे कि मेरी हस्ती ही एसी है कि लोग खिचे चले आते हैं.

इस वक्त अंगद मौसा जी बैठे चाय पी रहे थे. सामने पकोड़ियाँ रखीं थी. अंगद मौसा जी चाय पीने में आवाज न करते. उनके होंठ जल रहे थे. लेकिन चाय गर्म पीनी चाहिए वे इसका नमूना पेश कर रहे थे. आखिर गर्म चाय पीना भी तो एक बहादुरी का ही काम है. चारो तरफ खड़ी स्त्रियाँ अंगद मौसा की चाय का प्रत्येक घूँट गिन रहीं थी. सोचतीं थीं आखिर इतना मशहूर आदमी चाय कैसे पीता है?

थोड़ी देर बाद भीड़ छटने लगी. लोग अंगद मौसा जी को अपने घरों में आने का न्यौता देने लगे. कहते थे कि आप आओगे तो हमारी शान बढ़ेगी. और फिर अंगद मौसा जी के बार बार मना करने के बाबजूद दो महिलाएं अंगद मौसा जी को अपने साथ ले गयीं. उनकी ऐसी खातिर की कि मानो दोबारा इस गाँव में आयेंगे ही नही. खूब मिठाई. पूरी सब्जी रायता. घी में बूरा मिलाकर खिलाया गया. बड़ी मुश्किल से अंगद मौसा जी उनके घर से विदा ले पाए.

इधर कुंती ने अंगद मौसा जी के लिए तरह तरह के पकवान बनाये. खीर पूड़ी. बाज़ार की मिठाई. घी में बूरा आदि तैयार किये. उसे बस अंगद मौसा जी के आने का इंतजार था. अंगद मौसा जी जैसे ही घर आये. कुंती ने तुरंत चूल्हे पर कढाई चढ़ा दी. अरे भैय्या गर्म पूड़ी जो मौसा जी को खिलानी थी.

लेकिन मौसा जी तो दो घरों की खातिर का मजा लूट कर आये थे. अब उनके पेट में तिल भर की भी गुंजायस नहीं थी. लेकिन कुंती की खातिरदारी से भी भला कोई पेश ले पाया है. उसके घर में कोई मेहमान आये और भूखा रह जाये ऐसा तो संभव ही नही था.

कुंती ने गर्मागर्म पूड़ियाँ. मिठाई. रायता. घी बूरा परोस दिया. अंगद मौसा जी बार बार कसमें खाते. अपने भरे हुए पेट की दुहाई देते लेकिन कुंती की खातिरदारी को चुनौती देना कोई आसन काम था. अंगद मौसा जी को हथियार डालने पड़े. मौसा जी खाने पर बैठे. उनका पेट भरा हुआ था लेकिन फिर भी खाना पड रहा था. सोचा ये भी बहादुरी का ही एक काम है. खाना शुरू किया. खाया न जाता था लेकिन खाए जा रहे थे.

सोचते थे सुबह पूरे गाँव में मेरी इस बहादुरी की भी चर्चा होगी. लेकिन भगवान् को तो आज कुछ और ही मंजूर था. खाना गले तक आ चुका था. लेकिन कुंती के सामने मौसा जी की एक न चली. खाना खाते खाते मौसा जी को डकार आई. हवा की जगह न थी. अन्दर का खाना मुंह में आ गया. अब मौसा जी और न खा सकते थे. बोले, "बिटिया अब न खायेंगे चाहे मर डालो." कुंती समझ गयी कि मौसा जी का कोटा पूरा हो गया.

गर्मी के दिन थे. गाँव के लोग छतों पर सोते थे. अंगद मौसा जी का बिस्तर भी छत पर लगाया गया. छत पर चढने के लिए लकड़ी की सीढी का इस्तेमाल होता था. अंगद मौसा जी बड़ी मुश्किल से छत पर चढ़ पाए. उनसे झुका न जा रहा था. जैसे ही झुकते अन्दर का खाना मुंह में आ जाता. बिस्तर पर चित्त लेट गये. उनसे हिला तक न जा रहा था.

सब लोग सो चुके थे. लेकिन अंगद मौसा जी को नींद न आती थी. सोचते थे क्यूँ आया इस गाँव में. आया भी तो इतना खाना खाया क्यों. मना भी तो कर सकता था. लेकिन बहादुरी की चिंता की वजह से खा लिया. इस समय अंगद मौसा जी काफी परेशानी सह रहे थे. लेकिन सोचते थे कि अभी परेशानी है पर कल मेरी बहुत चर्चा होगी कि मौसा जी तीन घरों का खाना पचा गये. कितना बहादुर आदमी हैं मौसा जी.

इसी बात के ध्यान में मौसा जी लेटे पड़े थे कि अचानक पेट में दर्द उठ आया. पहले हल्का हुआ पर धीरे धीरे तेज होने लगा. आखिर दर्द इतना बढ़ गया कि अंगद मौसा जी दर्द से तिलमिला उठे. अब उन्हें बहादुरी वाली बात का कोसों ध्यान न आ रहा था. दर्द पल पल इतना बढ़ता जा रहा था कि मौसा जी को लग रहा था कि आज उनकी जान न निकल जाए. फिर उन्हें आभास हुआ कि उन्हें जोरों से शौच जाने की इच्छा हो रही है.

अंगद मौसा जी उठे और छत से नीचे जाने को हुए. लेकिन ये क्या सीढी तो थी ही नही वहां पर. क्योंकि सीढी को रात में हटा दिया जाता था. अब क्या होगा. अंगद मौसा जी तो पेट में चक्रवाती तूफ़ान लिए खड़े थे. छत से कूदते तो हाथ पैर टूटने का डर था. उन्हें कुछ न सूझता था ऊपर से उस कमबख्त प्रेशर को झेलना मुश्किल हो रहा था.

एक समय बो भी आया जब मौसा जी को लगा कि ये मल की आंधी उनसे न रोकी जायेगी. वे असमंजस की स्थिति में थे कि क्या करूं. कुंती के घर में शौचालय नहीं था सब लोग खेतों में ही जाते थे. अब अंगद मौसा जी को अंदर का वेग रोकना मुश्किल हो रहा था. लेकिन ये क्या ये तो

गजब हो गया. अंगद मौसा जी मल का आधा वेग अपने कपड़ों में ही खड़े खड़े शांत कर चुके थे. अर्थात कपड़ों में ही शौच त्याग दिया.

उनकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया. सोच रहे थे अब क्या होगा. सुबह मुहल्ले और गाँव के लोग मेरी इस बहादुरी के बारे में क्या कहेंगे. मेरी हंसी होगी. लेकिन अभी के मल त्याग से उन्हें जो शारीरिक सुख मिला था वो अलौकिक था.

परन्तु अभी और वेग था इसलिए अंगद मौसा जी उसका भी त्याग करना चाहते थे. छत पर एक लकड़ियों का ढेर पड़ा था. उन्होंने आव देखा न ताव फुर्ती से लकड़ियों के ढेर में शौच का त्याग कर दिया और ऊपर से थोड़ी सी लकड़ियाँ डाल दीं.

लेकिन अभी मुश्किल हल न हुई थी. अभी मौसा जी के कपड़े उस रंग बिरंगी आफत की आंधी में सने हुए थे. लेकिन वाह री मौसा जी की किस्मत. कुंती के पति मटरू के नये कपड़े छत पर सूख रहे थे. अंगद मौसा जी ने अपने गंदे कपड़े उतार मटरू के नये कपड़े पहन लिए. अपने कपड़ों को उसी ढेर में छुपा दिया.

अभी आधी रात थी और सीढी भी नही थी. वरना मौसा जी का मन वहां से भागने का था. उन्होंने बाकी की रात चारपाई पर बैठ कर काटी. उन्हें नींद न आ रही थी सोचते थे कि सुबह होने से पहले यहाँ से रवाना हो जाऊंगा. अगर सो गया तो भाग भी न पाऊँ. गाँव में लोग सुबह जल्दी उठ जाते हैं. कुंती उठी उसने सीढी लगा दी सोचा मौसा जी शौच वगैरह को जायेंगे लेकिन उसे उस रात वाली आंधी का ज्ञान न था.

ऊपर अंगद मौसा जी की साँसे अटकी हुई थी. सोचते थे कहीं कुंती ऊपर न आ जाय तो सारी पोल खुल जायेगी. लेकिन काफी देर तक कुंती ऊपर न आई तो उन्होंने उठकर देखा. कुंती कहीं दिखाई न दी. मौसा जी ने सोचा सही वक्त है निकल लो अंगद सेठ. मौसा जी धीरे धीरे छत से उतरे. अभी सुबह ठीक से न हुई थी. हल्का अँधेरा सा था.

अंगद मौसा जी धीरे से कुंती के घर से निकले और सडक पर चल पड़े. चारो तरफ देखते चले जा रहे थे. गाँव की ओंरतें मौसा जी को देखकर आपस में बातें कर रहीं थी. एक कहती थी, “देखो बहना कल तीन घरों में खाना खाया पर सारा पचा गये. उफ़ तक न की. न ही हाजमा खराब हुआ. देखो कैसे चलते हैं. रईसों जैसी चाल है. देखो सुबह सुबह घूमने निकले हैं. तभी तो हाजमा फिट रहता है.”

अंगद मौसा जी इन सब बातों को सुनते जा रहे थे. आज उन्हें गर्व की जगह शर्म आ रही थी. सोचते थे जब इन लोगों को रात के बबंडर का पता चलेगा तो यही औरतें मुझे गालियां देंगी. सारी बहादुरी की मिशाल मिटटी में मिल जाएगी.

अंगद मौसा जी दबे पांव दौड़े चले जा रहे थे कि तभी किसी ने उन्हें आवाज दी. मौसा जी सर से पैर तक काँप गये. सोचा कौन आ गया. देखा तो एक आदमी दातुन करता हुआ उनकी तरफ बढ़ रहा था. पास आकर उसने अंगद मौसा जी को हाथ जोड़कर 'रामराम' किया और बोला, “अरे आप तो कुंती भाभी के मौसा जी है. जिनके बहादुरी के किस्से सातों गाँव मशहूर हैं. आपसे मिलने की बड़ी इच्छा थी. आज मिलकर ख़ुशी हुई. जैसा आपके बारे में सुना था वैसा पाया. आप वाकई बहादुर हैं. आप धन्य हैं.”

अंगद मौसा जी में काटो तो खून नही. उन्हें आज ये तारीफें अच्छी नही लग रहीं थी. रात वाला तूफ़ान उन्हें डरा रहा था. वे फटाफट उस लडके से पीछा छुड़ाकर चल दिए. मौसा जी कहते जा रहे थे कि अब इस गाँव में जिन्दगी भर न आऊँगा. घंटे दो घंटे में पोल खुल जाएगी. सारा रायता फैल जायेगा. बहादुरी के चर्चे गालियों में बदल जायेंगे.

इधर कुंती ने देखा मौसा जी को बड़ी देर हुई. अभी तक शौच करके नहीं लौटे. जब कुंती ने ये बात अपने पति मटरू को बताई तो मटरू बोले, “किसी से बात कर रहे होंगे या किसी ने अपने घर चाय पर बुला लिया होगा. क्योंकि तुम्हारे मौसा जी मशहूर ही इतने हैं.” मगर फिर भी उन्हें बुलाकर लाता हूं. लाओ मेरे कपड़े दे दो. उन्हें ढूंढ कर लाता हूं.” कुंती बोली, “आपके कपड़े छत पर है अभी लेकर आती हूं.”

यह कहकर कुंती कपड़े लेने ऊपर चली गयी. लेकिन कपड़े वहां पर नही थे. और होते भी कैसे उन्हें तो अंगद मौसा जी पहन कर भाग गये थे. कुंती ने सोचा शायद पड़ोसिन चंदा के घर उड़कर गिर पड़े होंगे. उसने चंदा को आवाज लगाई, “चंदा तुम्हारे घर हमारे 'उन' के कपड़े तो उडकर नही आये. काले रंग की शर्ट और पेंट हैं.”

चंदा ने मौसा जी को उन कपड़ों में जाते देखा था. बोली, “अरे वो कपड़े तो मौसा जी पहने थे. अभी थोड़ी देर पहले ही हमने देखा था.” कुंती चंदा की बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गयी. सोचने लगी कि वे तो अपने कपड़े पहने थे. अभी इतना सोचकर घूमी ही थी कि लकड़ियों पर नजर पड गयी. वहां पर अंगद मौसा जी की सफेद शर्ट दिखाई दी. उसने थोड़ी सी लकड़ियाँ हटायीं और फिर जो देखा उसे देखते ही साडी के पल्लू से नाक बंद कर ली. वह पूरी कहानी समझ चुकी थी.

उसके सामने गाँव के विश्वप्रसिद्द बहादुर अंगद मौसा जी की बहादुरी का नमूना पड़ा हुआ था. जिस पर मक्खियाँ भिनभिना रहीं थीं. उसने तुरंत अपने पति मटरू को बुलाया और सारी कहानी सुना डाली. मटरू हंसी के मारे लोटपोट हो गये. उन्हें अपने कपड़ों का भी गम न रहा. बोले, “मौसा जी की बहादुरी को मटरू का सलाम.”

कुंती पति के हाथ जोड़कर बोली, “आपको हमारी कसम किसी से कहियेगा मत. क्योंकि इसमें हमारी भी बदनामी होगी.” मटरू हंसी रोक कर बोले, “ठीक है नहीं कहूँगा.”

कुंती बोली, “इसमें मेरी भी गलती है. मैने ही जबरदस्ती खाना खिलाया था. और रात को सीढी भी छत से अलग रखी थी. तो वे और क्या करते.” कुंती ने सारी बात वहीं पर शांत कर दी.

कुछ औरतें बाद में कुंती से पूछती थी, “बहन तुमने मौसा जी को चुपके से विदा कर दिया. हमें भी बता देतीं तो गाँव के बाहर तक छोड़ कर आते. आखिर इतने मशहूर और बहादुर आदमी का सम्मान तो होना ही चाहिए.” लेकिन कुंती कैसे बताती उस बहादुर मौसा की करतूत. बोली, “उन्हें कुछ काम था तो जल्दी चले गये. अबकी आयेंगे तो अच्छे से विदा कर लेना.”

इधर अंगद मौसा जी ने घर पहुंच कर चैन की सांस ली. अब वे अपनी बहादुरी के किससे किसी को भी न बताते थे. कोई उनकी तारीफ भी करता तो चिढ जाते. उन्हें डर था कि कहीं कुंती के घर बाली बहादुरी लोगों को न पता चल जाए.

इधर कुंती के गाँव की महिलाये गाँव के विश्वप्रसिद्द. बहादुर अंगद मौसा जी के आने का इन्तजार करतीं है. लेकिन मौसा जी तो कसम खा चुके थे. कुंती के गाँव न जाने की.

***

गहने चोर

कहानी हमारे सबसे अलबेले पात्र कल्लू मामा जी की है. कल्लू मामा के साले की शादी थी. वहां से बुलावा आया. अब जाना तो था ही क्योकि मामा जी को अपनी पत्नी यानि हमारी मामी इलायची देवी से डर जो लगता था.

अब बात गहनों पर आकर रुक गयी. इलायची मामी बोली, "बिना गहनों के तो घर से बाहर कदम भी न रखूं. ये तो मेरे भाई की शादी है इसमें में तो बन ठन कर जाउंगी. जिससे सारा मायका देखता रह जाय."

कल्लू मामा की सटक गयी. बोले, "अब तेरे लिए महारानियों के हार कहाँ से लाऊं? पैसा क्या पेड़ से गिरता है जो गहने बन जाएँ." मामी घुड़ककर बोली, "तो बिजनेस डालने के लिए मेरे गहने गिरवी क्यों रखे? अब कहीं से लाकर दो मैं कुछ नही जानती."

आपको बताते चले कि मामा जी को चूड़ी बेचने का बिजनेस खोलने का अरमान था. उन्होंने पैसे इकट्ठे करने के लिए इलायची मामी के गहने गिरवी रख दिए. पैसा ले जाकर चूड़ी वाले एजेंट को दे दिया. दो दिन बाद पता पड़ा कि वो चूड़ी वाला एजेंट हकीकत में चूड़ीयों का एजेंट था ही नही. मामा जी का पैसा ले कर नौ दो ग्यारह हो गया. तब से मामी के गहने उसी सुनार के पास गिरवी रखे थे.

कल्लू मामा की नींद अब उड़ चुकी थी. उन्हें पता था कि इलायची मामी अब उन्हें ठीक से सांस न लेने देंगी. तभी उन्हें एक विचार आया कि क्यों न किसी से गहने दो चार दिन के लिए उधार ले लिए जाएँ. इस बात ने कल्लू मामा में हवा भर दी. अब सारा मामला आ लटका यहाँ कि गहने उधार लिए किससे जाए? फिर उन्हें ध्यान आया कि पडोस की एक औरत एक बार उनसे गहने उधर ले कर गयी थी क्यों न उसी से पूछा जाय.

कल्लू मामा ने सारी बात इलायची मामी को बताई. मामी तुनककर बोली, "मुझसे तो न माँगा जाएगा. तुम खुद मांगलो." कल्लू मामा बोले, "ठीक है तू उस औरत को बुलवा फिर गहने मैं मांग लूँगा." मामी ने अपना बच्चा भेज कर पड़ोसिन कपूरी भाभी को बुलवा लिया. कपूरी भाभी बड़ी बडबोली थी. आते ही बोली, "बताओ कल्लू लला क्या काम है मुझसे?" कल्लू मामा झिझकते हुए बोले, "भाभी काम तो बहुत बड़ा है लेकिन तुम चाहो तो एक पल में कर दो."

बडबोली कपूरी भाभी बोली, "लला तुम कहो तो तुम्हारे लिए जान दे दूँ..." लेकिन तभी उन्हें ध्यान आया कि इलायची मामी भी वहां मौजूद है. तो सिटपिटा गयी. सोचती थी दिल की बात कैसे बोल दी. फिर सम्हलते हुए बोली, "मेरा मतलब जो मुझसे बन सकेगा मैं करुँगी तुम बताओ तो सही?"

कपूरी भाभी और कल्लू मामा एक दूसरे को जाने अनजाने दिल में चाहते थे लेकिन इलायची मामी के

डर से आज तक इजहार न कर पाए. इसी कारण पहले कल्लू मामा कपूरी भाभी को गहने उधार दे चुके थे और आज उनसे मांग भी रहे थे.

कल्लू मामा को शर्माता देख इलायची मामी को गुस्सा आ गया वे बोलीं, "सीधे सीधे क्यों नही बता देते कि गहने उधार चाहिए." कपूरी भाभी ने जब यह सुना तो बोली, "हे राम. इस बात के लिए इतना सकुचा रहे थे तुम. अरे किसी बच्चे को भेजकर मंगवा लिए होते. तुमने तो हमे गैर समझ लिया. हाय दईय्या!"

कल्लू मामा थोडा झेंप गये और प्यार से कपूरी भाभी से बोले, "तुम्हारी कसम भाभी ऐसी कोई बात नही. मैं तो हमेशा अपनी...मेरा मतलब हमेशा अपना समझते है." कल्लू मामा की जबान फिसलते फिसलते रह गयी.

कपूरी भाभी भाग कर गयी और सारे गहने उठा लायीं. और कल्लू मामा की और देखते हुए इलायची मामी से बोली, "लो भाभी पसंद कर लो जो गहना अच्छा लगे वो उठा लो." इलायची मामी गहने देखने लगीं. इधर कल्लू मामा और कपूरी भाभी एक दूसरे को देखने लगे. दोनों की आँखे मोहब्बत के मौन रस में घुल गयी.

उन दोनों की तन्द्रा को इलायची मामी ने तोड़ दिया. बोली, "ये सारे गहने मुझे अच्छे लगे. आप मुझे दे जाओ शादी से लौटकर ले लेना." कल्लू मामा के इश्क में तलवोर कपूरी भाभी बोलीं, "तुम सारे ले लो और आराम से शादी में जाओ मुझे कोई जल्दी नही है." जबकि कपूरी भाभी को पता था कि आज घर जाकर उनकी सास शाम का खाना चैन से न खाने देगी. लेकिन अपना दिल भी तो कोई चीज होती है.

इसके बाद इलायची मामी ने शादी की सारी तैयारी कर डाली. और सब लोग शादी में शामिल होने के लिए इलायची मामी के मायके में चल दिए. कल्लू मामा ससुराल जाते समय फुर्ती से चल रहे थे. अरे भई उनकी सालियों से जो मुलाकात होने वाली थी.

लेकिन उन्हें एक बात का डर उन्हें खाए जा रहा था कि ससुराल जाते वक्त रास्ते में थोडा पैदल चलना पड़ता है क्योंकि वहां कोई तांगा या ऑटो नही चलता. और रास्ता भी सुनसान है. पिछली बार वहां कई लोगो के गहने लूट लिए थे. आज कल्लू मामा को कपूरी भाभी के गहने लुटने का डर था.

सारे रास्ते मामी तो मस्त जा रही थी लेकिन कल्लू मामा को जूडी का बुखार चढ़ा रहा. जैसे जैसे वो सूनसान रास्ता करीब आने को होता मामा की जूडी बढती जाती और आते आते वह रास्ता आ ही गया. कल्लू मामा को जोरों से पेशाब लगी. इलायची मामी से बोले, "अपना ध्यान रखना, मैं अभी हल्का होके आता हूँ."

इलायची मामी बोली, "अब काहे का ध्यान रखूं? दो किलोमीटर दूर तो अपना घर ही है. तुम हल्के हो आओ और अपना ध्यान रखो." अब कल्लू मामा कैसे बताते कि आज उन्हें कपूरी भाभी के गहनों की कितनी चिंता है. उन्होंने जल्दी जल्दी पेशाब की और मामी जी के पास आ गये.

आकर उन्होंने चारो तरफ देखा पूरी रास्ता खाली थी एक भी आदमी नजर न आया. अब उनका डर दोगुना हो गया. तभी उन्हें थोड़ी आगे एक पेड़ के नीचे दो आदमी बैठे हुए दिखाई दिए. अब कल्लू मामा को पूरा यकीन हो गया की ये लोग गहने चोर हैं. उन्होंने मामी से कहा, "अरे इलायची जल्दी से गहने उतारों और एक पोटली में रख कर मुझे दो."

इलायची मामी बोलीं, "पागल हो गये हो क्या? अब मेरा मायका आया जाता है वहां क्या बिना गहनों के जाउंगी?" कल्लू मामा पर गहने चोर का भूत सवार था मामी का हाथ पकड़कर बोले, "तू समझ नही रही है फिर बाद में पछताएगी. ये तेरे गहने लुटने वाले है. मैं अपनी आँखों से वो भविष्य देख रहा हूँ."

मामी ने कल्लू मामा का ये डर देखा तो वे भी सहम गयी. और जल्दी से सारे गहने उतारकर मामा को दे दिए. कल्लू मामा ने सारे गहने अपने रुमाल में लपेट पोटली बनाई और अपनी आंटी(नाड़े वाली जगह) छिपा लिए. फिर मामी से बोले, "सुनो अगर मैं कहूँ भागो तो मेरे साथ भाग लेना, नही तो आज गहने लुटे समझना."

इलायची मामी की डर के मारे हालत पतली हो गयी. वे आज से पहले कभी इतनी डराई न गयी थी. अब कल्लू मामा मामी का हाथ पकड़कर चल रहे थे. एक बच्चा उनकी गोद में था और एक मामी की गोद में. एक को घर पर ही छोड़ आये थे. जैसे ही उस पेड़ के नीचे आये जहाँ दोनों तथाकथित गहने चोर बैठे हुए थे. तो उनमे से एक आदमी ने कल्लू मामा को देख कर कहा, "रामराम रिश्तेदार साहब."

कल्लू मामा ने उनके दुआ सलाम का जबाब न दिया. वे दोनों आदमी भी सोच में पड गये कि इन्होने हमारी रामराम का जबाब क्यों नही दिया? इधर कल्लू मामा ने अपने कदमो की चाल तेज कर दी. चूँकि मामी उनका हाथ पकड़ें थी तो उनकी भी चल तेज हो गयी.

अभी कल्लू मामा अभी थोड़ी दूर चले ही थे कि पेड़ के नीचे बैठे लोग भी उठकर उनके पीछे चल दिए. कल्लू मामा को अब पक्का यकीन हो गया कि आज हम लुट जायेंगे. वे इलायची मामी से बोले, "चल भाग ले नही तो आज गहने भूल जा और हो सकता है है कि जान भी चली जाय. इसलिए भाग ले."

इतना कह कल्लू मामा. इलायची मामी को ले भाग चले. दोनों वाबलों की तरह भाग रहे थे लेकिन इलायची मामी को समझ न आ रहा था कि चोर हैं कहाँ जो हम भागे जा रहे है. पीछे चल रहे दोनों

व्यक्ति भी हैरान थे कि ये दोनों आदमी औरत अपनी गोद में बच्चा लिए भागे क्यों जा रहे है? फिर सोचा शायद कोई बात है इसलिए भागे जा रहे हैं. तो ये दोनों भी भागने लगे.

कल्लू मामा ने देखा कि वे दोनों आदमी हमारे पीछे दौड़ रहे है तो उनके होश उड़ गये. और मामी से बोले, "राम का नाम बोल के भाग ले जितना तेज भाग सकती है, नही तो आज अपने खैर नही." मामी ने मामा के साथ दौड़ लगनी शुरू कर दी.

पीछे चल रहे आदमियों ने भी अपनी चाल थोड़ी तेज कर दी. उन्हें कल्लू मामा के पास पहुंचने की जल्दी थी क्योकि वे उनसे पूछना चाहते थे कि वे लोग भाग क्यों रहे है?

इलायची मामी का मायका यानि कल्लू मामा की ससुराल अब दो कदम दूर पर थी. दोनों दौड़ कर अपनी ससुराल वाले घर में घुस गये और हल्ला कर दिया कि उनके पीछे चोर पड़ गये है. उनके साले और ससुर ने जब यह सुना तो फटाफट लठैतो को आवाज दी और दौड़ चले उसी रास्ते पर.

रास्ते पर पहुंचे ही थे की उन्हें वे दो आदमी मिल गये. ये दोनों आदमी भी उनके रिश्तेदार थे. दोनों ने दुआ सलाम की. फिर कल्लू मामा के सालों ने उन से पूछा कि तुमने कहीं किसी चोर को नही देखा? वे दोनों बोले, "नहीं हमे तो कोई चोर नही मिला. क्यों कोई बात हो गयी क्या?"

कल्लू मामा का साला उनसे बोला, "अरे हमारे जीजा जीजी आ रहे थे तो दो चोर उनके पीछे पड़ गये. मुश्किल से पीछा छुड़ाकर भाग पाए." उन दोनों आदमियों ने जब ये बात सुनी तो बोले, "आपके जीजा जीजी वो ही तो नही जो अभी अभी भागते गये है?"

कल्लू मामा का साला बोला, "हाँ वही तो तो है. क्यों आप को कैसे पता?" उन दोनों में से एक बोला, "अरे वो हमे देखकर ही तो भाग रहे थे. पता नही उनके दिमाग में क्या था जबकि हमने तो कुछ कहा भी नही."

सब लोगो की समझ में पूरी बात आ गयी. सब लोग घर पहुंचे. तो देखा की कल्लू मामा अभी तक हांप रहे. इधर कल्लू मामा ने देखा की वे दोनों चोर पकड़े गये तो गुस्से में बोले, "हाँ ये दोनों है वो चोर. मारो सालों को."

कल्लू मामा के सालों की हसीं छूट गयी. बोले, "ये हमारे रिश्तेदार है. और तुम इन्हें चोर समझ बैठे. क्या जीजा तुम भी बहुत डरपोक हो." जब सारा मामला कल्लू मामा की सालियों को पता चला तो वे उनकी हसी उडाने लगी. और डरपोक जीजा कहकर उन्हें चिढाने लगी.

कल्लू मामा घर से सोच कर चले थे कि सालियों से अच्छा मजाक करेंगे लेकिन यहाँ उल्टा हो गया. उन्होंने अपने कानो को पकड़कर सोचा अब कभी बिना बात शक न करूंगा. अगर आज न डरता तो इतनी किरकिरी न होती.

***

नाम निकाला

एक गाँव में सुरेश नाम का एक व्यक्ति रहता था. उसकी सरकारी नौकरी थी लेकिन खर्चीला भी काफी था. अपनी तनख्वाह से ज्यादा खर्च कर लेता था. रिश्वत खोर भी बहूत था. घर बनवाने के बाद बैंक खाते में एक रुपया भी न रहा. कई बार बैंक मेनेजर ने बुलाकर कहा कि आप बैंक खाते में एक हजार रू तो छोड़ दिया करें. लेकिन सुरेश पर कोई फर्क न पडा. तीन लडके थे तीनो के तीनों खर्चीले. बड़ा तो पढाई ही छोड़ चुका था. तीन लड़कों के अलावा एक लड़की भी थी.

सुरेश की शान तो रहती ही थी. एक बार कार ली वह भी लोन से. बाद में क़िस्त न चुका पाए. बैंक वाले गाड़ी खींच ले गये. मोहल्ले वालों को बताया कि गाड़ी खराब थी तो लौटा दी. अब इस कम्पनी की गाड़ी न लूँगा.

कुछ दिनों बाद सुरेश का एक रिश्तेदार उसके बड़े लडके की शादी का प्रस्ताव लेकर आया. साथ में लडकी वालों को भी लेकर आया. वैसे लड़का अच्छा तो नही था लेकिन बाप की सरकारी नौकरी की वजह से लडकी वाले शादी के लिए राज़ी हो गये. शादी हुई. बहू भी घर में आई.

कुछ दिनों बाद लडकी का रिश्ता भी सुरेश कहीं तय कर आया. लडके की शादी में काफी कर्जा हो गया था लेकिन सुरेश को जो करना था सो करना था. शादी का दिन आया. लडके वालों की डिमांड थी चार पहिये की गाड़ी की. सुरेश ने लोन पर गाड़ी निकाल कर लडके वालो को दे दी. लडकी की शादी ठीक से निपट गयी.

लेकिन सर पर लाखों का कर्जा चढ़ गया. कर्जा देने वाले सुरेश की जान खाने लगे. सुरेश काफी टालता रहा लेकिन कोई कब तक टाला जा सकता था. आख़िरकार परेशान होकर उसने अपने एक दोस्त की राय ली. दोस्त बोला, “घर में इतना सोना है कब काम आएगा?” सुरेश विकल हो बोला, “सारे बहू के गहने है और अभी अभी शादी हुई है. कैसे मांगू उससे?” दोस्त बोला, “एक तरीका है मेरे पास अगर तुम कहो तो बताऊँ?”

सुरेश आतुर हो बोला, “बताओ यार तुम्हारा एहसान होगा.” दोस्त ने बताना शुरू किया, “एक आदमी को जानता हूँ जो गहनों की हूबहू नकल कर देता है. तुम बहू के गहने एक दिन के लिए ले आओ और उसकी शक्ल के हूबहू गहने बहू को दे देना. असली को गिरवी रख के अपना काम चला लो. जब तुम्हारा काम निकल जाए तो बहू को असली गहने दे देना.”

सुरेश को अंपने दोस्त की योजना अच्छी लगी. बोला, “तो तुम कल मेरा ये काम करवा दो.” दोस्त ने हाँ बोल दी. अब सबसे मुश्किल काम था बहू से गहने निकलवाना. सुरेश ने सारी बात अपनी पत्नी को बताई. पत्नी फौरन बोली, “ये काम आप मुझ पर छोड़ दो.”

सुरेश की पत्नी ने बहू के कमरे में जाकर गहनों का पिटारा निकाला और चुपचाप ला कर सुरेश को सारे गहने दे दिये. पिटारा दोबारा बहू के कमरे में रख दिया.

सुरेश दूसरे दिन सुबह ही दोस्त के साथ उस आदमी के पास गया जो नकली गहने बनाता था. सुरेश के पास जो गहने थे उस आदमी के पास उससे मिलते जुलते सारे गहने निकल आये. सुरेश ने सारे गहने लिए उस आदमी का हिसाब किया साथ ही अपने दोस्त को भी धन्यबाद दिया और ख़ुशी ख़ुशी अपने घर चल दिया.

घर पहुंच कर उसने पत्नी को नकली गहने दिए. वो जाकर सारे गहने बहू के पिटारे में रख आई. यानि कि सांप भी मर गया और लाठी भी न टूटी. सुरेश असली गहने सुनार के पास रखकर पैसे ले आया जिससे उसने कर्जदारों को शांत कर दिया.

थोडा समय गुजरा तो बहू अपने मायके चली गयी. वहां किसी की शादी थी तो बहू ने गहने पहन लिए और शादी में शामिल हुई और रात को उसी शादी वाले घर में सो गयी. एक दो दिन बाद हाथ के कंगन अपना रंग छोड़ गये.

बहू ने जब यह देखा तो घबरा गयी. सारी बात अपनी माँ को बताई. माँ ने घर में बताई और सारे घर में बात फैल गयी. अब वहां भीड़ जमा हो गयी. लोग तरह तरह की बातें कर रहे थे.

आखिरकार यह निकर्ष निकला कि किसी ने गहने चुरा कर बदल दिए हैं. काफी हंगामा हुआ. फिर सोचा जिसने गहने बदले हैं उसका नाम तांत्रिक के पास जाकर खुलवाया जाय.

गाँव में नाम खोलने वाले बाबा हुआ करते हैं. वे चोरी आदि में लिप्त व्यक्ति का नाम खोलने का दावा करते हैं. वहू के यहाँ से सुरेश के पास खबर गयी. सुरेश यह सुनकर सकते में आ गया. सोचता था कि कहीं नाम निकालने वाले ने मेरा नाम ले दिया तो गजब हो जायेगा. यह सोचकर उसे सारी राती नींद न आई.

सुबह हुई सुरेश की हालत ऐसी थी जैसी कटने वाले बकरे की होती है. बहू और उसके मायके की दो तीन औरते बाबा के पास पहुंची. बाबा का नाम तो पता नही लेकिन लोग उन्हें "बाबा नाम निकाला" के नाम से पुकारते थे. बाबा ने इन लोगो की बात सुनी. मन्त्र पढ़ा. हवन में घी चढाया. आग जली. आग दिखाकर बाबा ने पूछा, “कुछ दिखाई दिया?” सुरेश के लडके की बहू बोली. “नहीं बाबा.”

बाबा बोला, “कोई बात नही. मैं बताता हूँ. तुम्हारे घर की उत्तर दिशा में जिसका घर है उसी के पास तुम्हारे गहने है. जाकर बसूल लो. हमारी दक्षिणा देती जाओ तुम्हारा काम बन जायेगा.” सुरेश के लडके की बहू ने बाबा की दक्षिणा दी और अपने घरवालों के साथ घर जा पहुंची.

घर पहुंचते ही सारी कहानी बताई गयी. उत्तर दिशा में घर देखा तो मालूम पड़ा उधर उल्फी चाची का

घर है जिनके यहाँ सुरेश के लडके की बहू कल शादी में शामिल हुई थी.

उल्फी चाची अभी शादी के काम ख़त्म कर सांस भी न ले पाई थी कि सुरेश के लडके की बहू पूरी पंचायत लिए उनके घर जा धमकी और बोली, "उल्फी चाची आपके यहाँ जिसने भी मेरे गहने बदले है वो सीधे तरीके से लौटा दे नही तो ईट से ईट बजा दूँगी." उल्फी चाची ने जब सुना तो उनके पैरों के नीचे से जमीन सरक गयी. बोली, "बिटिया कैसी बातें करती हो? हम भला ऐसा क्यों करेंगे? तुम तो हमारी आदत जानती हो."

लेकिन सुरेश की बहू मानने को तैयार न होती थी. मानती भी क्यों. नाम निकाला बाबा ने नाम जो निकला था. वह अडी रही. पंचायत होने लगी. उल्फी चाची रो रो कर कसमें खाती थी. लेकिन सुरेश की बहू मानने को तैयार न होती थी.

आखिरकार पंचायत ने फैसला सुनाया, "उल्फी चाची तुमने बेशक गहने न बदले हों लेकिन गहने तुम्हारे घर में बदले गये हैं इसलिए तुम्हे गहने की आधी कीमत तो भरनी ही होगी. नही तो तुम्हारे खिलाफ पुलिस थाने में कानूनी कार्यवाही होगी."

बेचारी उल्फी चाची मजबूर थी. मान गयीं लेकिन मन रोता था. उनका दिल जानता था कि उनको जो सजा दी गयी है वह गलत है. एक तो निर्दोष को अपराधी ठहराया ऊपर से जुरमाना भी लगाया. चारो तरफ बदनामी हुई वो अलग. अभी अभी उनकी बेटी की शादी हुई थी. काफी पैसा खर्च हुआ था. कुछ कर्जा भी हो गया था. आज एक बोझ और आ पड़ा.

इधर सुरेश ने सारी खबर सुनी तो चैन की सांस ली और भगवान् का शुक्रिया अदा किया. सुरेश और उसकी पत्नी दोनों समझ गये थे कि उल्फी चाची निर्दोष हैं लेकिन बताने की हिम्मत न कर सके. आज एक नाम निकाला बाबा ने कितना बड़ा अनर्थ कर दिया था.

शायद वह इसका अनुमान भी न लगा पाया होगा. अपनी दक्षिणा के चक्कर में एक निर्दोष को फंसा दिया. उल्फी चाची अब पैसे चुकाने की चिंता में थी. सुरेश अब निश्चिन्त हो चुका था. बहू को भी अब गहनों की चिंता ज्यादा न थी.

और वो ढोंगी नाम निकाला बाबा. वो दोबारा अपने काम में लग गया था. सब लोग अपने काम में लग गये. लेकिन कोई सच्चाई न जानता था. उस नाम निकाला कांड की.

***

असली गहने

बात उस समय की है जब कल्लू मामा क्वारे(अनमेरिड) थे. एक दिन उनकी शादी वाले आये. उस दिन कल्लू मामा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा. उनके पैर उस दिन हवा में चलते थे. अपने घर वालों के बताये हर काम को ऐसे करते मानो ये काम उनकी रूचि का है. या यो कहें कि कल्लू मामा जैसे उसी काम के लिए ही जन्मे हो.

भैंसों को चारा डाला. सारा गोबर साफ किया और नहा धो कर नये कपड़े पहन लिए. पैंट की पिछली जेब में छोटा कंघा लगाया. पडोस के लडके से थोडा इत्र मांग कर लगाया और आराम से इस इन्तजार में बैठ गये कि कब लडकी वाले उन्हें देखने के लिए बुलाये.

थोड़ी देर बाद कल्लू मामा जी के पिताजी की अंदर से प्यार भरी नर्म आवाज आई, “बेटा कल्लू सींग.” कल्लू मामा को अपने पिताजी से आज अपना सही नाम पहली बार सुनने को मिला था वो भी ‘सींग’ के साथ. जबकि उनके पिताजी हमेशा उन्हें 'कलुआ' कहकर बुलाते थे.

कल्लू मामा उठकर खड़े हुए और बालों में एक बार फिर से कंघी की. फिर शरमाते इठलाते अंदर गये. अंदर लडकी वालों ने जब कल्लू मामा को देखा तो उन्हें ये पसंद आय गये. और जवानी में कल्लू मामा थे भी सुंदर. इसमें कोई दो राय नही है.

उसके बाद कल्लू मामा बाहर आ गये और बाद में उन्हें मालूम पड़ा कि उनकी शादी पक्की हो गयी है. फिर तो उनका घमंड सातवे आसमान पर जा टिका. दोस्तों से इतराके बात करते. घर वालों पर भी रौब छाड़ने में पीछे न रहते.

आखिरकार वो दिन भी आ गया जब कल्लू मामा की बारात जानी थी. उस रात कल्लू मामा को नींद नहीं आई थी. सारी रात मामी के सपने आते रहे. सुबह हुई तो उन्होंने अपने को सजाना सवारना शुरू कर दिया. दो दिन पहले कहीं से गोरे होने का क्रीम पाउडर ले आये थे. आज उन्होंने उस सामान को निकाला और लगाना शुरू कर दिया.

बालों में खुसबू के तेल की मालिश की. लेकिन एक आफत आ लटकी. जो क्रीम पाउडर कल्लू मामा लाये थे वो ठीक नही निकला. उसने रंग को गोरे की जगह और ज्यादा काला कर दिया. कल्लू मामा यह देखकर बहुत मायूस हुए. एक बार को उनका मन हुआ कि पहले उस क्रीम पाउडर बेचने वाले दुकानदार का भूत उतारकर आयें. जिसने उन्हें ये सामान देते हुए कहा था कि अगर गोरे न हो जाओ तो मेरी आधी मूँछ काट देना.

फिर सोचा चलो शादी से लौटकर कमबख्त की मूँछे साफ़ करूँगा. क्योंकि शादी से पहले कल्लू मामा कोई अनावश्यक जोखिम नही लेना चाहते थे. और ये ही तो असली शादी के खिलाडी की पहचान

होती है.

बारात का टाइम हुआ. बस आ चुकी थी. एक बस में कल्लू मामा और बाकी के परिवार वाले बैठे. दूसरी में सारे गाँव के लोग. बस चल पड़ीं और सीधी जाकर कल्लू मामा की ससुराल में जाकर रुकीं. शादी की तैयारियां शुरू हुई. कल्लू मामा को पल पल भरी पड़ रहा था. उनका मन तो होता था कि मामी जी को उठा कर सीधे घर ले जाएँ. लेकिन समाज के आगे बेचारे कल्लू मामा असहाय थे.

अब शादी में रुकावट थी तो बस एक चीज की. वो थे बधू के चढ़ावे वाले गहने. शादी की जल्दी में वावले हुए कल्लू मामा ने अपने पिताजी को बुलाकर पूछा, “पिताजी अब क्या रट्टा है. गहने दे क्यों नही देते. जल्दी शादी हो छुट्टी हो.”

उनके पिताजी डपटते हुए बोले, “ज्यादा उतावला न हो. तुझे बहुत जल्दी पड़ी है शादी की. अभी तुझे उठाकर घर भेज दूंगा और तेरे छोटे भाई की शादी करा ले जाऊँगा.” कल्लू मामा सकपका गये बोले, “पिताजी में तो बस यूं ही....” पिताजी उसी अंदाज़ में बोले, “हाँ हाँ ठीक है अब अपना मुंह बंद करके चुपचाप देखता जा.” कल्लू मामा बेचारे चुपचाप बैठ गये. क्या करते पिताजी से कुछ अंट शंट बोलते तो शादी फेल होने का डर था.

गहनों का मसला ऐसा था कि गाँव के प्रबुद्ध लोगों ने राय दी कि तुम पूरब में बारात ले कर जा रहे हो तो असली गहने मत चढ़ाना. क्योंकि बहां के लोग गहने लौटाए या न लौटाएं कोई पता नही. इस कारण पिताजी ने कल्लू मामा के बड़े भाई को नकली गहने लाने के लिए भेजा था जो अभी तक लौट कर नही आ पाए थे.

सारा डर इस बात का था कि पूरब साइड में बदमाशों और चोर डकेतों का डर ज्यादा था. काफी मशहूर इनामी डकेतों का बोलवाला था इस इलाके में. पिताजी को कल्लू मामा के बड़े भाई का डर था कि कहीं कोई डकैत नकली गहने उनसे न छुड़ा ले तो उन्हें फिर असली गहने चढ़ाने पड़ेंगे.

थोड़ी देर बाद थोडा हंगामा सा हुआ. कल्लू मामा शादी में कोई विघ्न न चाहते थे. लेकिन इस हंगामे ने कल्लू मामा को विचलित कर दिया. उन्होंने आव देखा न ताव जनमासे(बरातियों के ठहरने का कमरा) से निकल सीधे हंगामे वाली जगह पर पहुंचे और फिर जो देखा तो उनके होश उड़ गये.

कल्लू मामा के बड़े भाई की हालत किसी भिखारी जैसी लग रही थी. सारे कपड़े फटे हुए थे. कल्लू मामा के होश तो पहले ही उड़ चुके थे. अब अक्ल भी उड़ गयी. उन्होंने भाई का हाल चाल पूछने की जगह उनसे पूछा, “अरे बड़े भईया गहने तो बच गये या वो भी लुट गये.”

पिताजी को कल्लू मामा के इस सवाल ने बहुत उत्तेजित कर दिया. वे गुस्से में बोले, “लड़का जान बचाकर आया है तुझे गहनों की पड़ी है. चल भाड में जाय तेरी शादी. अब नही करता में तेरी शादी.

चलो भाई सब लोग बारात बापस ले चलो."

कल्लू मामा पिताजी के पैरों में पड़ गये. बोले, "पिताजी मुझे माफ़ करना ये मेरे मुंह से निकल गया. लेकिन मुझे तो बड़े भईया की ज्यादा चिंता है. आप मुझे माफ़ कर दो. आगे ऐसा नही बोलूँगा." बाकी के सब लोगों ने भी पिताजी को समझाया कि लड़का नादान है आप इसकी बात का बुरा मत मानो और शादी की रस्मे शुरू होने दो. पिताजी का गुस्सा थोडा ठंडा पड़ा उन्होंने शादी की मंजूरी दे दी.

मंडप सज चुका था. पिताजी ने असली गहने चढ़ा दिए लेकिन भारी मन से. कल्लू मामा को उतावली का दौरा फिर शुरू हो चुका था. उन्होंने गाँव के पंडित के कान में कहा, "पंडित जी अगर किसी तरह आधे घंटे में शादी निपटा दो तो आपको इनाम दूंगा." पंडित उनके कान में बोला, "अगर आपने मुंह न बंद किया तो मैं आप के पिताजी से बोल दूंगा. फिर तो हो गयी आपकी शादी." कल्लू मामा पंडित की बात सुन सिटपिटा गये और चुप होकर बैठ गये.

फिर कल्लू मामा के सामने पंडित ने मामी का नाम बोला, "फलाने की पुत्री इलायची देवी की शादी...." कल्लू मामा को आज पहली बार मामी का नाम सुनने को मिला था. उन्हें इलायची मामी का नाम सुन इलायची जैसी महक आने लगी और सीना गर्व से चौड़ा हो गया. सोचते थे गाँव जाकर सब लोग नाम सुनेंगे तो मेरी तारीफें होंगी.

फिर जैसे तैसे शादी निपटी. बारात घर को लौटने लगी. इलायची मामी कल्लू मामा के बगल में बैठी थी. कल्लू मामा को ऐसा आनंद आ रहा था मानो वे इन्द्र सभा में बैठे हो और कोई स्वप्न सुन्दरी उनकी बगल में बैठी हो.

इधर पिताजी की नजर बहू के असली गहनों पर थी कि कोई गहना इधर से उधर न हो जाय. लेकिन कल्लू मामा को इन गहनों से ज्यादा अपनी जीवन संगिनी इलायची मामी की फिकर ज्यादा थी. उनका बस चलता तो वे रास्ते की ठंडी हवा को मोड़कर मामी की तरफ कर देते. लेकिन वो कल्लू मामा थे कोई देवता इंद्र नही.

***

सगुन के पैसे

सुबह का समय था. मैं उठकर बैठा ही था कि एक पारिवारिक मित्र के घर से उनकी पत्नी का फोन आ गया. वो घबरायी हुई बोली, “आप थोड़ी देर के लिए घर आ जाइये.” मैंने पूछा, “क्यों क्या हुआ?” वो बोली, “आप यही आ जाइये फोन पर नही बता सकती.” मैंने जल्दी जल्दी कपड़े पहने और उनके घर रवाना हो गया.

उनके घर पहुंचा तो मालूम पड़ा कि पारवारिक मित्र सुरेश के बेटे रवीश ने रात में दारु पीकर एक लेडी कांस्टेबल से बदतमीजी कर दी है. उस लेडी ने रिपोर्ट दर्ज करा दी और रवीश को पुलिस उठाकर ले गयी.

रवीश के पिता सुरेश अपनी ड्यूटी पर लखनऊ में थे. इसलिए मुझे बुलाया गया क्योकि अधिकतर लोग लेडिज वाला मामला समझ कर पास आना नही चाहते थे. उनका सोचना था कि उसने लेडी पुलिस से बदतमीजी की है. हम गये तो हम भी पकड़े जायेंगे. अंत में मेरा नाम ध्यान आया. सोचा होगा ये कब काम आएगा?

मैने जब पूरा मामला सुना तो मुझे रवीश पर बहुत गुस्सा आया. क्योंकि दारू(जिसे मैंने कभी छुआ तक नही था) पीकर किसी महिला से झगड़ने का क्या मतलब? लेकिन दोस्ती का फर्ज तो निभाना ही था. सुरेश की पत्नी बोली, “आप थाने चले जाईये. जाकर देखिये क्या स्थिति है वहां पर. हमें जाने में तो डर लगता है.” मैंने कहा, “ठीक है.”

एक डरपोक और मेरे साथ भेज दिया जो रास्ते से बहाना बनाकर भाग आया. मैं सुरेश के छोटे लडके को लेकर थाने गया. उस लडके ने रास्ते से लॉकअप में बंद अपने भाई के लिए तीन चार चाय और दो बिस्किट ले लिए.

थाने पहुंचकर में जैसे ही अंदर जाने लगा तो पुलिस वाला जोर से चिल्ला पड़ा, “कहाँ जा रहा वे? मैं सकपका गया. उसके बोलने का तरीका ही ऐसा था. आज तक मेरे घर वालों ने मुझसे इतनी बदतमीजी से न बोला था.

मैंने हिम्मत जुटाकर कहा, “जी सर रवीश नाम का जो लड़का रात पकड़कर लाया गया है, उससे मिलना है.” पुलिस वाला अकड कर बोला, “चल बाहर निकल दोपहर में आना.” मैं पीछे लौट पड़ा तो बोला, “इधर सुन.”

मैं उसके पास गया. उसकी नजर मेरे हाथ में लगी चाय की थैली और बिस्किट पर थी. बोला, “कौन है बो तेरा?” मैं बोला, “ऐसे ही जानने वाला है.” तो उसने कहा, “ठीक है लेकिन मिलना क्यों है?” मैं बोला, “बस चाय वगैरह देनी थी और हालचाल जानना था.”

पुलिस वाला बोला, “इतनी चाय पीलेगा वो?” जब उसने चाय वाली बात बोली तो मैं समझ गया कि ये चाय पीना चाहता है. उसका मुंह देखकर भी ऐसा लग रहा था कि अगर मैं ने उसे चाय न दी तो उसकी लार टपक पड़ेगी.

मैं उसे मक्खन लगाते हुए बोला, “सर थोड़ी आपके लिए भी लाये थे.” यह सुनकर पुलिस वाला फूलकर गदगद हो गया. एक तो मैं ने उसे सर बोल दिया और ऊपर से उसके लिए चाय ले आया. वह बोला, “तो फिर देर किस बात की है पिलाओ.”

यह कहकर उसने मेरे हाथ से चाय की पैकिट और बिस्किट छीन लिए. उस दिन मुझे पता पड़ा हमारी पुलिस कितनी कष्ट में रहती है. बेचारों को सरकार से चाय पानी भी नही मिलता. उसने चाय गिलास में डाली फिर बिस्किट का पैकिट खोला और हो गया शुरू. एक गिलास दो गिलास और तीन गिलास. एक पैकिट बिस्किट और दूसरे में से आधे बिस्किट चट कर डाले.

बाकी बचे आधा गिलास चाय और आधा पैकिट बिस्किट देकर बोला, “लो उसे दे आओ और मिलकर बात करो जितनी देर चाहो. जाओ.” उसने यह कहकर डकार ली और बोला, “ओम सियाराम. तेरी माया.”

मैं इतना सब देखकर मुह फाड़े खड़ा था. मानो कोई बिचित्र चीज देख ली हो. पुलिस वाला बड़ा अजीब आदमी था लेकिन मुझे महात्मा बुद्ध की वह कथा याद आ गयी. जिसमे उन्होंने कहा था कि पहले पेट भर खाना खिलाओ फिर शिक्षा दो.

मैं अंदर गया. रवीश लॉकअप में था. सारी रात मच्छरों ने काटा. पुलिस वालों ने गलियां दी. थोड़ी मार भी पड़ी. सुबह तक सारा नशा हिरन हो चुका था. मुझे देखकर बोला, “भईया गुटखा खाना है.” मैं बोला, “चुप करो और चाय पीओ.” रवीश बोला, “नही ये सब नही खाना.”

पुलिस वाला खड़ा सुन रहा था. बोला, “लॉकअप में गुटखा खाना सख्त मना है.” फिर मेरे पास आया और बोला, “पचास का नोट दो इसके लिए गुटखा मंगवाए देता हूँ.” मेरा मन न करता था लेकिन रवीश की रोनी सूरत देख मैंने पचास का नोट पुलिस वाले को दे दिया. उसने नोट हाथ में से ऐसे खींचा मानो मैं दोबारा जेब में रख लूँगा.

थोड़ी देर में 'एसओ' साहब आ गये. मैं अन्दर केविन में गया. नमस्ते की. आदमी अच्छे थे बोले, “बैठिये. मैंने सारा हाल उन्हें बताया तो बोले, “आज दोपहर में इसकी जमानत करवा लेना मजिस्ट्रेट के यहाँ से.”

इसके बाद में थाने से चलने लगा तो बही पुलिस वाला फिर मिल गया. बोला, “चल दिए. थोड़ी देर में फिर मुलाक़ात होगी. रवीश को लेकर आयेगे पेशी के लिए.” मैं बोला, “जी आपका इन्तजार रहेगा.”

इसके बाद में सुरेश के घर गया. सारी बात बताई. तुरंत भगदड़ मच गयी. एक वकील कर लिया गया. दो आदमी जमानत के लिया भाड़े पर ले लिया गये. जो पैसा लेकर जमानत लेते थे. मैं, सुरेश की पत्नी और उनके दो चार मिलने वाले कलेक्ट्रेट पहुंच गये.

वकील सारी तैयारी कर चुका था. उधर थाने से रवीश कलेक्ट्रेट लाया जा चुका था. रवीश के चेहरे का रंग उतर चुका था. मुझे यह देखकर अच्छा लगा. सोचा अब यह दारू न पिएगा और न किसी औरत से बदतमीजी करेगा.

सब लोग अंदर पहुचे. सामने न्याय अधिकारी बैठे थे. दरवाजे के पास अर्दली बैठा था. मुंह में पान या गुटखा लग रहा था और होट लाल लाल. दरवाजे के किनारे पर पीक मार रहा था. मुझे घिन आई. उसने कई बार पीक मारी. लेकिन क्या कर सकता था? मैं आम आदमी वो अधिकारी का अर्दली.

जमानत हुई. वकील आकर पैसे ले गया. बोला, “अंदर बाबुओं का हिसाब करना है.” हिसाब किताब मेरे हाथ में था. इसलिए मैंने पूछा, “क्यों क्या कलेक्ट्रेट प्राइवेट हो गयी है?” वकील बोला, “क्यों?” मैं बोला, “आप कह रहे हो कि बाबुओ को पैसा देना पड़ता है लेकिन मैंने तो सुना है कि इन लोगों को सरकार पैसा देती है.” वकील बोला, “अरे ये तो रस्म है उनका मान रखने के लिए. वरना क्या जमानत इतनी आसानी से हो जाती.”

मैंने पैसे दे दिए. इतने में आदेश हुआ, “रवीश की हथकड़ी खोल दी जाय.” पुलिस वाले आये और बोले, “पहले तो हमारा भाडा दो. रवीश को टेम्पो से लेकर आये है क्योंकि जीप थाने पर नही थी.” मैं बोला, “क्यों सरकार पैसा नही देती अपराधी को लाने का.” पुलिस वाला बोला, “हमे क्या पता? हमे तो मिलता ही नही शायद साब लोग चटकार जाते होंगे. तुम जल्दी से तीन सौ रू निकालो.”

सुरेश की पत्नी खड़ी देख रहीं थी. इशारा किया दे दो तो मेने पैसे दे दिए. इतने में वकील रवीश के जमानत के पेपर ले कर आ गया. वकील ने पुलिस वालों को पेपर दिए और हथकड़ी खोलने की कहकर अपने स्थान पर चला गया.

पुलिस वाले रवीश को लेकर हमारे पास आये और बोले, “पैसे दो रवीश की हथकड़ी खुलनी है. पूरे पांच सौ रूपये निकालो.” मैंने सुरेश की पत्नी की तरफ देखा. वह चुप खड़ी थी. फिर मैंने आश्चर्य से पुलिस वालों से पूछा, “अरे सर ये पैसे क्यों?” पुलिसवाला बोला, “क्यों का क्या मतलब? क्या पहली बार जमानत करा रहे हो? ये हथकड़ी खुलाई है. ये तो रस्म है यहाँ की. सब देते हैं राजा रंक फकीर.”

मैं हतप्रभ खड़ा था. समझ में नही आता था कि इक्कीसवी सदी में ऐसा होता है. कोर्ट आरोपी को छोड़ने का आदेश देती है और पुलिस उसे छोड़ने की रस्म भराई कराते है. मैंने तो पहली बार ऐसा देखा कि आदमी इतना बेशर्म होकर पैसे मांग रहा होता है जिन पर कि उसका अधिकार ही नही है.

आखिरकार बहस हुई. सुरेश की पत्नी और पुलिस वालों में. पैसे की घिसामिड़ी होने लगी. पांच सौ कम होते हुए तीन सौ पर आ गये. लेकिन सुरेश की पत्नी सिर्फ सौ रूपये देने पर तैयार थी. रवीश की हथकड़ी तो खोल दी गयी. अब केवल हथकड़ी खुलाई पर बहस हो रही थी.

सुरेश की पत्नी सौ का नोट पुलिस वालों के हाथ में रखते हुए चलने लगी. मैं आश्चर्य का मारा दोनों पक्षों का मुंह ताक रहा था. आखिर किस चीज के पैसों पर घिसामिडी हो रही थी? क्योंकि रवीश तो हथकड़ी खुलते ही अपने छोटे भाई के साथ भाग गया था. रात से परेशान जो था.

अब केवल मैं और सुरेश की पत्नी ही बचे थे और पुलिस वाला था कि पीछा ही नही छोड़ता था. सुरेश की पत्नी ने मुझे हक्का बक्का देखा तो जोर से बोली, “अरे आप रुक क्यों जाते है? जल्दी चलिए इन लोगों की तो ये आदत होती है.”

हम लोग तेजी से चलकर ऑटो में बैठ गये. पुलिस वाला भी ऑटो में बैठ गया. उसका तो किराया भी फ्री होता है. ऐसा नही कि ऑटो वाले पैसा नही लेते. इसलिए कि पुलिस वाले पैसे देते ही नही. इस कारण बेचारे ऑटो वाले ने किराया फ्री कर दिया.

ऑटो में बैठकर पुलिस वाला सुरेश की पत्नी के पीछे पड गया. उसने ऑटो रुकवा लिया. अब सुरेश की पत्नी को गुस्सा आ गया और बोली, “मैं नही देती एक भी पैसा जाओ.” काफी लोग ऑटो में बैठे थे. पुलिस वाला समझ गया कि पैसा मिलना मुश्किल हो रहा है तो बोला, “चलो सौ रूपये ही दे दो, बात खत्म.” सुरेश की पत्नी ने बटुबे से सौ का गाँधी छाप नोट निकाल कर पुलिस वाले के ऊपर फेंक दिया. उसने नोट लिया और चलता बना.

समझ में नही आता कि सच्चाई और ईमानदारी के प्रतीक गाँधी बापू का ही इन बुरे कामों में इस्तेमाल क्यों होता है? शायद बापू को दिखाना चाहते होंगे कि देखो तुम ज्यादा ईमानदारी की दुहाई देते थे, लो अब तुम्हारे ही फोटो से बेईमानी का खेल खेलते हैं.

पुलिस वाले के उतरते ही ऑटो चल पड़ा. एक बुजुर्ग मेरे पास बैठे थे. उनकी समझ में कहानी न आई. बोले, “बेटे क्या बात है? किस चीज के पैसे मांग रहा था ये?” मैंने ज्यादा लम्बी कहानी न सुनाकर संक्षिप्त में बताया, “कुछ नही चचा ये 'सगुन के पैसे' मांग रहा था.”

ऑटो चला जा रहा था. लेकिन मेरा मन इन बातों से अलग न होता था. ऑटो के पहिये की गति के साथ बार बार यही बात दिमाग में घूम रही थी कि आखिर कब ये सगुन के पैसे देने का रिवाज़ बंद हो पायेगा?

***

चोर भागो यन्त्र

एकबार कल्लू मामा के मोहल्ले में चोरों का आतंक छाया हुआ था. आये दिन चोर आने लगे. मोहल्ले और गाँव के लोग तरह तरह से अपनी रक्षा का उपाय खोजने लगे. किसी ने घर के आस पास बिजली का करेंट छोड़ दिया. तो किसी ने घर की चारदीवारी पर कांच के टुकड़े लगा दिए. कोई अपना लालटेन रात में जला छोड़ देता जिससे चोर को लगे कि ये घर वाला रात में जाग रहा है. लेकिन असल में वो सो रहा होता था.

अधिकतर लोगों ने अपने छिपे रखे देसी कट्टो को बाहर निकाल कर उनकी सफाई की फिर ग्रीसिंग की और उसे तकिये के नीचे रख कर सोने लगे. औरतों ने भी अपने पास प्रतिबंधित रामपुरीया चाकू रखना शुरू कर दिया.

वे सोचती थी कि हम क्या मर्दों से कम है और मर्दों को भी ये बात अच्छी लगी. सोचा चलो घर की महिलाये कम से कम अपनी रक्षा तो करना सीख ही लेंगी. और साथ में हमारी भी निगरानी होती रहेगी.

लेकिन कल्लू मामा ठहरे अपने देसी आदमी. उनका तरीका हमेशा औरों से अलग होता था और है भी. और रहेगा भी. उन्होंने चोरों से निपटने का अलग तरीका अपनाया. सारा गहना जेवर जमीन में गढवा दिया. मंहगे बर्तन बोरी में भरवाकर चारपाई के निचे छिपा दिए. घर में सौ रूपये से ज्यादा की नकदी रखनी पूरी तरह से बंद कर दी.

ये तो था उनका चोरों से सामान बचाने का उपाय. अब बात आती है कि अगर चोर को भगाना या डराना हो तो कैसे डरायेंगे? क्योंकि कल्लू मामा के पास देसी कट्टा तो था ही नही. और वो लेना भी नही चाहते थे क्योंकि देसी कट्टा कम से कम दो ढाई हजार रूपये का आता था. और कल्लू मामा बिना बात दो ढाई हजार रुपया का खर्चा क्यों करने लगे.

इस खर्चे से बचने के लिए उन्होंने एक तरकीब निकाली. उन्हें याद था कि जब वो अपने खेत पर मक्का रखाने के लिए जाते थे तो गंधक और पुटास(पोटैसियम) मिलाकर एक सरौता टाइप की मशीन में भरते (जिसे धमक्का चलानी मशीन भी कहा जाता है) और उसे जोर से जमीन पर रखे पत्थर में मारते. फिर जो धमाका होता था उससे सारे पंक्षी भाग जाते थे.

उस धमाके में ठीक बंदूक जैसी आवाज होती थी. लेकिन उसमे सावधानी ये रखनी होती थी कि गंधक और पुटास को आपस में तभी मिलाया जाय जब उनसे धमाका करना हो. अगर पहले से मिलायी जाय तो उसमे धमाका हो सकता है. न ही उसे एक साथ पीस सकते है. क्योंकि उन दोनों की रगड ही आग और धमाका पैदा करती है.

कल्लू मामा शहर की दुकान पर गये और सौ सौ ग्राम गंधक और पोटास ले आये. घर आकर दोनों पुड़ियों को अलग अलग रख दिया. क्योंकि एक जगह रखने से उनमे थोड़ी भी रगड लगी तो पूरा घर जलकर राख हो जाएगा. कल्लू मामा ने अपनी बीबी इलायची मामी और बच्चो को इस बात से आगाह कर दिया.

अब सब काम पूरा कर कल्लू मामा चोरों का इन्तजार कर रहे थे. कि कब चोर आये और वे उस लायी हुई गंधक और पुटास से धमाका करें. में यहाँ हर बार गंधक और पुटास के बीच में 'और' लगा रहा हूँ.

क्योंकि कल्लू मामा के अनुसार दोनों पदार्थों को एक जगह रखने से धमाके का डर बना रहता है. और यही डर मुझे भी है कि अगर मैंने इन दोनों शब्दों के बीच और न लगाया तो कहीं धमाका न हो जाय. आप भी पढ़ते समय दोनों शब्दों के बीच में 'और' लगाकर ही पढना.

फिर एक रात कल्लू मामा का इन्तजार खत्म हुआ. क्योंकि चोरों ने मोहल्ले में कदम रख दिया था. कल्लू मामा ने सारे सामन पर नजर दौडाई की कहीं कोई कीमती सामन बाहर तो नही पड़ा. उसके बाद उन्होंने गंधक और पुटास को निकाला. लेकिन अभी दोनों की पैकिट को खोला नही था. सोचते थे अभी से क्या फायदा चोरों को घर के आस पास आने दो तब खोलूँगा.

अभी कल्लू मामा सिल बट्टा लिए बैठे ही थे की चोरों का हल्ला पड़ गया. चारो तरफ से चोर चोर की आवाजे आने लगी. कल्लू मामा अंदर तक हिल गये. लेकिन थोड़ी ही देर में उन्हें अपने घर के आस पास कुछ लोगों के होने की आहट आने लगी. कल्लू मामा को जोरों से पेशाब लग आई. ये सब चोरों के डर के कारण था.

लेकिन ये वक्त इधर उधर होने का नही था. उन्होंने सोचा पेशाब बाद में करके आऊंगा अभी चोरों से तो निपट लूँ. लेकिन ये क्या. कल्लू मामा ने देखा कि चोर उनकी छत से होकर भाग रहे हैं. अब कल्लू मामा को कुछ कर गुजरने का मन हुआ. उन्होंने आव देखा न ताव झट से गंधक और पोटास की पुड़ियाँ उठाई और दोनों चीजों को एक साथ डाल कर उनकी पिसाई शुरू कर दी.

लेकिन ये क्या. अभी ढंग से दो बट्टे भी सिल पर न मारे थे कि इतनी जोर का धमाका हुआ और साथ में आग जली कि छत पर खड़े चोरों के पैर उखड गये. चोर भाग छूटे और सीधे गाँव के बाहर जाकर रुके.

लेकिन सिर्फ इतना ही नही हुआ. कल्लू मामा ने चोरो के डर से जो गलती कर दी उसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ा. जब सिल और बट्टे से उन्होंने एक साथ गंधक और पुटास पीसी थी तो जो आज उस रगडन से जली आग ने कल्लू मामा को बुरी तरह से झुलसा दिया. उन्हें चोरों के डर की वजह से ये ध्यान भी न रहा कि गंधक और पोटास एक साथ नही पीसी जा सकती.

लेकिन अब क्या हो सकता था. कल्लू मामा के हाथ और मुंह बुरी तरह से झुलस गया था. जो टीशर्ट वो पहने थे वो आगे की साइड से जल गयी. लेकिन एक बात जो सही हुई थी वो ये थी कि चोर भाग गये थे. चोरों को भगाने के लिए महल्ले के लोग कल्लू मामा की तारीफें कर रहे थे. लोग कहते थे कि बहादुरी तो ये है जो आदमी ने खुद घायल होकर भी मोहल्ले में चोरी होने से बचाली.

मुहल्ले की औरतों ने भी कल्लू मामा की थोड़ी तारीफ़ कर दी. जिससे कल्लू मामा को जले हुए मुंह और हाथों पर थोड़ी ठंडक मिल गयी. लेकिन आज उन्हें एक सबक मिल गया कि बिना सोचे समझे 'चोर भगाओ यंत्र' का उपयोग नही करना चाहिए.

***

आंधी की आग

बात उस समय की है जब बागों में आमों का मौसम सजा था, चारो तरफ उल्लास ही उल्लास था, बागवानों को इस साल आमों की फसल से बहुत ज्यादा उम्मीद थी. आमों के इस मौसम में गर्मी और बहुत हलकी ठंड का एहसास होता है.

और इसी मौसम में एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे माहौल के उल्लास को पूरी तरह खत्म कर दिया. गाँव में तीन भाई रहते थे, जो रोजाना छोटी छोटी बातो पर लड़ते थे. बड़ा भाई हरपाल शादीशुदा था, बाकी के दो क्वारे.

रोज रोज की लड़ाई से तंग आ एकदिन हरपाल की पत्नी ने हरपाल से कहा, "आप कब तक ऐसे ही लड़ते रहेंगे इससे अच्छा ,कहीं और चलकर क्यों नही रह लेते." हरपाल को बीबी की बात ठीक लगी, उसने पास के गाँव में अपने बहनोई के पास चलकर रहने की सोची.

अगले दिन वह अपनी पत्नी और तीन बच्चो सहित अपने बहनोई के पास पहुंचा. उसके बहनोई ने अपने घर के बराबर में हरपाल को एक घर बनवा दिया. नये घर में आकर हरपाल और उसकी बीबी बच्चे आराम से रहने लगे. हरपाल रोजाना काम पर जाता था, आज उसे किसी से लड़ाई का डर नही था, आज उसका अपना एक घर था.

लेकिन हरपाल को कहाँ पता था कि उसे यहाँ भी शांति न मिलेगी, शायद यह जानता होता तो वह अपने गाँव में ही रहना पसंद करता. एक दिन की बात थी, हरपाल काम पर गया था, आज बच्चों को रोता छोड़ आया थाथ चलने की जिद करते थे लेकिन हरपाल क्योंकि बच्चे रोजाना उसके सा , उन्हें अपने साथ कैसे ले जा सकता था. किन्तु बच्चे थे की मानते ही नही थे.

आज हरपाल ने गुस्से में आकर छोटे लडके की पिटाई कर दी थी लेकिन उसके बाद हरपाल को बहुत ज्यादा ग्लानी हुई, वह सोचता था बच्चे तो बच्चे होते है लेकिन में कैसे बच्चा हो गया जो छोटे लडके को मार बैठा.

काम पर पहुंच हरपाल को उस बच्चे की बहुत याद आने लगी, सोचता था आज काम से जल्दी घर चला जाऊंगा, जाकर उस बच्चे को प्यार से गले लगा लूँगा. हरपाल अनमने मन से काम करता रहा.

लेकिन दोपहर में आंधी बारिश जैसा मौसम हो गया और थोड़ी देर में इतनी तेज आंधी आई कि हर गाँव का आदमी राम राम जपता और कहता कि इतनी तेज आंधी आज तक नही देखी. आमों के बागों में उस आंधी ने ऐसा बिध्वंस मचाया कि जिधर देखो उधर ही पूरा पेड़ आमों से साफ था, ऐसा लगता था मानो किसी ने बड़े सोच समझकर उस पेड़ से आम तोड़े हो.

किसानों की फसले जमीन पर ऐसे बिछ गयी मानो ये ऐसे ही उगी हों. आमों के बगीचे के बागवान सर पकड़कर रोते थे, वे अपनी फसल को अपनी आखों के सामने बर्बाद होते देख रहे थे और कुछ कर भी नही सकते थे.

आंधी अपने पूरे सबाब पर थी, लोग घरो में छिप गये. हरपाल की बीबी आंधी से पहले खाना बना रही थी, जैसे ही आंधी आई वो अपने खाने का सामान ले बच्चो सहित कमरे में चली गयी. उसे चूल्हे की आग बुझाने का ध्यान न रहा, आंधी के समय चूल्हे की आग उड़कर कमरे की छत पर पड़े छप्पर में जा पहुंची. ये वही कमरे का छप्पर था जिसमे हरपाल की बीबी तीन बच्चो सहित बंद थी.

धीरे धीरे आग पूरे छप्पर में पहुंच गयी, कमरे में धुआँ घुटा, अब कमरे में कुछ भी दिखाई नही दे रहा था. हरपाल की बीबी ने गेट को ढूढने की काफी कोशिश की लेकिन घुटे दम और आँखों में लगते धुंए की वजह से वह कमरे का दरवाजा न ढूढ़ सकी.

तीनो बच्चे जो हरपाल की बीबी के साथ कमरे में बंद थे, जोर जोर से रोने लगे. कमरे की हालत ऐसी हो गयी कि न तो बच्चे माँ को ढूढ़ पा रहे थे और न ही माँ अपने तीनों बच्चो को. कुछ ही देर में चारो जानें वेहोश हो गयी, एक माँ और तीन बेटे. छप्पर जल जल कर कमरे में गिरने लगा, अंदर वेहोश पड़े चारो जीव अंदर ही आलुओं की तरह भुजने लगे.

धीरे धीरे पूरा कमरा जलने लगा, इधर उधर के लोगो ने जब यह देखा तो हल्ला मचाकर दौड़ पड़े, सब लोगो ने मिलकर आग पर पानी डाला लेकिन तब तक देर हो चुकी थी. अंदर पड़े माँ और तीन बेटे अब जीवित नही थे. हरपाल को जैसे ही खबर मिली तो वह भागा चला आया, उसे आज वैसे ही घर जाने की जल्दी थी.

हरपाल को क्या पता था कि आज उसे अपने छोटे बच्चे से मिलने की हसरत अधूरी रह जायेगी, अगर ऐसा पता होता तो आज अपने बच्चे को साथ लेकर जाता या उसे मारता ही नही. हरपाल ने घर आकर देखा, जो देखा वो देखने लायक नही था, उसकी बीबी किसी जली हुई लकड़ी जैसी लग रही थी और उसके तीनों बच्चे, वो किसी भुने हुए मांस के टुकड़ों की तरह लग रहे थे.

हरपाल ने अपने सबसे छोटे लडके की लाश को पहचान लिया लेकिन उसके जले हुए मृत शरीर को छूने की हिम्मत न कर पाया, उसे सुबह वाली बात फिर से ध्यान आ गयी, जब उसने अपने छोटे बच्चे पर हाथ उठाया था. हरपाल का दिल आज फटा जा रहा था, उसका सब कुछ तबाह हो चुका था, बीबी बच्चे, घर बार. हरपाल के लिए ये आंधी की आग उसकी तबाही का पैगाम साबित हुई.

आग लगने की खबर पर जिले के आला अधिकारी आये, हरपाल को मुआवजा दिया गया, उस मिले हुए पैसे से हरपाल ने नया घर बनाया और फिर से शादी की. आज हरपाल के घर में नई बीबी और बच्चे है, वो उस बीती हुई आंधी की आग को भूल चुका है लेकिन जिस जगह पर उसका घर बना है

वो जमीन आज भी उस घटना की गवाह है जो आज से कुछ दिन पहले घटी थी.

***

भांग का भूत

सुबह के समय रमेश के मामा जी उसके घर पर आये हुए थे. वे करीब की ही एक कालोनी में रहते थे. रमेश और उसके बड़े भाई गणेश अक्सर उनके साथ मजाक करते रहते थे. एक दिन पहले ही गणेश के लडके का जन्मदिन था, मामा जी को न्यौता दिया लेकिन खर्चे के डर से दावत खाने न गये, सोचा कुछ देना पड़ेगा.

आज सुबह जब मामा जी आये तो कल वाला केक और मिठाइयाँ परोसने की तैयारी होने लगी, तभी गणेश को एक शरारत सूझी. कुछ दिन पहले वो पचास रू की भांग लेकर आये थे. उन्होंने मिठाइयों के अंदर भांग छुपाकर मामा जी को खिलाने की सोची. गणेश ने जब यह बात रमेश को बताई तो दोनों ने फटाफट पूरी तैयारी कर डाली.

भांग की एक परत खोवा की मिठाई में छुपाकर प्लेट में रखी गयी, घरवालों को बताया गया कि इस मिठाई में से कोई मत खाना. फिर मामा जी के पास वही मिठाई पहुंचा दी गयी. मिठाई देख मामा जी के मुंह में पानी आ गया. आपको बता दें मामा जी का घरेलू नाम 'कल्लू' है. उन्होंने पहली बार में ही भांग वाली मिठाई उठाई, मुंह में रखी, मुंह में रखते ही उन्हें थोड़ी सी अलग लगी, बोले, “अरे गणेश ये कौन सी मिठाई है.”

गणेश ने हंसी को दवाते हुए कहा, “मामा जी ये चोकलेटी मिठाई है और काफी मशहूर है.” थोड़ी ही देर में कल्लू मामा मिठाई की प्लेट को साफ़ कर चुके थे. फिर डकार लेते हुए बोले, “भाई मजा आ गया मिठाई तो अच्छी क्वालिटी की है.” रमेश और गणेश की हंसी बड़ी मुश्किल से काबू हो रही थी. थोड़ी देर मामा जी बातचीत करते रहे लेकिन बड़े खुश थे.

इधर रमेश और गणेश एक दूसरे की आखों में देखते मानो एक दूसरे से पूछ रहे हो कि अभी तो भांग ने अपना असर दिखाया ही नही. भांग के बारे में आम लोगो की सोच यह है कि इसे खाकर आदमी हँस रहा हो तो हसता रहता है, रो रहा हो तो रोता रहता है और खा रहा हो तो खाता रहता है. रमेश और गणेश चाहते थे कि मामा जी इनमे से कोई एक हरकत करने लगें लेकिन भांग खाए इतनी देर हुई कल्लू मामा टस से मस न हुए.

आख़िरकार काफी देर हुई, रमेश और गणेश ने आशा छोड़ दी कि भांग अब कोई कमाल दिखाएगी. उन्होंने सोचा कि आज का मिठाई खिलाना भी बेकार गया. मामा जी चलने को हुए, फिर दरवाजे पर खड़े होकर ठिठक गये. थोड़ी देर खड़े रहने के बाद मुड़े और गणेश से बोले, “गणेश मेरा सर घूम रहा है.”

इतना सुनना था कि रमेश व गणेश उछलकर खड़े हो गये, सोचा भांग काम करने लगी,

उनकी स्थिति उस वल्व जैसी हो गयी जो बिजली आते ही जल उठता है. मामा जी का सर चकरा रहा था, वे तख़्त पर बैठ गए और फिर कटे वृक्ष की तरह ढह गये.

रमेश और गणेश की नजरें मिलीं, इशारों में बात हुई, “भाइयो भंग अपना रंग जमा चुकी है.” लेकिन दूसरी तरफ मामा जी अधमरे हुए जा रहे थे. अचानक चित्त लेते हुए मामा जी तख़्त में जोर जोर से सर मारने लगे, गणेश और रमेश की हंसी छूट गयी. लेकिन मामा जी का सर मारना बंद न होता था, सर भी काफी तेज मार रहे थे. फिर वह उठे और खड़े होकर दीवार में सर मारने लगे.

यह सब देख दोनों भाइयों की हंसी छूमंतर हो गयी. रमेश ने भागकर मामा जी को पकड़ लिया, लेकिन कल्लू मामा इतनी ताकत से सर मार रहे थे कि अकेले रमेश से काबू न हुए. मामा जी धरती पर गिरे और सर जमीन में मारने लगे.

रमेश और गणेश के हाथ पैर फूल गये, दोनों ने मामा जी को ताकत से पकड़ लिया. मामा जी में भांग खाकर इतनी ताकत आ गयी थी कि सहज काबू में न आते थे. दोनों ने बडी मुश्किल से काबू कर जमीन से उठा उन्हें तख़्त पर लिटाया.

तभी गणेश को एक विचार आया उसने सुना था कि ठंडे पानी के स्नान से भांग उतर जाती है. गणेश ने हडबडाते हुए रमेश से कहा, “रमेश मामा जी को कस के पकड कर रखना, मैं अभी आता हूं.” गणेश भाग कर अंदर गया, फ्रिज में जमी बर्फ और ठंडा पानी लेकर आया.

एक बाल्टी में ठंडा पानी और बर्फ मिलकर कल्लू मामा के ऊपर सर व चेहरे पर डालना शुरू कर दिया. धीरे धीरे सारा ठंडा पानी मामा जी के सिर से उतर गया, अब मामा जी कंपकपा रहे थे, सारा भांग का नशा हिरन हो गया, कंपकपाते हुए बोले, “एक बीडी चाहिए, एक बीडी दो.”

शायद गर्मी पैदा करने के लिए बीडी पीना चाहते थे. लेकिन ये क्या? रमेश ने बीडी जलाकर दी तो दो सुट्टे में पूरी बीडी खत्म, आँखे तन गयी, शरीर कमान की तरह तिरछा हो गया. गणेश और रमेश के होश उड़ चुके थे. गणेश ने और ठंडा पानी मामा जी के चेहरे पर डाल दिया, पानी पड़ते ही मामा जी फिर दुरुस्त हो गये. अब गणेश को मामा जी की नब्ज मालूम पड गयी. जैसे ही वे कोई तमाशा करते, गणेश ठंडा पानी डाल देता. कल्लू मामा शांत हो जाते.

यह तमाशा काफी देर से चल रहा था, गणेश ने परेशान होकर रमेश से कहा, “रमेश जाकर मामी जी को बुला ला, कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ.” रमेश भागकर गया और मामी जी के घर पहुंचा. मामी जी बैठी चटनी बना रहीं थी. रमेश ने सारी बात मामी जी के कान में कह सुनाई और जल्दी से घर चलने के लिए कहा. मामी जी सिल बट्टा छोड़ रमेश के संग चल दी.

जब रमेश मामी जी को घर लेकर पहुंचा तो मामा जी वही तमाशा कर रहे थे, गणेश का भी

वही ठंडे पानी वाला उपाय जारी था. दोनों की हालत नाग और सपेरा जैसी थी. यहाँ पर मामा जी नाग थे जो फन मारते थे और गणेश सपेरा जो उन्हें ठंडे पानी रूपी बीन से शांत करता था.

घर पहुंची मामी जी यह देख कर घबरा गयी और तुरंत गणेश से कहा, "लला पानी मत डालो ये तुम्हे पता नही क्या मामला है." ये कहने के बाद उन्होंने मन ही मन कुछ मंत्र पढ़ा और मामा जी के सर पर हाथ फेर दिया. रमेश और गणेश वाबले से हो यह नजारा देख रहे थे. मामी जी के ऐसा करने के पीछे कारण था कि मामा जी पर आये दिन भूत आता था. किसी तांत्रिक ने यह मंत्र दिया था, सो मामी जी वही उपाय करने लगी.

मामा जी के ऊपर मन्त्र लगते ही वे फुंकार उठे, बोले, "तुमने इक्यावन रू प्रसाद के उठा कर रखे थे, अभी तक प्रसाद नही बांटा और पैसे भी खर्च कर दिए." इतना कह मामा जी जोर जोर से रोने लगे. मामी जी को यकीन था कि भूत आ गया है लेकिन रमेश और गणेश को आश्चर्य के मारे चैन न पड़ता था सोचते थे की भांग का नशा भूत में कैसे बदल गया, दोनों भाई भोच्क्के थे.

मामी जी कल्लू मामा की तरफ देख कर बोलीं, "हम पचास के सौ उठाकर रखते है लेकिन महाराज हमारे पति को छोड़ दो." इतना कह मामी जी मामा जी के पैरों में गिर पड़ी. मामा जी शांत हो गये, मामी जी को लगा कि भूत को शांत हो गया.

इधर गणेश और रमेश को मारे आश्चर्य के बात न सूझती थी, सोचते थे ये अच्छी भाग खिलाई. मामी जी को लग रहा था कि मामा जी पर भूत आया है, लेकिन चाहकर भी दोनों भाई भांग खिलने वाली बात कबूल न कर सकते थे. चुपचाप भूत की कहानी सुनते रहे.

मामा जी का सारा बदन दुःख रहा था, थोड़ी देर पहले पूरा शरीर जमीन में जो दे मारा था. ठंड के मारे काँप रहे थे, बर्फ का एक बाल्टी पानी जो ऊपर पड़ा था. मामी जी कल्लू मामा को धीरे धीरे घर की तरफ लेकर चली. कल्लू मामा ऐसे चल रहे थे मानो कहीं से पिटकर आ रहे हों, कभी रास्ते के दाए जाते कभी बांये.

मामा जी के चले जाने के बाद कमरे में बैठे रमेश और गणेश की ऐसी हंसी छूटी कि हंसते हंसते लोट पोट हो गये. लेकिन मामा जी की हालत का ध्यान कर तरस भी आता था. दोनों ने कसम खायी कि अब मामा जी को भांग न खिलाएंगे. क्योंकि कल्लू मामा के भांग खाते ही उन पर भांग का भूत आ जाता है.

***

चार सौ बीसी

एक बार एक सरकारी योजना आई. जिसमे वेघरों को घर दिया जा रहा था. कल्लू मामा जी को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने अपनी तिकड़म लगानी शुरू कर दी. सरकारी दफ्तर गये. अपने भांजे गनेश को साथ ले गये थे. सरकारी बाबू ने बताया कि आवेदन दे जाईये. हमारे यहाँ से जांच जायेगी अगर आप हकीकत में इस योजना के काबिल होंगे तो आपको मकान मिल जाएगा.

कल्लू मामा तिकडमी आदमी थे. वे सरकारी बाबू को मक्खन लगाते हुए बोले, "अरे बाबु साहब मकान तो आप चाहेंगे उसे मिल जाएगा बाकी की बाते तो सब बेकार हैं की है." सरकारी बाबू अपनी तारीफ सुन थोडा इठला गया और बोला, "नही भाई ऐसा कुछ नही है. अब देखिये हम चाहे भी तो ऊपर के लोग अडंगा लगा देते हैं. फिर उनकी सेवा पानी करना पड़ता है. आप समझ रहे हो न?"

कल्लू मामा समझ गये कि सरकारी बाबू घूस की बात कर रहा है. बोले, "उसकी आप चिंता न करे बस काम हो जाय बाकी 'सेवा पानी' आपका हो जाएगा." सरकारी बाबू समझ गया कि रिश्वत मिल जायेगी बोला, "आप कागज देकर चले जाओ. फ़ार्म भी आपका मैं ही भर दूंगा."

कल्लू मामा को एक तरकीब सूझी बोले, "बाबू साहब एक बात बताइए क्या मुझे और मेरी बीबी को अलग अलग मकान मिल सकते हैं?" बाबू बोला, "नही आपका नाम उनके वोटर कार्ड पर होगा तो ये गलत मन जाएगा." कल्लू मामा बोले, "सो तो है लेकिन उसके वोटर कार्ड पर मेरा नाम कल्लू की जगह कालीचरण छप गया है तो इस तरीके से तो उसे मकान मिल जाना चाहिए?"

सरकारी बाबू बोला, "अरे भई मेरी नौकरी चली जाएगी. इतना गलत काम मैं कैसे कर सकता हूँ. और खर्चा भी बहुत हो जाएगा आपका. कल्लू मामा समझ गये ये बाबू नौकरी की कम खर्चे की चिंता ज्यादा कर रहा है. बोले, "खर्चे की फिकर आप छोड़ दो उसका तो मैं प्रबंध कर दूंगा. आप इस काम की सोचो."

सरकारी बाबू के दिमाग में लालच घुस गया बोला, "मकान की कीमत का पच्चीस प्रतिशत लूँगा. सोच लो अभी तो तो आगे बढूँ नही तो यही रफा दफा करो." कल्लू मामा ने सोचा कौन सा इसे रूपये देने वाला हूँ एक बार मकान अपने नाम हो जाए फी इसकी ऐसी की तैसी. यह सोच बोले, "ठीक है मुझे मंजूर है."

सरकारी बाबू खुश हो गया बोला, "कुछ एडवांस दोगे या ऐसे ही?" कल्लू मामा ने एक पांच सौ का नोट निकला और सरकारी बाबू को देते हुए बोले, "अभी ये रखो वाकी का इंतजाम करके आप को दे जाऊँगा." सरकारी बाबू मान गया. उसने सारे कागज पत्री कल्लू मामा से ले काम शुरू कर दिया.

कल्लू मामा अपने भांजे गणेश के साथ घर चले आये. गणेश ने कल्लू मामा से कहा, "मामा जी ये

आपने सही नही किया फर्जी काम तो फर्जी ही होता है." कल्लू मामा आज इंद्रजाल के महारथी थे. इठकर बोले, "तू क्या जाने तू अभी बच्चा है. ये मेरे बाल धूप में सफेद नही हुए है. मैंने दुनिया देखी है. आज का काम एक दम दुरुस्त है. अब तू देखता जा कितना सरकारी पैसा तेरे कल्लू मामा के पास होगा."

अब एक काम था जो कल्लू मामा को करना था वो ये कि इलायची मामी को तैयार करना था. घर जाकर सारी बात इलायची मामी को बताई. मामी ने जब सुना पैसा आने वाला है तो खुश हो गयी. लेकिन कल्लू मामा को एक बात और इलायची मामी को बतानी थी वो थी कि उनको अपने पति का नाम कालीचरण बताना होगा.

इलायची मामी ने जब यह बात सुनी तो बिदक गयी. बोली, "हम मरे मारे ऐसा काम न करेंगे कि किसी दूसरे आदमी को आपना पति मान ले." कल्लू मामा बोले, "सोच ले इलायची लाखों का मामला है. रानी बन जाएगी तू. गहनों से लद जाएगी तू इतना पैसा आएगा."

गहनों का नाम सुनकर मामी का इरादा डगमगा गया बोली, "ठीक है लेकिन गहने दिलवाना जरुर. नही तो कसम खाते है तुम्हारा खाना बंद कर देंगे." कल्लू मामा बोले, "उसकी चिंता मत कर. तुझे पटरानी बना कर दम लूंगा." कल्लू मामा ने सोचा कौन से इसे गहने दिलवाने है. पैसा आते ही पागल बना दूँगा फिर भूल जायेगी सब गहना वहना.

कल्लू मामा कभी कभी अपने को तीसमारखां समझने लगते थे और यही चीज उनके लिए घातक सिद्ध हो जाती थी. आज वह उस सरकारी बाबू से भी झूट बोल रहे थे और इलायची मामी से भी. अब उन्हें एक काम और करना था. अपने वोटर कार्ड के मुताबिक अपनी पत्नी और इलायची मामी के पति को मरा हुआ दिखाना था. भाग कर जन्म म्रत्यु पंजीकरण बिभाग गये और पैसे से दोनों के प्रमाण पत्र बनवा लाये.

इलायची मामी को घर जाकर प्रमाणपत्रों वाली बात बताई तो उन्होंने पूरा घर सर पर उठा लिया बोली, "तुमने तो मुझे वैठे विठाये विधवा वना दिया. हाय रे दईया. अब तो दुनिया थूकेगी मुझ पर. मुझे डायन बतायेगे लोग."

कल्लू मामा ने हंगामा बढ़ते देखा तो इलायची मामी के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गए और बोले, "देवी माता तेरा कोई पति नही मरा और न ही कोई मेरी बीबी बनी थी. ये तो सब उस सरकारी पैसे के लिए झूठा खेल है जो अब हम दोनों खिलाडियों को खेलना है. तुझे मैं दिमागदार समझता था और तू ही इतनी बेवकूफ हुई जाती है."

वेवकूफ वाली बात पर मामी जी उखड़ गयी बोली, "दिमागदार तो मैं बचपन से ही हूँ. अब तुम देखो इस इलायची का खेल तुम जो बोलो सो करेगी ये तुम्हारी इलायची देवी."

कल्लू मामा के नाम मकान स्वीक्रत हो गया और उनकी पत्नी इलायची देवी के नाम भी. लेकिन अभी पूरी प्रक्रिया नही हुई थी. क्योंकि सरकारी बाबू को अपना हिस्सा भी तो लेना था. सरकारी बाबू कल्लू मामा से बोला, "हां जी कल्लू सेठ जी लाइए हमारा हिस्सा." कल्लू मामा बोले, "अभी मकान मेरे नाम हो जाने दो फिर उसे बेच के आपका पैसा चुका दूंगा."

सरकारी बाबू को कल्लू मामा की नियत में खोट दिखाई दिया बोला, "देखिये पैसा पहले देना पड़ेगा तब ही मकान आप के नाम हो पायेगा. अब बाकी का आप देख लीजिये?" कल्लू मामा ने आँखे दिखानी शुरू कर दीं बोले, "देखिये मकान तो मैं लेकर रहूँगा क्योंकि मकान मेरे नाम अलोट हो गया है. आप टांग अडायेगें तो आपकी नौकरी और चली जाएगी."

सरकारी बाबू ने सोचा ये आदमी तो बहुत ढीट है. उसने दिमाग में सोचा क्यों न इसको सबक सिखा दूँ. यह सोच उसने कहा, "ठीक है आप मेरी नौकरी छुडवाइए और मैं आपको चारसौ बीसी के केस में जेल में अंदर करवाता हूँ."

कल्लू मामा उसके सामने से तो चुप चाप चले आये लेकिन घर आकर गणेश को सारी बात बताई. गणेश ने सरकारी बाबू से बात की सरकारी बाबू कानूनी कार्यवाही न करने पर तो मान गया लेकिन मकान दिलवाने से उसने साफ़ मना कर दिया.

कल्लू मामा को मामी ने आड़े हाथो लिया. दो दिन खाने की हडताल भी करवा दी. लेकिन कल्लू मामा अभी तक अपनी चालाकी की वजह से पछताते थे. तब गणेश ने कहा, "मामा जी आपके बाल सचमुच धूप में सफेद नही हुए. अगर हुए होते तो आप को काम करने की थोड़ी समझ भी होती." कल्लू मामा आज अपने ही पेंतरे से पिट गये थे. उनसे कुछ भी कहते न बना. लेकिन कसम खायी कि अब ऐसा पेंतरा न अपनायेगे.

***

कलंकी

सुबह का समय था. सूरज निकला. उसकी स्वर्ण पीताभ किरणें मेरे मुंह पर आ रहीं थी. मैं बड़े आनंद से उनका अनुभव करते हुए नींद की गोद में सिमटने की कोशिश कर रहा था कि तभी मेरी पूज्य माताजी ने मुझे जगाया. बोलीं, “कब तक सोता रहेगा. चल उठ मुंह धो ले और गाँव के बाहर कलंकी बैठा है उसे आटा दे आ.”

ये कलंकी वह होता है जिसके हाथ से जाने अनजाने गाय की हत्या हो जाती है. फिर वह उसकी पूंछ के कुछ बाल लेकर एक चादर के कोने में बांधता है और उसी चादर की झोली बनाकर उसमे भीख मांगता है. ये भीख कम से कम बारह गाँव में मांगी जाती है. भीख मांगने वाला कलंकी कोई भी हो. अमीर या गरीब. उसे भीख मांगनी ही पडती है. तभी गाय की हत्या सर से उतरती है.

मैं कटोरी में आटा लेकर गया. देखा कलंकी काला कपड़ा सर पर ढके चादर फैलाए बैठा है. मैंने आटे वाली कटोरी उसकी तरफ बढाई तो वह बोला, “भइय्या चादर पर डाल दो.” जब उसने मुझसे यह कहा तो मुझे लगा कि मैंने यह आवाज कहीं सुनी है. मैंने तुरंत याद किया तो ध्यान आया कि यह आवाज तो पडोस के गाँव में रहने वाले चंदर काका की है. जिनके गाँव में, मैं पढने जाता हूँ और चंदर काका की दुकान है जिस पर मेरा 'उधार खाता' चलता है.

फिर मैंने उनके हुलिए पर नजर दौडाई. वही हाथ जिनसे रोज़ रोज़ गजक. रेवड़ी और खट्टा चूरन लेकर खाता था. जिनसे वो कलम उठाकर मेरे उधार खाते में रुपये लिखा करते थे. वही उकडू बैठने का तरीका जैसे वो अपनी परचून की दुकान पर बैठा करते थे. खांसने का अंदाज़ भी वही था जिसे मैं चार साल से रोजाना स्कूल से आते जाते सुना करता था.

मुझे पक्का यकीन हो गया कि यह वही दुकानदार अपने चंदर काका हैं. मुझसे रहा न गया और में बोल पडा, “चंदर काका तुम.” लेकिन चंदर काका ने कोई जबाब नही दिया. मैंने दोबारा पुकारा, “चंदर काका में बंटू. तुम्हारी दुकान पर उधार खाते वाला.”

इस बार चंदर काका से भी न रहा गया. धीरे से काला कपड़ा हटाया. मुझे उनका मुंह दिखाई दिया. आँखे झरने की तरह वह रहीं थीं. शायद मुझे देखकर कुछ शर्मिंदा भी थे. लेकिन मेरी प्यार भरी पुकार सुनकर उनका मन भर आया. मेरा दिल भी धकधका उठा.

जिनके हाथों चार साल से गजक. रेवड़ी और खट्टा चूरन खाता रहा. वो भी उधार खाते से. आज उसे मुझसे एक कटोरी आटा मांगना पड़ रहा है. मुझसे न रहा गया. में चंदर काका के पास बैठ गया. चंदर काका मेरा हाथ पकड़ कर फफक फफक कर रो पड़े.

मेरा चंदर काका से एक दोस्त जैसा नाता था. रोज़ दुकान पर जाता मन में आता वो खाता. पैसे न होते तब भी चंदर काका कभी मना न करते थे. उन्होंने मेरा उधार खाता बना दिया था. जिससे कि दुकान पर उनका लड़का या घर वाली बैठी हो तो मुझे सामान देने से मना न कर सकें. चंदर काका की उम्र कोई पचास साल के आस पास थी और मेरी सोलह के आस पास लेकिन दोस्ती थी बराबर के

उम्र जैसी. शायद आज इसी लिए वो मेरा हाथ पकड़कर रो पड़े. फिर मैंने पूछा, "काका ये सब क्यों कर रहे हैं आप."

चंदर काका गले में पड़े गमछे से आंसू पोछते हुए बोले, "क्या बताऊँ बेटा सुबह गाय खोलकर घर के पिछवाड़े बाधने जा रहा था तो वह भाग छूटी और जाकर रामू के खेत में घुस गयी. तुम्हे तो पता है कि रामू कितना लड़ाकू है. में तुरंत गाय के पीछे भागा तो गाय अंदर खेत में चली गयी. मैंने पतली सी लकड़ी उठाई और उसे डराकर खेत से बाहर निकालने लगा. गाय डरकर खेत से बाहर भागी तो उसका एक पैर गुलकांकरी की बेल से लभेडा खा गया और वह सर के बल पत्थर से जा टकराई और वहीं ढेर हो गयी. जब गाँव के लोगो को पता चला तो इकट्ठे हो गये और तरह तरह की बातें करने लगे. फिर पंडित जी ने उपाय बताया कि बारह गाँव भीख मांगो. इक्कीस ब्राह्मणों का भोज कराओ फिर हम शुद्ध करा देंगे. तब तक कोई आदमी तुम्हारा मुंह न देखेगा. अगर देखेगा तो अशुभ माना जायेगा और तब तक तुम काला कपड़ा डालकर अपना मुंह छिपा लिया करो."

यह कहते कहते चंदर काका का गला भर्रा गया. में भी सोचने लगा कि जिस आदमी का कोई दोष ही नही उसे किस बात की सजा. इतने में चंदर काका उठ खड़े हुए और बोले, "अच्छा दोस्त चलता हूं. अभी कई गाँव में जाना है." यह कहते हुए चंदर चल पड़े.

में काका को तब तक देखता रहा जब तक कि वो मेरी आँखों से ओझल न हो गये. उसके बाद में घर चला गया. सारा दिन में अपने उस 'दोस्त' के बारे में सोचता रहा जो निरापराधी होते हुए भी अपराधी जैसी सजा भोग रहा था.

दूसरे दिन में स्कूल जा रहा था. सहसा चंदर काका की दुकान पर कदम ठिठके जो रोज़ का दस्तूर था. चाहे में स्कूल जाने के लिए लेट होता तब भी चंदर काका की दुकान पर जरूर रुकता था. उन्हें दुआ सलाम करता. तब चंदर काका कहते, "बंटू लौटकर आना अभी लेट हो गये हो. जल्दी स्कूल पहुँचो."

इतना सुनते ही में चूरन की पैकिट उठाता और यह कहते हुए स्कूल की तरफ भागता, "चंदर काका ये मेरे खाते में लिख देना." काका बोलते, "हाँ हाँ लिख दूंगा." लेकिन आज दुकान पर चंदर काका न थे. उनका लड़का दुकान पर बैठा था. मुझे देखकर बोला, "आओ भैय्या कुछ लेना है." मैं बोला, "नही आज कुछ नही लेना में तो चंदर काका को देखने आया था. कहाँ हैं काका."

लड़का बोला, "अंदर है. अभी शुद्धि तक चेहरा नही दिखा सकते न." मुझे यह सोचकर गुस्सा आया सोचा कितने निर्दयी लोग हैं. इतने अच्छे चंदर काका को कितनी बुरी सजा दी है. में इतना सोचकर चलने को हुआ तो लड़का बोला, "भैय्या क्या आप भी शुद्धि होने तक हमारी दुकान से कुछ न लेंगे."

मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्यों? किसने कहा." लड़का बोला, "सब कहते हैं. इसीलिए तो किसी ने दो दिन से हमारी दुकान से कोई सामान नही लिया." मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और शर्म भी महसूस हुई. मेने सोचा आज दुकान से मेरे द्वारा कुछ न लेने पर ये लड़का यही सोच रहा होगा. में फट से दुकान

पर चढ़ा और उस लडके से बोला, "मुझे दो रूपये की गजक और एक रूपये की चूरन की पैकिट दे दो."

लडके ने तुरंत सामान दिया. उसका हाथ ऐसे चलता था मानो साक्षात् भगवान् उसकी दुकान पर सामन लेने आ पहुंचे हों. चेहरे पर ख़ुशी झलक रही थी. पलक झपकते ही सामान मेरे हाथ में था. सामान लेने के बाद मैंने उस लडके से कहा, "देखो मेरे वारे में कभी ऐसा मत सोचना. में ओरों की तरह नही हूं और चंदर काका से मेरी 'रामराम' बोल देना."

लड़का अपने कहे पर थोडा शर्मिंदा था. मैंने चलने से पहले उसी के सामने थोड़ी गजक खायी और उसे भी खिलाई. यह सब मैंने इस लिए किया कहीं वो ये न सोचे कि सिर्फ सामान लेंगे पर उसे खायेंगे नही. मुझे देखा देखी अन्य लडके भी सामान लेने लगे. दो दिन से विना ग्राहक वाली दुकान पर ग्राहक आने से लड़का ख़ुशी ख़ुशी सामान देने लगा.

स्कूल में आज मेरा मन न लगा. छुट्टी होते ही चंदर काका की दुकान पर भाग छूटा. दुकान पर पहुंचा तो पता चला दुकान बंद है. क्योकि आज शुद्धि कार्यक्रम हो रहा था. मुझे चंदर काका से संवेदना थी और ख़ुशी भी कि आज चंदर काका पाप मुक्त हो जायेंगे तो में रोज उनसे दुकान पर मिला करूंगा. काका के घर से पंडितों का निकलना शुरू हुआ. पेट पर हाथ फेरते हुए मोटे मोटे पंडित और पुरोहितों से मुझे चिढ आ रही थी. लेकिन में कुछ नही कर सकता. यह सोच घर की ओर चल पडा.

अगली सुबह फिर में घर से स्कूल के लिए चला. चंदर काका की दुकान पर पहुंचा तो देखा कि चंदर काका दुकान पर बेठे हैं. दाढ़ी बढ़ी हुई. बिखरे बाल. गुजला हुआ कुरता. ऐसा लग रहा था मानो महीनों से बीमार हों.

मुझे उन्होंने देखा. मैंने उन्हें देखा. दोनों ने एक दूसरे को देखा. दुकान से उठकर चंदर काका ने मुझे गले से लगा लिया. दोनों ऐसे गले मिले कि बर्षो बाद मिले हों. फिर चंदर काका से खूब बातें हुई. उसके बाद खट्टा चूरन और रेवड़ी लेने के बाद में स्कूल चला गया. आज में खुश था. मेरे दोस्त चंदर काका जो मिल गये थे.

स्कूल से छुट्टी होते ही में चंदर काका की दुकान पर पहुंचा. वहां काफी भीड़ लगी हुई थी. चंदर काका के घर से रोने की आवाजें आ रही थी. मेरे कदम बरबस चंदर काका के घर की तरफ बढे. किसी से पूछने की हिम्मत न होती थी.

अंदर जाकर देखा तो मानो आँखों पर यकीन ही न हुआ. लगता था सपना देख रहा हूं. दिल बैठा जाता था. सारा शरीर सुन्न पड़ गया. लगा कि चक्कर खा कर गिर पड़ूंगा. सामने जमीन पर चंदर काका की लाश पड़ी थी. चेहरा देख कर लगता था मानो अभी बोल पड़ेंगे, "आओ बंटू दोस्त क्या लोगे?"

मुझे लगा मेरी टाँगे मेरा बजन न सह सकेंगी. आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा. अब मुझसे मेरे दोस्त की ये चुप्पी और न देखी जाती थी. में झट से दौड़कर बाहर आ गया और बाहर बने चबूतरे पर बैठ गया. मुझे चक्कर आ रहे थे. लोग बाहर खड़े तरह तरह की बातें कर रहे थे. कोई कहता था कि कलंकी आदमी मुश्किल ही बचता है. कोई कहता गाय का हाथ से मरना भला कोई मजाक बात है

और किसी का कहना था कि शुद्धि कर्म में कोई कमी रह गयी होगी. सबका अपना अपना मत था. तभी एक बुड्ढा आया और मेरी बगल में बैठ गया. उस बुड्ढे को में अक्सर चंदर काका की दुकान पर बैठा देखता था. मुझे रोता देख बोला, "लोगों ने मार डाला उसे. पंडितों का भोज कराने के लिए पैसा लिया था. जब पूरा हिसाब जोड़ा गया तो रुपया चंदर की औकात से ज्यादा बैठा. गाय की गाय मर गयी और ऊपर से कर्जा हो गया. लड़की शादी को है. हिसाब जोड़कर घर लौटा तो आकर चारपाई पर लेट गया और फिर न उठा."

इतना कहते कहते बुड्ढे की छोटी और बूढी आँखे छलछला गयीं. मेरे दिल में भी टीस पैदा हो गयी. मुझसे और न रुका गया. घर आकर चारपाई पर लेट गया. निढाल सा चारपाई पर लेटा तो नींद आ गयी. कई दिन स्कूल न गया. जबरदस्ती घर वालों ने स्कूल भेजा लेकिन पैर न पड़ते थे. पता था कि चंदर काका की दुकान रास्ते में पड़ेगी. जी कड़ा कर चल पडा.

चंदर काका की दुकान देखते ही मन कुंद हो गया. आँखे भर आयीं. दुकान खुली हुई थी. उनका लड़का बैठा हुआ था उसका सर मुंडा हुआ था. मुझे देखते ही रो पडा. में भी रोने को था लेकिन रोया नहीं क्योकि मुझे रोता देख वह और ज्यादा रोता. मैंने उसे चुप कराया. लड़का बोला, "भैय्या आ जाया करिए दुकान पर. आपको देख कर पापा की याद आ जाती है."

मैंने हाँ में सर हिला दिया. फिर वह बोला, "कर्जा है सर पर इसलिए रोजाना दुकान खोलनी पडती है." में समझ चुका था. मैंने उससे अपना हिसाब जोड़ने के लिए कहा तो वह बोला, "आ जायेगे पैसे भैय्या. कहीं बाहर के थोड़े ही है आप." मेरे बार बार कहने पर उसने हिसाब जोड़ा. पेंतालिस रू बैठे. लेकिन अंतिम दिन के पैसे न लिखे थे. मेरे हिसाब से पचास रू होते थे.

जब मैंने ये बात उस लडके से कहीं तो बोला, "लास्ट वाले दिन के पैसे पापा ने हिसाब में लिखने से मना कर दिया था. कहा बंटू से आज के पैसे न लेना. क्योकि उस दिन आप को देख कर उन्हें बहुत अच्छा लगा था. मेरी आँखे यह सुनकर भीग गयीं. में उसे रू देकर स्कूल चला गया.

बाद में जब भी में उस दुकान के सामने से गुजरता तो लगता कि चंदर काका निकल कर कहेंगे, "क्यों भाई बंटू क्या लोगे आज." लेकिन यह सब झूठ था. जमाने की नजरों में कलंकी चंदर काका इस पवित्र लोगों दुनिया को छोड़कर चले गये थे.

लेकिन मुझे आज भी उनका इन्तजार था. उनके चितपरिचित हाथों से गज़क. रेवड़ी और खट्टा चूरन खाने का. स्कूल के लिए जल्दी जाओ कहने का. मुझे इन्तजार था चंदर काका के मुझे दोस्त कहकर पुकारने का.

***

कजरी

शहर के किनारे एक कालोनी में एक पांडे जी नाम एक आदमी रहता था, वो जाति से पांडे नही था लेकिन लोगों ने ये पांडे नाम उसका उपनाम रख लिया था. वह एक बैल्डिंग की दुकान पर काम करता था. आदमी तो आम मिजाज का था लेकिन एक आदत उस में सबसे बुरी थी वो थी दारु पीने की, जिसे वो रोजाना को पीता था, ये पीना उसे उसके असली रूप में न आने देता था.

उसके साथ उसकी पत्नी और उसके चार बच्चे भी रहते थे, उनमे दो लडकी और दो लडके थे. सबसे बड़ी लडकी का नाम कजरी था, करीब के एक स्कूल में पढने जाती थी और पढाई में अच्छी भी थी. कालोनी में पांडे का घर सबसे अंत में था. कजरी की उम्र करीबन सत्रह से ऊपर की होने को आई, उसका रंग थोडा साफ़ था और दिखने में आम लडकियों जैसी थी.

कजरी को देख मोहल्ले के कुछ लडके उस पर फ़िदा हो बैठे लेकिन कजरी को इन सबसे कोई मतलब नही था, वो तो उन्हें एक कालोनी के आम लडको की तरह देखती थी. काफी बार ये हुआ कि उन लडकों ने कजरी से अपने इश्क का इजहार करना चाहा लेकिन कजरी ने इन सब बातों को इतनी तजरीह न दी, लडकों को ये बात बड़ी बुरी लगी.

और एक दिन वो हुआ जिसकी उम्मीद किसी ने नही की थी, पांडे रोजाना की तरह दारू पीकर आया और खाना खाकर सो गया, घर के अन्य लोग भी सो रहे थे. गर्मियों के दिन थे, कजरी और उसके भाई बहिन सब छत पर सो रहे थे. रात के कोई बारह बज रहे थे, तीन लोग अचानक कजरी की छत पर चढ़ आयेतीनों के मुंह पर नकाब था ., उन्होंने आकर कजरी को सोते से ही उठा लिया और उसका मुंह बंद कर उसे ले जाने लगे.

कजरी को एकदम से समझ न आया कि ये हो क्या रहा है, फिर उसे उस भयानक परिणाम का आभास हुआ, उसने उन लडकों के चंगुल से निकलने के लिए अपने हाथ पैर मारने शुरू कर दिए, लेकिन कोमल कजरी उन राक्षसों से अपने को न छुड़ा सकी.

लेकिन उन लडकों की बदकिस्मती से उसका मुंह खुल गया, कजरी ने सीधे नीचे सो रही माँ को आवाज दी लेकिन उन लडकों ने कजरी का मुंह फिर से दबा लिया. परन्तु तब तक कजरी का माँ जाग चुकी थी, उसने जैसे ही छत पर नजर दौड़ाई तो उसके होश उड़ गये.

तीन लडके कजरी को दबोचे छत पर खड़े थे, कजरी की माँ ने घबराकर पांडे यानी कजरी के बाप को जगाया लेकिन पांडे तो दारु पीके मस्त पड़ा था, काफी जगाने के बाबजूद भी पांडे न जगा. कजरी की माँ ने हार न मानी, वह लकड़ी की सीढी के सहारे छत पर चढने लगी लेकिन उपर खड़े बदमाश लडको ने सीढी को पीछे धकेल दिया, कजरी की माँ सीढी के साथ उलटी गिर पड़ी.

कजरी ने माँ को गिरता देख अपनी सारी शक्ति इकट्ठी की और उन तीन में से एक लडके का मुंह अपने नाखूनों से खरोंच दिया, वो लड़का अपने मुंह को पकड़कर वहीं बैठ गया.

इधर नीचे से कजरी की माँ ने अपनी बेटी को घिरते देखा तो हल्ला करना शुरू कर दिया, वह जोर जोर से की आवाजें लगाने लगी 'बचाओ बचाओ', उन लडकों में से एक बोला, "देख लेना इस लडकी को उठाकर ले जायेगे और हाँ अगर पुलिस में रिपोर्ट की तो पूरे घर को मार डालेंगे, आज तो जा रहे हैं लेकिन फिर जल्दी ही आयेगे."

इतना कह वो लडके वहां से भाग गये, भयभीत कजरी और उसकी माँ एक दूसरे से लिपट खूब रोये, दोनों के दिल में आज हुई घटना से बहुत गहरा आघात पहुंचा था.

सुबह हुई, चारो तरफ लोगों ने सुना, लोगों ने उन्हें यह राय भी दी कि पुलिस में शिकायत दर्ज करा दो लेकिन कजरी और उसकी माँ इस के लिए तैयार न थी. सोचती थी कहीं उन लोनो ने दोबारा खिसिया कर हम पर हमला किया तो क्या करेंगे, पुलिस क्या हर समय हमारे पास बैठी रहेगी.

कजरी का पढने जाना बंद कर दिया गया, उसका प्राइवेट तौर पर एड्मिसन करा दिया गया था, माँ और कजरी काफी दिनों तक एक जगह सोये, काफी रातें डर के मरे जाग जाग कर काटी.

लेकिन उसके बाद कोई लड़का उनके यहाँ न आया, धीरे धीरे सब कुछ सामान्य होता चला गया, किन्तु अब कजरी की माँ को कजरी की शादी की बहुत जल्दी पड़ी है क्योंकि वो समझती है कि जितनी जल्दी बेटी ससुराल चली जाय उतना बढिया है. हजारों ऐसी ही कजरी रोजाना भय से युक्त हो जाती है लेकिन सब चुपचाप अपने जीवन को जीती चली जाती है, शायद कभी उनके लिए सब कुछ अच्छा हो जाय.

***

मौत की झांकी

शाम का समय था. चौराहे पर जाम लगा हुआ था. एक एम्बुलेंस लगातार सायरन दिए जा रही थी लेकिन उसे जगह देना कोई नही चाहता था. क्योंकि वहां पर भगवान राम की झांकी जा रही थी. ये आयोजन शहर की एक सांकृतिक संस्था ने आयोजित किया था. कई नेतागण भी उसमे मौजूद थे. रईसों की तो गिनती ही नही की जा सकती थी.

स्त्रियों की जमात में भी खासा उत्साह था. वे झांकी में बज रहे गानों पर थिरक रहीं थी. उन्हें देख कर लगता था कि मानो वे भगवान की भक्ति में लीन दुनियां की सुध बुध भुलाये हों. तभी एम्बुलेंस के सामने थोड़ी जगह हुई. गाड़ियाँ चीटियों की शक्ल में रेंगने लगी. एम्बुलेंस भी सायरन देती आगे बढ़ी. झांकी के एक सेवादार ने एम्बुलेंस के पास आ ड्राईवर से कहा, "भाई ये सायरन बंद कर. देखता नही झांकी जा रही?"

एम्बुलेंस का ड्राईवर बोला, "भईया मरीज अंदर है. उसकी हालत ज्यादा खराब है इसलिए सायरन बजा रहा हूँ." सेवादार बोला, "ठीक है अभी जगह हो जाएगी तब निकाल लेना. मगर तब तक सायरन न बजाना. समझे?"

इधर एम्बुलेंस में बैठे कृपाल सिंह का दिल बैठा जा रहा था. बार बार बेटे की तरफ देखते थे. जिसके चेहरे पर दर्द की असंख्य लकीरें उन्हें विचलित किये जा रहीं थी. उनके बेटे का नाम आनंद था. अकेला बेटा था जो बुढ़ापे में आकर पैदा हुआ था. उम्र कोई पंन्द्रह के आस पास रही होगी.

आनंद एक बार पहले भी बीमार हुआ था. तब डॉक्टरों ने बताया था की उसके दिल में छेद है. कृपाल सिंह पर तो मानो बज्र गिर पड़ा था. वे कई दिनों तक इस सदमे में रहे. फिर आनंद धीरे धीरे ठीक हुआ तो वे इस दुःख से बाहर आ गये. सोचा डॉक्टर तो बीमारी बढ़ाकर बताते हैं. भला कोई दिल में भी छेद होता है क्या?

लेकिन जब आनंद को फिर वही दर्द हुआ तो वे घबरा गये. उन्हें कुछ न सूझता था. तब आनंद की माँ रज्जो देवी पडोस के जुगनू को बुला कर लायीं. जुगनू पढ़ा लिखा लड़का था. आते ही बोला, "काका कहो तो एम्बुलेंस बुलवा लूं? उससे आनंद को शहर के अस्पताल में इलाज के लिए जल्दी ले जा सकेंगे."

कृपाल सिंह को कुछ न सूझता था. बोले, "बेटा तुम जैसा समझो वैसा करो. बस आनंद की जान को खतरा न होने पाए." जुगनू ने जल्दी से एम्बुलेंस का नम्बर मिलाया और तुरंत आने को कहा. एम्बुलेंस उस दिन खाली थी इसलिए जल्दी आ गयी. कृपाल सिंह को चलते न बनता था. पैर कहीं के कहीं पड़ते थे. जुगनू और रज्जो देवी ने आनंद को उठाकर एम्बुलेंस में लिटाया.

रज्जो देवी अंदर गयी और पैसों व गहनों से भरी छोटी सी एक पोटली लेकर आई. उन्होंने कृपाल सिंह के हाथ में पोटली रखते हुए कहा, "इसमें सारे पैसे हैं और मैने अपने जेवर भी इसी में रख दिए हैं. खर्च में पीछे न हटना चाहे जमीन गिरवी क्यों न रखनी पड़े?"

कृपाल सिंह ने भावुक हो अपनी पत्नी रज्जो देवी की तरफ देखा और स्वीकृति में सर हिला दिया. एम्बुलेंस चल पड़ी. एम्बुलेंस में बैठे कृपाल सिंह अपने बेटे के सर पर हाथ फेर रहे थे. आंसुओं की झड़ी रोके न रूकती थी. गले में पड़े गमछे से आंसू पोंछ लेते और रास्ते की तरफ देखते जैसे उन्हें लगता हो कि अस्पताल आने वाला है.

कल का दशहरा था इसलिए शहर में चारो तरफ सजावट थी. कृपाल सिंह को जल्दी पड़ रही थी. वे आनंद को जल्दी से डॉक्टर को दिखाना चाहते थे लेकिन झांकी की भीड़ आगे पड़ गयी. जब सेवादार ड्राईवर को घुड़क कर गया तो उसने सायरन बजाना बंद कर दिया. कृपाल सिंह के बार बार कहने पर ड्राईवर बोला, "चचा मैं भी जल्दी चलना चाहता हूं लेकिन साइड मिले तब न? ये झांकी वाले हटने को तैयार नही है."

कृपाल सिंह का दिल बैठा जाता था. बोले, "बेटा मैं कहकर देखूं?" ड्राईवर बोला, "काका वे मानेंगे नही. फिर भी आप कहकर देख लो शायद मान जाए?" कृपाल सिंह एम्बुलेंस से उतरे. उनके कदम लडखडा रहे थे. भीड़ को चीरते हुए वे पुरोहित से दिखने वाले एक आदमी के पास पहुंचे और उससे हाथ जोड़ते हुए बोले, "बाबूजी बच्चा बीमार है. एम्बुलेंस को जरा सी साइड दिलवा दे तो आपकी बड़ी कृपा होगी."

पुरोहित ने सारी बात सुन ली लेकिन अनसुनी करके दूसरी तरफ देखने लगा. जब उसने देखा कि बुढ्ढा अब भी हाथ जोड़े खड़ा है तो ऊँचे स्वर में बोला, "शांति रखो चचा अभी निकल जाना." कृपाल सिंह को एक एक पल भरी पड रहा था. बोले, " बाबूजी मैं आपके पैर पडता हूँ. बच्चा हाथ से निकल जायेगा उसकी हालत ज्यादा नाजुक है."

तभी एक नेता जी आये और पुरोहित जी को हाथ जोडकर प्रणाम किया. पुरोहित हँस कर नेता जी से बातों में लग गया. जब वे दोनों बातों में मगन थे तो कृपाल सिंह ने फिर कहा, "बाबूजी जरा साइड दिला दीजिये आपकी बड़ी कृपा होगी."

पुरोहित ने इस बार कड़े शब्दों में कहा, "बोला न अभी निकाल लेना. अभी झांकी चलने वाली है. अब जाओ यहाँ से." कृपालसिंह हाथ जोड़कर पुरोहित के पैरों में झुक गये और बोले, "मालिक एक ही बच्चा है. बच्चे को कुछ हो गया तो मैं कहीं का न रहूँगा."

पुरोहित थोडा पीछे हटते हुए नेताजी से बोला, "पता नहीं कितना ढीट आदमी है. मैं कई बार कह चुका लेकिन सुनता ही नही." इतने में जुगनू दौड़ता हुआ कृपाल सिंह के पास आया और बोला,

"काका जल्दी चलो आनंद को क्या हो गया."

कृपाल सिंह उठे और एम्बुलेंस की तरफ दौड़े. उन्होंने जैसे ही एम्बुलेंस में कदम रखा तो उनके चेहरे का रंग उड़ गया. आनंद शिथिल पड़ा था. जैसे उसका दर्द समाप्त हो गया हो. जैसे उसे मीठी नींद आ गयी हो. कृपाल सिंह ने जल्दी से आनंद को पकडकर हिलाया और बोले, "बेटा आनंद क्या हुआ? कुछ तो बोलो...अभी अस्पताल पहुंच जायेगे."

लेकिन जब कोई हरकत न हुई तो वे समझ गये कि आनंद अब नही रहा. किन्तु उन्हें यकीन न होता था. वे गोद में आनद का सर रखे रो रहे थे. ड्राईवर ने कृपाल सिंह की तरफ देखा. मानो पूंछ रहा हो कि अब क्या करें? कृपाल सिंह सिसकते हुए धीरे से बोले, "गाड़ी घर की तरफ ले चलो."

आनंद मर चुका था किन्तु झांकी अभी भी जारी थी. पुरोहित और नेता जी अब भी एक दूसरे से उतने ही उत्साह से बात कर रहे थे. स्त्रियाँ अब भी गानों पर झूम रही थी. झांकी रेगने लगी. ड्राईवर ने एम्बुलेंस स्टार्ट कर दी और उसे कृपाल सिंह के घर की तरफ ले चलने के लिए झांकी के साथ साथ चलने लगा.

उसे अब जल्दी नही थी. कृपाल सिंह भी अब शांत बैठे थे. उनकी बूढी आँखे लगातार पानी की बारिस कर रही थी. उन्हें लग रहा था मानो ये आनंद की मौत की झांकी निकल रही हो. झांकी आगे बढ़ गयी. एम्बुलेंस को जगह मिलते ही ड्राईवर ने एम्बुलेंस फिर उसी रास्ते पर ले ली जिधर से वह अभी आया था.

***

घासलेट का घी

बात लावन गाँव की है, जिसमे राजेश्वरी देवी नाम की एक महिला रहती थीं. उनके पति की मृत्यु काफी समय पहले हो चुकी थी, तीन लडके और एक लडकी थी जिसकी शादी कुछ दिनों पहले हो चुकी थी. घर की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी, क्योंकि कमाने वाला घर में कोई था ही नही.

जैसे तैसे तीन बच्चो के पालन पोषण और पढाई का खर्चा चलता था, थोड़ी सी जमीन थी जिसको पट्टे पर उठा दिया जाता था जिसके पट्टे के रू साल में एक बार आते थे वो भी गिने चुने.

राजेश्वरी देवी अपना खर्च लोगों के मटर और गेहूं आदि बीन, साफ करके चलाती थी. इससे थोड़े बहुत रूपये आ जाते थे. लेकिन आज समस्या कुछ और थी, आज उनके बेटी और दामाद पहली बार घर आ रहे थे, जबकि घर में घी न था, यहाँ तक कि गाँव में रहते हुए भी दूध वगैरह की सुविधा न थी क्योंकि भैंस लेने के पैसे न थे.

जबकि राजेश्वरी देवी की लडकी ने उनको खबर की थी कि तुम्हारे दामाद आ रहे हैं थोडा घी वगैरह तैयार रखना. राजेश्वरी देवी ने मोहल्ले में कई ओरतों से कहा, उन्होंने जबाब दिया-बहन गर्मी के दिनों में घी कहाँ से आया, वैसे ही भैंस कम दूध दे रहीं है.

घी का प्रबंध हो भी न पाया था कि राजेश्वरी देवी के यहाँ उनके दामाद और बेटी आ पहुंचे. राजेश्वरी देवी के हाथ पैर फूल गये, उन्होंने फटाफट अपने तीनों बेटों को अपनी आवाभगत में लगा दिया. किसी ने नल का ठंडा पानी दिया तो किसी ने भगोने में चाय का पानी भर चूल्हे पर रख दिया, तीसरा दुकान पर गया और नमकीन बिस्कुट का जुगाड़ कर लाया.

मेहमानों को चाय नाश्ता दिया गया,नाश्ते के बाद राजेश्वरी देवी की बेटी ने आकर कहा, “माँ तुम्हारे दामाद कह रहे है कि पूरी परांठे न बनाना. उन्हें सिर्फ हाथ की रोटी घी से अच्छी तरह चुपड़कर, चटनी के साथ दे देना, साथ में थोडा सा घी कटोरी में भी रख देना” .

राजेश्वरी देवी घी न होने के कारण आज घासलेट के परांठे बनाने की सोच रही थी लेकिन बेटी की बात सुन उनके कानों में सन्नाटा छा गया. अब क्या करें इसी उधेड़ बुन में बैठी थी कि पडोस की एक औरत आई. उसने राजेश्वरी देवी को उदास देख उनकी उदासी का कारण पूंछ लिया. उसे जब सारी बात का पता चला तो बोली, “घबराती क्यों हो राजेश्वरी? भला इसमें भी कोई बड़ी बात है. मेरे दामाद आये तब मेरे घर में भी घी नहीं था. तब मैंने एक तरकीब अपनाई थी.”

राजेश्वरी देवी बोलीं, "बहन बताओ तो वह तरकीब तो मेरी भी जान में जान आये". वो महिला जासूसी अंदाज़ में बोली, “देखो घासलेट तो है न तुम्हारे घर में, उसको कटोरी में गर्म करो और गर्म रोटियों पर लगाकर खिला दो”.

राजेश्वरी देवी ने हडबडा कर कहा, “बहन क्या कहती हो अगर पता चल गया तो दामाद अपने मन में क्या कहेंगे, मेरी लडकी तो मुझे घंटों सुनाएगी.” महिला बोली, “तुम इस चिंता को छोड़ दो, जब मेरे दामाद बेटी न जान सके तो भला ये क्या जानेंगे, भला शहर के लोग जो नकली घी खा खा कर बड़े होते हैं वे घी और घासलेट में क्या अंतर कर पाएंगे, बस तुम खिला दो एक बार, अगर ये ऊँगली न चाट जाये तो मेरा नाम नही.”

इतना कह वो महिला अपने घर चल दी. इधर राजेश्वरी देवी ने डरते डरते यही तरीका आजमाया, उन्होंने चटनी बनाई और हाथ की रोटियों के साथ पिघलायी हुई घासलेट चुपड़ दी, फिर अपने बेटे को खाना देने भेज दिया.

दामाद और बेटी दोनों दूसरे कमरे में बैठे थे, खाना सामने आते ही राजेश्वरी देवी की बेटी अपने पति से बोल पड़ी, “देख लो ये है घर का देसी घी तभी तो इतनी खुशबु आ रही है, आज का दिन तो शुभ जायेगा”. दामाद ने भी रोटी का एक टुकड़ा चटनी के साथ खाया तो बोले, “ओह हो, लाजबाब स्वाद है घर के घी का थोडा सा कटोरी में मंगवा लो, उसमे रोटी के टुकड़े डुबोकर खायेंगे, भला फिर न जाने कब शुद्ध घी का स्वाद मिले.”

देर से डर के मारे दिल को थामे बैठी राजेश्वरी देवी ने जब यह सुना तो आश्चर्य चकित हो गयी, सोचतीं थीं पड़ोसिन तो रामवाण नुस्खा बता गयी, साथ में उन्हें अपने दामाद और बेटी की अक्ल पर भी हंसी आ रही थी, जो घी और घासलेट में अंतर न कर पाए थे.

राजेश्वरी देवी ने बेटी के मंगाए जाने पर एक कटोरी घासलेट गर्म कर बेटे के हाथ भेज दी. पिघली हुई घासलेट बिलकुल घी के समान लगती है और स्वाद भी घी जैसा ही होता है, इसी कारण घी में इसकी मिलावट होती थी.

जैसे ही घी की कटोरी बेटी और दामाद के सामने पहुंची तो दोनों ने सटासट घी कम घासलेट चट कर डाला और दूसरी कटोरी घी लाने की मांग कर डाली.

दोनों कहते थे कि आज के जैसा घी जिंदगी में न खाया. राजेश्वरी देवी की बेटी अपने पति पर धाक जमाती थी,कहती, “देखा मेरे घर का घी, तुम्हारे यहाँ शहर में तो घी में घासलेट मिलाकर बेचते हैं, ये होता है शुद्ध देसी घी”.

दामाद पर इस बात का असर हुआ और बोले, “वाकई में तुम सच कहती हो, तुम माँ जी से कहकर एक डब्बा घी घर के लिए पैक करा ले चलो, सभी घर वाले शुद्ध देसी घी का स्वाद ले लेंगे”. बेटी ने राजेश्वरी देवी से जिद कर कहा, “माँ तुम दो किलो घी मेरे लिए रख दो, में अपनी ससुराल ले जाना चाहती हूं, वहां सब तुम्हारी तारीफ करेंगे, साथ ही मेरी इज्जत भी बढ़ जाएगी”.

राजेश्वरी देवी सकपका गयी, सोचतीं थीं अभी घासलेट रख दूं तो वहां कोई पहचान जायेगा, उन्होंने अपनी बेटी से कहा, “अभी घी नही है में तुम्हे जल्दी ही घी बनाकर पहुंचा दूंगी, बल्कि और थोडा ज्यादा सा बनाकर भेज दूंगी”. बेटी ख़ुशी ख़ुशी मान गयी, बोली“ ,जल्दी भिजवाना वहां सभी लोग देसी घी का इन्तजार करेंगे”.

जब दोनों रिश्तेदार घर से चल दिए तो दामाद राजेश्वरी देवी से बोले, “माँ जी आपने काफी खातिरदारी की और देसी घी के तो कहने ही क्या, ऐसा घी तो पहली बार खाया है”. बेटी भी चलते चलते कह गयी“ ,माँ जल्दी भिजवाना”. राजेश्वरी देवी ने हाँ में सर हिला दिया.

दोनों के जाने के बाद पडोस की महिला आई तो राजेश्वरी देवी ने सारी बात बता डाली, दोनों सहेलियों की हंसी रूकती न थी, दोनों ने बुरे वक्त में अपने चटोरे रिश्तेदारों को चूना जो लगाया था. राजेश्वरी देवी ने उस महिला का धन्यवाद किया जो उसने बुरे वक्त में यह तरीका बताया वरना आज उनकी किरकिरी हो जाती.

काफी दिनों तक राजेश्वरी देवी और उनके तीनो बेटे यह बात सोच सोचकर हसते थे, कहते थे यह घी अच्छा रहा और तब से वे लोग घासलेट को 'घासलेट का घी' कहते हैं.

***

काली गाय

मोहन के घर में एक काली गाय थी, ये गाय उसकी नानी ने मोहन की माँ को दी थी. कहा था कि ये गाय ले जा, घर में थोडा दूध होने लगेगा. मोहन की माँ जानकी ने गाय ले तो ली लेकिन जब गाय घर में आकर रहने लगी तब पता चला कि नानी ने गाय उन्हें क्यों दे दी.

दरअसल वो गाय इतनी मरखनी(मारने वाली) थी कि अच्छे अच्छे इन्सान को अपने पास न भटकने देती थी, उसे दुहने के लिए आर्मी की तरह घरवाले लगाये जाते थे, ताकि गाय कहीं कूंद न जाय, जब से घर में आई थी तब से एक ही खूंटे पर बंधी रहती, क्योंकि शुरुआत में एक दो दिन खूंटा बदलने की कोशिश की गयी तो गाय ने पूरे घर में आतंक मचा दिया था.

मोहन और उसके भाई गाय आने के समय बड़े उत्साह और ख़ुशी में उसे रोटी खिलाने गये थे, गाय ने पहले तो रोटी खायी फिर मोहन को सींगों पर उठा लिया, बड़ी मुश्किल से मोहन को घर वालों ने गाय से बचाया, तब से लेकर आज तक मोहन ने एक भी बार गाय की तरफ जाने की न सोची, अगर उसे रोटी खिलानी भी होती तो दूर से फेंक कर भाग आता.

आपको बता दें गाँव में काली गाय का अपना एक अलग महत्व होता है, उसको लोगों द्वारा पूजा जाता है. इसी कारण गाँव के हरवीर, मोहन की गाय को एक दिन लोवा(कच्चे आटे का लड्डू) देने आये, मोहन के घर वालों ने हरवीर को पहले ही बता दिया कि गाय सींग से मारती है, लेकिन हरवीर ठहरे गाय को पुराने लोवा खिलाने वाले तो वो किसी की क्यों माने.

हरवीर गाय के पास पहुंचे, बड़े प्यार से लोवा गाय को खिलाया, लोवा खिलाने के बाद हरवीर ने गाय के पैर छुए और गर्व से मोहन के घर वालों की तरफ देखा, हरवीर की आँखों में बड़ा घमंड झलक रहा था, जो कह रहा था- “देख लो कहते थे कि गाय सींग मार देगी, ये तो बड़े प्यार से लोवा खा रही है”.

लेकिन ये क्या, गाय ने हरवीर को अपने सींगो पर उठा लिया और पूरी ताकत से हरवीर को जमीन में दे मारा, हरवीर का घमंड एक पल में ही मिटटी में मिला दिया, लेकिन गाय ने हरवीर को इतने पर ही नही छोड़ा. उसने हरवीर को जमीन पर पटकने के बाद ऐसी रगड लगाई कि हरवीर के मुंह से 'बचाओ बचाओ' की आवाजें आने लगी.

मोहन के घरवालों ने बड़ी मुश्किल से हरवीर को काली गाय से छुडवाया, हरवीर विना एक पल रुके सीधे अपने घर जा पहुंचे और एलान कर दिया कि आज से वे काली गाय की पूजा नही करेंगे. काली गाय का खोंफ दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा था, मोहन की माँ जानकी मोहल्ले के किसी भी आदमी या बच्चे को गाय के आस पास भी न जाने देतीं थीं, बच्चे मोहन के आंगन में खेलना नही चाहते थे.

उन्हें डर था उस काली गाय का, जिसने हरवीर जैसे पुजारी की पूजा छुडवा दी.

मोहल्ले की महिलाएं जानकी देवी के पास बैठने आ जाया करतीं थी तो अब वे महिलाएं भी आना बंद हो गयी, गाय का इतना खोंफ कि पडोस के गाँव में भी इस काली गाय की चर्चा थी. एकाध आदमी तो सिर्फ उसे देखने के लिए आता था, सोचता ऐसी कैसी गाय है जो किसी पर सम्हाली नही जाती.

और फिर एक दिन वो हुआ जो होना नही चाहिए था, मोहन की माँ जानकी देवी गाय का खूंटा बदल रही थी, लेकिन जैसे ही उन्होंने गाय की रस्सी खोल उसे दूसरे खूंटे पर ले जाना चाहा वैसे ही गाय ने ऐसी दौड़ लगाई कि पूरे घर के लोग कमरे में बंद हो गये, लेकिन जानकी देवी तो गाय के पास ही थी.

भयभीत तो जानकी देवी भी थी लेकिन उन्हें गाय को बांधना भी तो था, उन्हें डर था कि कहीं गाय नही बांधी तो किसी को मार न डाले, इसी डर के कारण वो गाय के पास डटी रहीं, लेकिन गाय आंगन में ऐसे चक्कर लगा रही थी मानो घोड़ो की रेस में उसे दौड़ाया जा रहा हो.

जानकी देवी हिम्मत कर गाय के पास जाने लगी, लेकिन गाय उनकी तरफ ही दौड़ने लगी जानकी देवी आँखें बंद कर खड़ी हो गयी. और गाय ने ऐसी छलांग लगाई कि वो जानकी देवी के सर के ऊपर होकर निकल गयी. सारे घर के हलक सूख गये, सबने देखा था कि किस प्रकार जानकी देवी बाल बाल बच गयी.

तभी जानकी देवी को ध्यान आया की वे गाय के लिए अगर कुछ खाने को दिया जाय तो ये शांत हो जायेगी, उन्होंने कमरे में बंद अपने बच्चों को आवाज लगाई कि दो रोटियां बाहर फेंक दें. पहले गाँव में किचन तो होती नही थी, रोटियां सुबह बनाकर एक डब्बे में रख रहने वाले कमरे में ही रख ली जाती थी.

बच्चों ने अंदर से दो की जगह चार रोटियां फेंक दी, सोचा गाय शांत हो जाय तो माँ की जान बच जायेगी, नही तो गाय के सर पर तो आज खून सवार है. रोटियां देख गाय उनकी तरफ दौड़ी, चारों रोटियाँ चार जगह पड़ी थी, गाय एक रोटी खाने में लगी इतनी देर में जानकी देवी ने बाकी की रोटियाँ उठाकर गाय के खूंटे के पास डाल दीं.

गाय एक रोटी खाने के बाद और रोटियां खाना चाहती थी उसने इधर उधर नजर दौडाई तो देखा कुछ रोटियां खूंटे के पास पड़ी हैं, वह तुरंत खूंटे के पास गयी और रोटियां खाने लगी, जानकी देवी ने तुरंत गाय की रस्सी उस खूंटे से बाँध दी. गाय के बांध दिए जाने पर पूरे घर की जान में जान आई.

सब लोग कमरों से निकल जानकी देवी के पास अ गये, और उनसे पूछने लगे कि कहीं कोई चोट वगैरह तो नही आई. जानकी देवी को गाय पर आज बहुत गुस्सा आ रहा था, आज उनका मन करता

था कि गाय से पीछा छुड़ा ले नहीं तो ये किसी दिन बच्चो या उनको मार डालेगी.

पूरे घर ने उनके इस विचार पर मुहर लगा दी, अब गाय को बेचने की कवायद शुरू हुई, लेकिन कोई भी आदमी उस काली गाय को मुफ्त में भी लेने को तैयार न था. जिससे भी पूंछा जाता वो अपने हाथ खड़े कर देता और कहता कि मुझे मरना थोड़े ही है अभी.

मोहन की माँ जानकी देवी ने मोहन की नानी से कहा कि अपनी गाय बापस ले लो, लेकिन नानी ने तो जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाया था, वो अब दोबारा उस गाय को बापस नही लेना चाहती थी. चारो तरफ से मिली निराशा के बाद जानकी देवी ने निर्णय लिया कि इस गाय को कहीं दूर गाँव के आस पास छोड़ आया जाय, जिससे उस गाँव का आदमी उस गाय को पकड़ लेगा.

लेकिन समस्या फिर जैसे की तैसे, गाय को छोड़ने कैसे जाया जाय, अगर ये भाग छूटी और किसी को मारने लगी तो, फिर क्या होगा. लेकिन गाँव के कुछ बहादुर लोगों ने भरोसा दिया कि वे इस गाय को गाँव के बाहर तक छुडवा देंगें वाकी का आगे छोड़ने का काम मोहन के घर वालों को खुद करना होगा.

मोहन और उसकी माँ ने सोचा चलो ये भी कम नही, कम से कम गाय गाँव से तो बाहर चली जाय वाकी का जैसे तैसे उसे ले जाकर कहीं छोड़ आयेगे. गाय को लोगो ने चारो तरफ से अपने कब्जे में लिया फिर धीरे धीरे गाँव से बाहर ले चले, गाय जगह जगह पैर जमा देती जैसे वो इस घर से जाना ही न चाहती हो.

इधर मोहन की माँ भी लगातार रोये जा रही थी, उन्हें उस गाय के खूंटे को देख देख कर रोना आ रहा था, सोचती थी इतने प्यार से गाय लेकर आये लेकिन आज वो ऐसे ही छोड़नी पड़ रही है, लेकिन वो माँ करती भी क्या, अपने बच्चो को बचाए या उस गाय को घर में रखे.

गाय गाँव के बाहर पहुंच चुकी थी, गाँव के लोग वहीं रुक गये, अब मोहन और उसके भाई को गाय कहीं दूर छोड कर आनी थी, गाँव से बाहर आते ही गाय इतनी सीधी हो गयी कि जिधर मोहन उसे ले जाता बड़े प्यार से वो उसके साथ चली जाती थी. मोहन को भी आज उस गाय के बिछुड़ने का गम था, लेकिन उस गाय ने जो सलूक आज जानकी देवी के साथ किया था वो भी तो माफ़ करने के काबिल नही था.

मोहन और उसका भाई गाय को सात आठ किलोमीटर दूर एक गाँव के पास ले पहुंचे और गाय के गले से रस्सी खोल दी. मोहन ने प्यार से एक डंडे से गाय को डराते हुए आगे को भगा दिया. आज गाय बहुत अजीब व्यवहार कर रही थी, क्योंकि और दिन गाय इतने पर लोगों को मारने लगती थी लेकिन आज डर से आगे दौड़ रही थी.

गाय के आगे जाने के बाद मोहन अपने भाई के साथ अपने गाँव चलने लगा, लेकिन थोड़ी दूर चलने के बाद सने मुड़कर देखा तो गाय उनके पीछे पीछे आ रही थी, मोहन को गुस्सा आया और उसने फिर गाय को दौड़ा दिया, उसने देखा कि गाय उनके साथ आना चाहती है, लेकिन अब गाय को घर में ले जाना ही गलत होगा यह सोच वह फिर से गाँव की तरफ चल दिया.

घर पहुंच मोहन ने गाय के खाली खूंटे को देखा, माँ ने देखा कि मोहन गाय को छोड़ आया है, घरवालों की आँखों में आसू थे. आज इस घर में खाना भी नही बना, काली गाय की यादें सबके दिलों पर अपना असर छोड़ गयीं थी.

***

ज्वाला की अग्निपरीक्षा

कभी कभी चिढने वाला एक हंसमुख लड़का. गोरा रंग. पतला पतला. थोडा शर्मीला भी. उसका नाम था ज्वाला. पूरा नाम ज्वाला प्रसाद. लेकिन गाँव की बात विना नाम बिगाड़े बोले तो गाँव की पहचान ही क्या. इसलिए ज्वाला प्रसाद बन गया ज्वाला.

ज्वाला जब भी अपने जीजा जी के घर आता तो सब उससे मजाकें करना शुरू कर देते. और ज्वाला हँस हँस कर उन मजाकों को सहता रहता. गाँव की खासियत यह होती है कि एक आदमी का साला पूरे गाँव के आदमियों का साला होता है और वही हाल ज्वाला का भी था. ज्वाला उन्हें सुनाता और वे ज्वाला को सुनाते.

गाँव में ज्वाला जिधर जाता उधर ही ज्वाला की जय जयकार होती. लड़का ही ऐसे मिजाज का था. बूढ़े से लेकर बच्चे तक सब के सब ज्वाला के साथ मस्ती करना चाहते थे. सब के सब उसे अपना साला समझते थे. ज्वाला के साथ इतनी मस्ती होती कि कभी कभी उस मजाक की हद ही पार हो जाती. लेकिन ज्वाला था पूरा खिलाडी जो अपनी खिलाडी वाली भावना को नही छोड़ता था.

लेकिन एक दिन ऐसी मजाक हुई कि ज्वाला ने वो खिलाडी वाली भावना का त्याग कर दिया. एक बार ज्वाला अपने जीजा के घर आया. वो काफी दिनों वाद आया था तो खातिरदारी भी अच्छी खासी हुई. गाँव वालों को जब ज्वाला के आने की खबर हुई तो ख़ुशी के मारे रात भर नींद न आयी.

सोचा अब तो रात हो गयी है सुबह ज्वाला से मजाक करेंगे. आज की रात गाँव वालों की हालत ज्वाला के लिए प्रेमी प्रेमिका जैसी हो गयी जो अपने महबूब से मिलने के लिए सुबह होने का इन्तजार कर रही हो.

उधर ज्वाला का भी यही हाल था बो भी गाँव वालो के मजाक को पाने के लिए रात के गुजरने का इन्तजार कर रहा था. यहाँ आज चंदा को चकोर और चकोर को चंदा से मिलने का इन्तजार था.

तडके सुबह ज्वाला उठा और गाँव के लोग भी उठे. उन्हें रात भर चैन ही कहाँ पड़ा था. न ही नींद आई. दोनों मिले. ऐसे मिले कि अब दोबारा न मिलेंगे. रह रह कर एक दूसरे को गले लगाते. एक आदमी ज्वाला और बीस आदमी गाँव के. संगम ऐसा मानो एक समुंदर में कई नदियाँ गिर रही हों.

मेल मिलाप के बाद ज्वाला का हाल चाल गाँव वालों ने जाना और ज्वाला ने भी एक एक कर गाँव वालों का हाल चाल जाना. सब के सब ठीक थे यह जानकार सब लोगों को ख़ुशी हुई. काफी देर तक बातचीत चली. चूँकि ज्वाला तडके सुबह उठकर यहाँ आ गया था तो उसे अभी नित्यकर्म (फ्रेश होना) करना था तो वह गाँव वालों से यह कहकर चल दिया कि अभी थोड़ी डर में फिर मिलते है.

ज्वाला घर में गया. इतने में गाँव वालों को एक शरारत सूझी. उन्होंने आज ज्वाला के साथ जोरदार मजाक करने का मन बनाया. और मजाक भी ऐसा कि ज्वाला को शौच करने से रोकने का. सोचते थे उसे आज बातों में लगाये रहेंगे तो वह शौच करने न जा पायेगा.

गाँव वाले अब घर में से ज्वाला के निकलने का इन्तजार कर रहे थे. और तभी ज्वाला हाथ में पानी से भरा लौटा लिए बाहर आ गया. ज्वाला से गाँव वाले मसखरों की आँखे मिली. दोनों समझ गये कि आज कुछ मजाक होने वाला है.

लेकिन ज्वाला पहले ही हसकर बोल पड़ा, "भईया देखो मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ. तब खूब मजाक कर लेना लेकिन अभी जाने दो." लेकिन गाँव के मसखरे लोग तो आज कुछ और ही सोचे बैठे थे. उन्होंने ज्वाला की एक न सुनी, बोले, "थोड़ी देर रुको ज्वाला तुमसे कुछ बात करनी है."

ज्वाला अपने पेट की ज्वाला दवाये गाँव वालों के पास रुक गया. लेकिन गाँव वालो ने उससे कोई जरूरी बात न की. तो ज्वाला फिर से चल दिया लेकिन दस बीस गाँव वालों के आगे ज्वाला की पेश कहाँ चल पाती.

ज्वाला के पेट की अग्नि पल पल दहकती जा रही थी लेकिन गाँव के मसखरे थे कि इस बात को हलके में लेते जा रहे थे. ज्वाला बार बार उनके चंगुल से निकलने को होता लेकिन वो मसखरे लोग उसे जाने न देते थे.

ज्वाला को गुस्सा आ रहा था लेकिन पूरे गाँव के लोग उसके जीजा जी लगते थे तो वह अपनी गुस्सा का इजहार उनके सामने नही करना चाहता था. लेकिन अब ज्वाला से रुका न जा रहा था. ज्वाला को गुस्सा आ गया क्योंकि उसकी सहनशक्ति जबाब देने को थी. उसे लगता था कि अभी उसके मल का वेग अब उससे नही रोका जाएगा. उसने गाँव वाले सभी जीजाओं को गाली देनी शुरू कर दी.

कुछ लोग सिटपिटा गये. लेकिन काफी लोग अभी हँस रहे थे उन्हें पता था कि ज्वाला क्यों उन्हें गाली दे रहा है. लेकिन अब उन्होंने ज्वाला को चले जाने दिया.

उधर ज्वाला उनके पास से छूट ऐसे भगा कि जैसे कोई भयानक चीज उसका पीछा कर रही हो. लेकिन आज ज्वाला की किस्मत उसका साथ न देने का फैसला कर चुकी थी. ज्वाला अभी दस बीस कदम भी न चल पाया था कि ज्वाला की पेट की ज्वाला आज की अग्नि परीक्षा में बुरी तरह से फेल हो गयी.

ज्वाला वहीं के वहीं जम गया. उसे इस वक्त जिस आनन्द की प्राप्ति हो रही थी वो इस जहाँ से अलग था. लेकिन उसे जब ज्ञात हुआ की उसने कपड़ों में ही शौच त्याग दी है तो ग्लानी से भर उठा. पीछे मुड़कर गाँव वालों की तरफ देखा और सिटपिटाई हुई हंसी से उनकी तरफ देखने लगा.

जैसे उन्हें दिखाना चाहता हो कि कुछ हुआ ही नही है. लेकिन इतनी देर ज्वाला को उस खास पोजीसन में खड़ा देख गाँव वालों को तो पहले ही आभास हो चुका था कि ज्वाला आज की अग्निपरीक्षा में फेल हो चुका है. लेकिन इतजार कर रहे थे कि अब ज्वाला करेगा क्या? कैसे बतायेगा की उसने क्या कर डाला है. और तभी ज्वाला थोडा सा आगे बढ़ा. गाँव वाले उसकी टांगो की तरफ ऐसे देख रहे थे जैसे कोई तूफ़ान आने वाला हो.

ज्वाला एक एक कदम ऐसे बढाता था जैसे उसके पैरों में मेहँदी लगी हो. और सच में उसके मेहँदी ही तो लगी हुई थी. लेकिन पैरों में नही पैरों पर. और वो मेहँदी धीरे धीरे पैरों की तरफ आने लगी फिर जमीन पर गिरने लगी. ज्वाला अब इससे ज्यादा अपनी बेइज्जती नही सहना चाहता था. उसने एक दम से दौड़ लगाई और भाग चला सीधा तालाब पर.

इधर गाँव के मसखरों की हंसी रोके से न रूकती थी. इधर ज्वाला तालाब पर पहुंचा और अपने सारे कपड़े धो नहाया और फिर शर्माता सा गाँव में आया. उसका मन न करता था कि वह गाँव में जाए लेकिन जाना तो था ही. गाँव में पहुचते ही देखा कि गाँव वाले ज्वाला का पहले से इन्तजार कर रहे थे.

ज्वाला आज बहुत शर्मिंदा था लेकिन गाँव वालों की हंसी थी कि थमने का नाम ही न लेती थी. उन्हें आज ज्वाला की अग्निपरीक्षा लेकर जो आनंद मिला था वो अपने आप में एक अलग महत्व रखता था जिसका बखान वो अपनी न रोके जाने वाली हंसी से कर रहे थे.

***

सुन्दरी

ये तब की बात है जब में छोटा था. कोई चौदह पंद्रह साल का. हमारे गाँव में एक आदमी रहता था. नाम था विरजपाल. वह बहरा था तो जोर से बोलने पर सुनता था. लोग इसका फायदा उठा उससे मजाक किया करते थे. उसकी पत्नी भी थी. सुन्दरी. नाम बेशक सुन्दरी था लेकिन दिखने में आम महिला थी. शरीर पतला और छोटा कद. लोग उसे पागल समझते थे. कारण था उसकी हरकतें.

थोडा सा भी कोई चिड़ा दे तो गालियाँ देती थी. कुछ भी फेंक कर मार देती. कोई उसके दरवाजे पर पैर फटफटा कर जाता तो अन्दर से कुछ न कुछ आ कर उसके ऊपर पड़ता. चिमटा फूंकनी या चकरा बेलन. जो हाथ में होता वही फेंक कर मार देती थी सुंदरी. इसी कारण लोग उसके दरवाजे पर पैरों की आवाज जरूर करके जाते थे. इस काम में कई लोग चोट भी खा चुके थे.

जब लोग शिकायत करते तो विरजपाल उसको मारता था और वो गालियाँ देती हुई रोती थी. सुन्दरी के कोई बच्चा नही हुआ था. विरजपाल मजदूरी करता था. जब वह मजदूरी को जाता तो सुंदरी हमारे घर आ जाती थी और माँ के पास घंटो बैठी रहती थी. उनके सर में तेल डालती. चावल से कंकड़ निकलवाती.

कभी कभी उसकी बात मुझे बहुत समझदारी भरी लगती थीं. सच बात तो यह थी कि उससे प्यार से बोलने पर वह बहुत खुश रहती थी. जब कोई उसे चिढाता तो गुस्सा करती. उसको एक ही साडी में हमेशा देखा था मैने. सोचता था कैसे रहती होगी एक ही साडी में? उसी को धो लेती फिर उसी को सुखाकर पहन लेती.

मोहल्ले में उसे कोई साडी दे देता तो रख लेती पर पहनती न थी. कहती अपने गाँव जाऊंगी तब पहनूंगी.में उसे चाची कहकर बुलाता था. एक बात और थी कि उसकी उम्र न मालूम पडती थी. मैंने जब से देखा तब से एक ही जैसी लगती थी.

एक दिन की बात थी. में घर के दरवाजे पर बैठा था. मेरे साथ चार पांच लडके और थे. तभी सुंदरी ने मुझे बुलाया. मैं उसके घर गया तो उसने मुझे बताया कि उसके कमरे में भूत है. में भी थोडा डर गया. कमरा अँधेरे में डूबा था जबकि दिन छिपे का समय था. टार्च जलाकर डरते डरते देखा तो कमरे में कुछ नही था.

फिर वह चूल्हे में बनी चिमनी में भूत बताने लगी. मैंने सोचा सुंदरी पागल हो चुकी है. मुझे एक शरारत सूझी. मैंने सुन्दरी से कहा कि चिमनी और चूल्हे को तोड़ डालो भूत अपने आप भाग जायेगा. सुन्दरी ने ऐसा ही किया.

मैं और सारे बच्चे नांच नांच कर चूल्हे को फोडवाते रहे. उसके बाद हम घर चले आये. रात के समय

विरजपाल मजदूरी कर लौटा तो उसने देखा कि चूल्हा और चिमनी टूटा पड़ा है. उसका माथा ठनक गया. क्योकि विरजपाल ने दो दिन की दिहाड़ी छोड़ कर चूल्हा और चिमनी को बनाया था. उसने सुन्दरी को बुलाकर पूछा, "ये सब किसने किया सुन्दरी." सुन्दरी अपने ही अंदाज़ में बोली, "मैंने तोडा. इसमें भूत था तो तोड़ दिया."

विरजपाल को काफी गुस्सा आया. उसने सुन्दरी को बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया. मोहल्ले की औरतों ने आकर सुन्दरी को बचाया. इसके बाद पंचायत बैठी. पंचायत ने विरजपाल से सख्त हो कहा, "अगर तुम इसे ठीक से नही रख सकते तो इसके घर छोड़ आओ. इस पर आत्याचार क्यों करते हो. कब तक यूं ही पीटते रहोगे बात बात पर."

विरजपाल सुन्दरी को गाँव छोड़ने के लिए तैयार हो गया. उसने पंचायत से सुबह को सुंदरी उसके गाँव पहुचाने का वादा कर दिया. दरअसल सुन्दरी का गाँव बिहार में था. जिसे विरजपाल उसके घरवालों को पैसा दे कर खरीद लाया था. घर वाले गरीब थे. खाने को घर में था नही तो लडकी की शादी कैसे करते.

उन्होंने विरजपाल से पैसे लेकर सुंदरी को दे दिया. सुंदरी तब काफी छोटी थी और विरजपाल पूरा आदमी. बचपन में माँ बाप का घर छोड़ना और विरजपाल की मार उसे पागल बना गयी. आज सुंदरी को घर जाने की ख़ुशी थी लेकिन वह ये न समझ पा रही थी कि घर जाकर क्या होगा. कहीं दोबारा बेच दी गयी तो! इस बात की उसको चिंता न थी.

विरजपाल दूसरे दिन उसे गाँव छोड़ने चल दिया. सारा गाँव उदास था क्योंकि आज सुन्दरी जा रही थी. पूरे मोहल्ले की रौनक सुंदरी समेट कर ले जा रही थी. आज न तो गाँव का कोई आदमी उसे चिढाता था न सुंदरी गालियाँ दे रही थी. वह तो खुश थी. सब औरतों के पैर छूती हुई चल दी.

हर एक आदमी औरत की आँखे भीगी हुई थी. मझे भी रोना आ रहा था. सोचता था कि न में कल उसका चूल्हा तुडवाता और न सुंदरी गाँव से जाती. फिर सोचा बड़ा होकर सुंदरी के गाँव जाऊँगा तब मिलूंगा उससे. बहुत खुश होगी सुंदरी मुझे मिलकर. अगर कहीं बेचीं न गयी. पैसे लेकर. इतने में सुंदरी आँखों से ओझल हो गयी.

***

दिल्ली की जमुना

मैं जिस घर को बेचकर दूसरी कॉलोनी मैं आया था. कुछ दिन बाद उसी घर मैं कुछ काम से गया. उस घर के नये मकान मालिक से मुलाकात हुई. उसके घर मैं एक स्त्री, जो मेरे लिए अनजान थी दिखाई दी. मैंने जब उस नये मकान मालिक राजेंद्र से पूछा तो उसने बताया कि ये हमारे यहाँ किराये पर रहती है. उस स्त्री को देख कर मुझे लगा कि ज्यादा पढ़ी लिखी नही है लेकिन शहरी जरुर है. अच्छा पहनावा. रंग रूप भी ठीक ठाक था. उसके साथ उसके पिता जी भी थे.

मैं वहां से उस दिन चला आया. लेकिन कुछ दिन बाद मुझे खबर मिली कि उस औरत के पिताजी गुजर गये है. और उसके थोड़े ही दिन बाद खबर आई की वो औरत भी मर गयी है. मुझे यह सुनकर थोडा ताज्जुब हुआ क्योंकि उस औरत की ज्यादा उम्र नही थी और न ही उसे कोई बीमारी थी. फिर अचानक उसकी मौत मेरे लिए आश्चर्य पैदा कर रही थी.

मैंने उस कॉलोनी का रुख किया और जानना चाहा आखिर मसला क्या है. जब मैंने लोगों से पूछा तो वो कहानी सुनकर मैं दंग रह गया. वो पूरी घटना इस प्रकार थी- उस औरत का नाम जमुना था. वो दिल्ली की रहने वाली थी. पिता सरकारी नौकर थे घर मैं किसी चीज की कमी नही थी.

जमुना की शादी दिल्ली के ही किसी व्यक्ति से कर दी गयी. एक बच्चा भी हुआ. लेकिन कुछ साल बाद ही इन दोनों का तलाक हो गया. उसके बाद जमुना अपने बच्चे को लेकर अपने पिता के घर आकर रहने लगी. पिता बूढ़े हो चुके थे. उन्हें जमुना का सहारा मिला. खर्च पेंसन से चलता था. साथ ही दस बारह कमरों का घर उनके पास दिल्ली जैसे जगह पर था तो पांच कमरों का किराया भी आता था.

जमुना के पांच कमरों में से एक कमरे में एक नौजवान किरायेदार भी रहता था. वैसे तो जमुना सीधे मिजाज की थी लेकिन उसे उस नौजवान मैं कुछ ऐसा नजर आया कि वो उसकी दीवानी हो गयी.उस नौजवान का नाम देवू था. देवू भी जमुना को काफी देखता था.

उस देखने मे एक ऐसी जलन थी कि जिसमे झुलसने से जमुना खुद को बचा न सकी. दोनों मैं इश्क शुरू हुआ और परवान भी चढ़ा. और चढ़ा इतना की जो देवू कहता वो जमुना करती. जमुना के लिए देवू सबकुछ था. जमुना ने देवू से उसकी शादी के बारे मैं पूछा तो देवू ने कहा की मैं अभी क्वारा हूं.

जमुना का मन देवू के लिए एक दम साफ़ था लेकिन देवू के मन मैं कुछ खुराफात चल रही थी. जमुना को अपने जाल मैं फंसा चुकने के बाद देवू ने जमुना से कहा, "तुम कहती थी मुझसे शादी कब करोगे. तो आज मैं तुमको खुश खबरी दिए देता हूं कि मेरे घर वाले हमारी इस शादी के लिए मान गये है. और मैं तुम्हारे बच्चे को भी अपनाने को तैयार हूं. लेकिन उनकी शर्त है कि हमे मेरे

शहर अलीगढ चलकर रहना पड़ेगा."

देवू की ये बात सुन जमुना अपने आप को सारे जग की महारानी समझने लगी. उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा. उसे देवू की उसके शहर जाने की बात थोड़ी अटपटी लगी लेकिन उस समय जमुना को वह अटपटी बात किसी मीठे दर्द जैसी लगी जिसे वो अपनाना चाहती थी.

जमुना ने अपने पिता को ये बात बताई.तो उसके पिता ने कहा. "बेटा मेरा मन करता है कि एक बार इस लडके के घर जाकर बात कर लूँ. देख भार लू. तब तुम शादी करो तो ठीक रहे." जमुना के सर पर देवू के इश्क का भूत स्वर था. बोली, "देखभार तो आपने पहले वाले रिश्ते मैं भी की थी क्या हुआ! आज मैं फिर वहीं की वहीं हूं."

जमुना की बात के बाद पिता आगे कुछ न कह सके. उन्होंने इस शादी के लिए हाँ कर दी. जमुना ने देवू के शहर जाने से पहले उससे शादी की शर्त रख दी. जिसे देवू ख़ुशी ख़ुशी मान गया. एक पंडित बुलाकर शादी की गयी. उसके बाद बारी आई देवू के शहर चलने की.

तो देवू ने जमुना को बहलाते हुए कहा, "हम दोनों चल रहे है तो पिताजी को भी ले चलो ये अकेले यहाँ कहाँ रहेगे?" जमुना को देवू का ये विचार सही लगा. उसने ये बात अपने पिताजी से कही. पिताजी भी तैयार हो गये.

फिर देवू ने जमुना से कहा, "जमुना जब हम मैं से कोई यहाँ नही रहेगा तो इस घर का ही क्या फायदा. इसे बेच दो जो भी इसका पैसा होगा उससे अपने शहर मैं मकान लेकर अलग रहेंगे." जमुना को देवू की बाते अटपटी तो लग रही थी लेकिन देवू ने स्थिति ऐसी पैदा कर दी कि जमुना को उसकी हर बात मैं सत्य नजर आता. जमुना और उसके पिता मैं सलाह बनी. फिर घर बेच दिया गया.

घर पचास लाख रूपये मैं बिका जो एक मोटी रकम थी. वो पेसा जमुना ने अपने पिताजी के खाते मैं डाल दिया. तीनो लोग वहां से अलीगढ शहर चले आ गये. देवू ने जमुना और उसके पिता को एक किराये के मकान मैं यह कहकर ठहरा दिया कि घर वाले अभी नाराज़ हैं. जमुना मान गयी. फिर देवू ने कहा. "जमुना अपना मकान लिए लेते है. तुम पिताजी के खाते से पैसा निकाल लो."

जमुना ऐसा करना तो न चाहती थी लेकिन अब वो मजबूर थी. उसने पिताजी के खाते से पैसा निकलवाकर देवू को दे दिया. जिस दिन से देवू के हाथ मैं पैसा आया उस दिन से देवू के तेवर बदल गये. अब वह पहले वाला देवू नही रहा था. पहले वह जमुना को छोड़कर बहुत ही कम इधर उधर जाता था. लेकिन अब जमुना के पास कभी कभार ही आता.

एक दिन जब जमुना ने देवू से इस बात पर बहस की तो उसने जमुना पर हाथ छोड़ दिया और फिर

आये दिन उसे मारता पीटता. गालियाँ देता. जमुना के पिताजी से भी उल्टा सीधा बोल देता. धीरे धीरे देवू की सारी बातें जमुना को पता पड़ने लगी. उसे एक दिन किसी के द्वारा पता चला कि देवू शादीशुदा है. उस दिन वह अपनी किस्मत पर खूब रोई. उसके पिता भी उस दिन खूब रोये.

एक दिन देवू के आने पर जमुना उससे खूब लडी. उस लड़ाई मैं पिताजी को धक्का लगा और वो चल वसे. देवू ने डरा धमकाकर जमुना को अपने कब्जे मैं कर लिया. जमुना न तो अब पुलिस मैं जा सकती थी न किसी अन्य जगह. क्योकि देवू ने उससे कह दिया था कि अगर मेरे खिलाफ किसी से भी कुछ कहा तो तेरे इस लड़के को मार दूंगा.

जमुना का अब एक ही सहारा था उसका लडका. वो उसे खोना नही चाहती थी. यही सोच वह देवू के खिलाफ पुलिस मैं न गयी. बस रोते मन से देवू के जुल्म सहती रही. पहले देवू जमुना के पास उसके पिताजी की पेंसन लेने आ जाता था लेकिन जब से पिताजी मरे. पेंसन बंद हुई तो देवू ने पूरी तरह आना बंद कर दिया.

जमुना की कोई कमाई नही थी. वो एक एक पैसे को तबाह हो गयी. उसने अपने साथ लाये हुए सामान को उलटे सीधे दामों मैं बेचना शुरू कर दिया. लेकिन देवू अभी इतने से ही संतुष्ट नही था. वो जमुना को अपने रास्ते से हटाना चाहता था. उसने कई लोगो से कहा कि कोई जमुना की शादी कहीं करा दे तो उसे लाख दो लाख रुपया दे दूंगा. लेकिन जमुना को हटाने की सारी तरकीबे फेल हो गयीं.

एक दिन उसने वह कर डाला जिसकी किसी को उम्मीद भी नही थी. जमुना जिस मकान मैं रह रही थी. देवू ने उसी मकान मालिक के साथ मिलकर जमुना को मौत के घाट उतार दिया. रात मैं ही जमुना को श्मशान ले गये और जलाने की तैयारी कर दी. तब तक किसी ने पुलिस को खबर कर दी. पुलिस आई और पूछताछ भी हुई.

देवू बहुत शातिर था. उसने पुलिस को काफी पैसा दे सब मामला रफा दफा करा दिया. जमुना की लाश जला दी गयी. जमुना का छोटा सा लड़का माँ के लिए रोये जा रहा था. लेकिन इन पैसों के लालची हत्यारों को थोड़ी भी दया न आई.

आज न तो जमुना थी. न ही उसके पिता. जमुना का बच्चा अब भटका फिरता था. जिसको प्यार देने वाली अब कोई माँ नही था. देवू बड़े मजे से जमुना के पैसों पर ऐश मोज कर रहा था. मकान मालिक को भी लाखों रूपये देवू की मदद करने के मिल गये थे.

***

मुआवजा

शाम का समय था. घर के बाहर से एक आदमी ने मुझे आवाज दी. जाकर देखा तो मोहल्ले का आदमी था. अशोक. उसने बताया कि अपनी कालोनी में रहने वाले रमन ने अपने गाँव में आग लगा कर अपनी जान दे दी है. मुझे ये सुनकर बहुत आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी. रमन जैसा जिंदादिल आदमी आग लगाकर अपनी जान कैसे दे सकता है. में इतना सोच अशोक के साथ रमन के गाँव चल दिया.

दरअसल रमन हमारी कालोनी में ही रहता था. कुछ दिन पहले उसने अपना घर बेच दिया था. रमन की शादी हो चुकी थी और दो बच्चे भी थे. उसकी बीबी अपने बच्चो को लेकर अपने मायके चली गयी. कारण था रमन का शराब पीना. पत्नी मना करती लेकिन रमन नही मानता था. इसी कारण रमन की बीबी ने मकान बिकवा कर पैसा लिया और मायके चली गयी.

में और अशोक रमन के गाँव पहुच चुके थे. रमन का घर गाँव की शुरूआत में ही था. रमन के घर में काफी भीड़ जमा थी. में और अशोक भी भीड़ में घुस गये. देखा तो रमन का शव को पुलिस घेरे खड़ी थी. रमन की बीबी भी अपने मायके से आ चुकी थी. जो अभी भी रोये जा रही थी. पुलिस पूरी तफ्तीस कर चल दी.

गाँव के लोग आपस में बातें कर रहे थे कि कल शाम तक रमन ठीक ठाक था. रात में इसने आग लगाई है. वो लोग कह रहे थे कि बिल्लू को सारी बात पता है. वह रात से पहले तक इसके साथ था. मुझे रमन के आग लगने के बारे में जानने की बड़ी इच्छा थी. मैंने वहां के लोगों से बिल्लू का घर पूछा. लोगों ने मुझे घर बता दिया. में बिल्लू के घर पहुंचा. अशोक रमन के ही घर रह गया था.

बिल्लू से दुआ सलाम के बाद मैंने अपना परिचय दिया और पूंछा कि आप को तो पता होगा ये रमन के साथ क्या हुआ. बिल्लू पहले तो हिचकिचाया फिर बताने लगा, "क्या बताएं भैय्या दो तीन दिन से रमन परेशान था. बीबी मकान बेच कर सारा पैसा ले गयी. थोडा सा इसको दे गयी थी सो इसने दारू में उडा दिया. कई दिनों से वह पत्नी से पैसा मांग रहा था तो वह इसको गाली सुनती थी और खेत का पट्टा भी बीबी ले गयी थी. अब रमन को पैसा कहाँ से आया. कल शाम रमन ने मेरे साथ बैठ कर दारु पी. फिर बीबी को फोन किया और उससे पैसे मांगे. जब बीबी ने वही पुराना जबाब दिया तो रमन बोला कि या तो पैसा दे जा नही तो आग लगाकर मर जाऊंगा. बीबी सोच रही थी कि वैसे ही बक रहा है. इसी कारण पैसे के लिए हाँ न की. मैंने भी बहुत समझाया कि आग वाग मत लगाना तो मान गया लेकिन घर पहुंच कर उसने आग लगा ली और मर गया."

बिल्लू की बात से में संतुष्ट था. उसे धन्यवाद दे में रमन के घर की तरफ चल दिया. जहाँ अशोक भी खड़ा था. वहां जाकर देखा तो पता चला कि कोई अधिकारी आया है. शायद पटवारी या कानूनगो.

वह अपनी डायरी में कुछ लिख कर ले गया था. गाँव वालों में घुसर पुसर हो रही थी. सुनने पर पता चला कि रमन को मुआवजा मिलेगा क्योंकि उसने गरीबी से तंग आकर आत्महत्या की थी. फसल भी इस साल ठीक नही हुई थी.

मैंने कहा चलो ये तो अच्छा हुआ. कम से कम फसल का नुकसान तो पूरा हुआ लेकिन थोड़ी देर हो गयी अगर जीते जी मिल जाता तो शायद आज ये जिन्दा होता.

एक गाँव वाला मेरी बात सुन तुनककर बोला, "क्या खाक अच्छा हुआ. इसकी कौन सी फसल बर्बाद हुई. इसका खेत तो पट्टे पर था श्यामू पर और श्यामू तो बेचारा कुढ़ कुढ़ कर मर गया. वहां तो कोई पटवारी न पहुंचा उसे तो कोई मुआवजा न मिला. आपको पता है इसमें क्या हुआ है. इस मुआवजे के पैसे में से आधा पटवारी और प्रधान खायेगा. वाकी बचा पैसा इसकी बीबी को मिल जायेगा. सारा नुकसान तो श्यामू का हुआ. बेचारा लडकी की शादी करके भी न जा पाया."

उस आदमी की बात सुन में कुछ न बोल पाया. अशोक को साथ ले घर लौट आया. मुझे आश्चर्य हो रहा था. जिसका नुकसान हुआ उसे मुआवजा न मिल सका. गाँव बाला भी कोई कुछ न बोल रहा था. कम से कम पटवारी को तो बता सकते थे. लेकिन फिर मुझे ध्यान आया कि पटवारी तो खुद आधे हिस्से में शामिल है. वह तो मिल बाँट कर खाने में बिश्वास रखता है जो हमारी भारतीय परम्परा है. उससे कह कौन मुसीबत मोल लेगा.

इसमें किसको फायदा हुआ ये तो मेरी समझ से बाहर था. लेकिन एक बात थी कि रमन को पैसा मिल रहा था. परन्तु वह अब इस पैसे की दारू पीने के लिए जीवित न था. लेकिन जहाँ भी होगा इस खेल को देख खुश रहा होंगा.

***

आत्मागमन

थोड़े समय पहले की बात है हमारे एक गाँव में घूरे नाम का एक व्यक्ति रहता था. एक आँख नकली थी और दूसरी भूरी. इस लिए नाम घूरे पड गया. हसमुख था. अपनी पड़ोसिन दुकानदार जो दिखने में मोटी थी. उससे मजाक करता रहता था. उसे 'हलुआ पूरी. हलुआ पूरी' कहकर चिढाता था. वो औरत चिढ़ते हुए घूरे को सुनाने लगती. घूरे खुश हो जाता.

उसकी शादी नही हुई थी. दो बड़े भाई थे. दोनों की शादी हो चुकी थी. दोनों ही बाहर रहते थे. घूरे सबसे छोटा था और गाँव में ही रहता था. वह आये दिन नये नये काम करता था. कभी गुरु मन्त्र ले आता और उसे चलते फिरते. उठते बैठते जपने लगता. लोग समझते अपने आप से बातें कर रहा है. उसे रात की रखी रोटी सुबह खाना अच्छा लगता था. रोटियां घी की जगह सरसों के तेल से चुपड़कर खाता.

अभी कुछ दिनों से वह अजीब हरकतें करने लगा था. अपने चाचा से कहने लगा, “रात तुम मुझे मारने आये थे मल्लू चचा” . उसके चाचा ने समझा मस्ती कर रहा है तो उन्होंने हाँ कर दी. उन्हें क्या पता था कि इसके मन में क्या भूत सवार है.

घूरे इतना सुनते ही चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा, “कोई मुझे फूटी आँख नही देख सकता. सब मुझे मारना चाहते हैं. में अब मरने जा रहा हूं” . मल्लू चाचा के दिमाग में खलबली मच गयी. उन्हें कुछ सूझा नही. चिल्लाकर घर वालों को इकट्ठा कर लिया और अपने लडको से बोले, “जल्दी पकड़ो उसे”.

दो लडके दौडकर घूरे को पकड़ लाये. गाँव की बात शोर गुल सुनकर पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो गया. शोर सुनकर में भी पहुंच गया. तो देखा कि घूरे को उसके चचेरे भाई पकड़े खड़े हैं और घूरे झूम रहा है. उसे देख कर लग रहा था कि उस पर भूत आ गया है. उसे देख कर मेरी हंसी छूटी लेकिन तुरंत यह बात ध्यान में आ गयी कि किसी भूत वाले इन्सान को देख कर हसते नही हैं.

इतने में मल्लू चाचा अंदर से गंगाजल का लोटा लाये और घूरे पर उसके छींटे मरने लगे. घूरे को थोड़ी शांति पड़ी. वह चुपचाप द्वार के चबूतरे पर बैठ गया. अब घर वालों को पक्का यकीन हो गया कि घूरे पर किसी भूत प्रेत का साया है. बात चलने लगी कि किसी तांत्रिक को बुलाया जाय. पीछे से किसी ने कहा, “भत्तुआ को बुलाओ. ”.उसके मंतर ज्यादा कारगर होते है लेकिन मल्लू चाचा का मानना था कि इतवारी सबसे बड़ा तांत्रिक है.

आख़िरकार मल्लू चाचा की बात पर अम्ल किया गया. तांत्रिक को लाने के लिए मल्लू चाचा का लड़का और में भेजे गये. साईकिल निकाली और चल पड़े इतवारी स्याने के पास. गाँव में तांत्रिक को

स्याना बोलते हैं. बारिस का मौसम था. इतवारी के घर के आगे कीचड़ थी मल्लू का लड़का गट्टू उस कीचड़ में गिर पड़ा. ऊपर से आवाज आई 'घोर अनर्थ'मैंने ऊपर देखा तो पता चला कि इतवारी थे ..

मैला कुरता. मैली धोती. खिचड़ी वाल. बढ़ी हुई दाढ़ी. पीले दांत. काला चेहरा लाल आँखें. पतला झरहरा बदन. सफ़ेद प्लास्टिक के जूते. गले में आठ दस अजीब सी मालाएं. अच्छे खासे भूत को डराने वाला हुलिया. हमे देखते ही बोला, "चलो". मैंने पूंछा, "कहाँ". गट्टू ने चुप रहने का इशारा किया. में चुप हो गया.

में समझ गया ये जरुर अन्तर्यामी है. समझ गया होगा कि इसे बुलाने आये है. दरअसल बात ये थी कि जो भी व्यक्ति इतवारी के पास आता वो बहुत से परेशान होता था. इतवारी देखते ही समझ जाता और उसका एक ही शब्द होता कि 'चलो'.

साइकिलें सीधी घूरे के पास जाकर रुकीं. इतवारी साईकिल से उतरा दो कदम चला. फिर ठिठका और मल्लू की तरफ कुछ इशारा किया. मल्लू घर में गये और लौटे तो हाथ में राख की पुडिया थी. पता चला ये उनके पुरखों(अऊत) की पूजा की राख है.

इतवारी ने हाथ में पुडिया ली और उस राख से माथे पर तिलक किया. घूरे तन गया. लोगों ने कहा कोई भस्मी आत्मा है. इतवारी ने मंतर पढ़ा. घूरे शांत हुआ. इतवारी दो कदम पीछे हटा. फिर ठिठका और मल्लू की तरफ इशारा किया. मल्लू घर में गये. लौटे तो हाथ में एक सौ एक रुपया लाये और इतवारी को दे दिया. इतवारी चलने को हुआ. गट्टू साईकिल पर उसे छोड़ने चला गया.

लोगों ने राहत की सांस ली. सोचा चलो भूत शांत हुआ. उसी रात कुए में कुछ भरी वस्तु गिरने की आवाज आई. गाँव में शोर मच गया. बाद में मालूम पड़ा कि प्रेतात्मा ने घूरे को कुए में धकेल दिया है. बड़ी मशक्कत के बात घूरे को कुए से निकाला गया.

शरीर पर काफी चोटें लगीं थी. घूरे की बूढी माँ रोये जा रही थी बोलती थी, "बूढी माँ के सामने जवान बेटे की मौत हो जाती तो क्या होता". महिला मंडल ने उन्हें ढाढस बंधाया. दो लोग घूरे के पास सोये तब जाकर सुबह तक शांति रही. आज फिर इलाज जरी था. इतवारी के बदले दूसरा स्याना बुलाया गया. उसने आते ही कुत्ते का मल. जले हुए कंडे(उपले) पर रख कर घूरे को सुंघाया. घूरे के बालों को पकडकर पूंछा जाता 'बता तू कौन है'. घूरे बोलता, "नही बताऊंगा".

इसी प्रकार कई दिनों तक इलाज चला. पंचायतों के नामी गिरामी स्याने बुलाये गये. लेकिन कुछ लाभ न होता था. फिर किसी ने राय दी कि पागलखाने वाले डॉक्टर को दिखाओ. विचार नया था ये भी आजमाया गया. डॉक्टर से दवाई आई. सब की सब नसे और नींद की दवाइयां थी. उन्हें खाकर घूरे पूरे दिन शराबी की तरह झूमता और फिर एक रात वो हुआ जिसकी कोई कल्पना भी नही कर सकता था.

कुए में कुछ गिरने फिर से आवाज आई लेकिन कोई ठीक से सुन न पाया. रात को जब घूरे की तलाश हुई तो घूरे कहीं न मिलता था. तब किसी ने कहा, "कुए की तरफ देखो". कुए का नाम सुनते ही सब के शरीर में सिरहन दौड़ गयी.

एक साथ दस बारह लोग कुए पर चढ़ गये. फिर कुए में जो देखा उसे वयां नही किया जा सकता. कुए में घूरे की लाश पड़ी तैर रही थी. सारे गाँव में कोहराम मच गया. जो सुनता दौड़ा चला आता.

और आये भी क्यों न गाँव वालों की इतनी छोटी जो दुनिया होती है इसीलिए तो एकदूसरे के लिए इतना मरते हैं. रस्सी.नसैनी (सीढी) और टार्च मंगाई गयी. एक आदमी रस्सी के सहारे कुए में उतरा. उसने घूरे की लाश में रस्सी का फंदा डाला. चार पांच लोगों ने रस्सी को खींच लिया.

घूरे कुए से बाहर निकल आया लेकिन आज जीवित न था. उसकी माँ दहाड़े मार मार कर रोयी और बेहोश हो गयी. आज उस पड़ोसिन मोटी दुकानदार महिला की आँखों में भी आंसू थे जिससे घूरे रोजाना मजाक किया करता था.

लोगों में तरह तरह की चर्चाएँ होने लगी, "देखो आत्मा मानी नही आदमी की जान लेकर ही मानी. जरुर कोई भस्मी आत्मा थी". लेकिन घूरे को आज कुछ चिंता न थी वो तो आज चिर निद्रा में सोया हुआ था. मोहल्ले की सारी मस्ती. सारा मजाक आज अपने साथ ले चला गया था.

***

जुआरी की मौत

एक छोटे से गाँव में एक आदमी रहता था. नाम तो उसका सत्तू था लेकिन लोग उसे फक्कड कहकर बुलाते थे. फक्कड़ नाम होने के पीछे भी एक लम्बी कहानी थी. जब सत्तू जवान था तब इसे रसिया और नौटंकी देखने का बहुत शौक था. कोसों दूर भी अगर रसिया होने की खबर मिल जाती तो सत्तू जाता जरुर था.

मस्त मौला आदमी था सत्तू. शादी की नही थी. घर के काम कम बाहर घूमने का काम ज्यादा रहता था. इसी कारण सत्तू का नाम फक्कड पड गया. एक दिन करीब के गाँव में नौटंकी होने की खबर मिली. सत्तू ने नौटंकी की खबर सुनते ही रात को वहां जाने की योजना बना डाली.

लेकिन सत्तू उर्फ़ फक्कड को सारा डर था अपने पिताजी का जो उसके रसिया और नौटंकी जाने के सख्त खिलाफ थे. कहते थे चुपचाप शादी करके अपने खानदान का नाम चला. क्या रखा है इस रसियों और नौटंकियों में? लेकिन फक्कड को नौटंकी के आलावा कोई और काम सूझता ही नही था.

रात हुई. फक्कड का दिल धडक रहा था लेकिन मन नौटकी की कल्पना कर रहा था. लेकिन आंगन में पिताजी सो रहे थे. फक्कड को जाना तो था. फिर फक्कड को एक तरकीब सूझी. उन्होंने लकड़ी का एक गट्ठर चारपाई पर लिटाया और ऊपर से उस पर रजाई डाल दी.

अब वो लकड़ी का गट्ठर ऐसा लग रहा था मानो फक्कड रजाई ओढ़ कर सो रहे हों. अब फक्कड को पिताजी के पास से आंगन पार करना था. आंगन पार किया और एक सांस में मुठ्टी भींच कर उस गाँव की तरफ दौड़ पड़े जहाँ नौटंकी हो रही थी.

नौटंकी वाली जगहों पर फक्कड़ अक्सर समय से पहले पहुंच जाते थे. और फिर यार दोस्तों से मजाक मस्ती करते. लेकिन इसी बीच उन्हें जुए की लत लग गयी. अब नौटंकी से पहले का खाली समय जुए से गुजरता था.

रात में नौटंकी देखने के बाद फक्कड सुबह होने से पहले ही अपने घर बापस लौट आये. आकर दोबारा रजाई ओढ़ सो गये. सुबह पिताजी उठे तो फक्कड को सोते देखा. आज पिताजी फक्कड से बहुत खुश थे. सोचते थे फक्कड अब सुधर गया है.

आज पिताजी ने फक्कड से कहा कि तुम आज मेरे साथ चलना. खेत पर थोडा काम है. फक्कड़ खा पी कर पिताजी के साथ खेत पर चल दिए. रास्ते में जाते समय जो भी आदमी दिखता वो फक्कड को 'रामराम' बोलता. उनके पिताजी की तरफ कोई देखता भी नही था.

पिताजी को बड़ा आश्चर्य होता था. सोचते बाप के सामने दुनिया भर के लोग बेटे को सलाम ठोंकते

है. लेकिन ये फक्कड़ का नौटंकी वाला परिचय था जो उन्हें इतने लोग जानते थे. फक्कड़ के साथ जितने भी लोग नौटंकी में जाते थे वे सब नौटकी में दिए पैसों को फक्कड के नाम से बुलवाते थे.

नौटंकी देख रहे लोग सोचते थे कि फक्कड काफी अमीर आदमी है. जो इतना पैसा नौटंकी में उडा जाता है. यही कारण था कि आज इतने लोग फक्कड के पिताजी के सामने उन्हें सलाम ठोंक रहे थे. जितने ज्यादा सलाम फक्कड को मिल रहे थे पिताजी का गुस्सा फक्कड के प्रति उतना ही बढ़ता जा रहा था.

एक आखिरी सलाम पर उन्हें इतना गुस्सा आया कि फक्कड के पिताजी ने फक्कड में एक लात दी और कहा, “चल भाग यहाँ से मेरी बेइज्जती कराता है. बूढ़े बाप को छोड़ लोग तुझे सलाम ठोंक रहे हैं.” फक्कड पिताजी का गुस्सा देख वहां से भाग लिए.

आज फक्कड की उम्र पचास के आसपास की थी. पिताजी भी अब नही रहे थे. नौटंकी होना अब बंद हो गयी थी. फक्कड ने भी अपना शौक बदल लिया था. वो अब नौटंकी और रसिया को छोड़ जुआ खेलने के शौकीन हो गये थे. जुए का शौक नौटंकी के शौक से ज्यादा बड़ा था. आज उन्हें पिताजी की तरह कोई रोकने वाला भी नही था. और न ही उनके बीबी बच्चे थे. क्योंकि शादी ही नही की थी.

फक्कड़ दूर दूर तक जुआ खेलने के लिए मशहूर हो गये थे. जुआ भी अच्छा खासा खेला जाता था. एक दिन फक्कड़ को करीब के ही एक गाँव से जुआ खेलने के लिए बुलावा आया. फक्कड ने पैसे लिए और चल दिए उस गाँव में जुआ खेलने के लिए.

उस गाँव में पहुंच फक्कड ने जमकर जुआ खेला. आज किस्मत फक्कड के साथ थी. जुए में जीत होती थी तो सिर्फ फक्कड की. एक तो फक्कड मझे हुए खिलाडी थे दूसरा अनुभव भी काफी था. काफी पैसा जीत चुकने के बाद फक्कड बोले, “भाई अब मेरा खेल पूरा हुआ मैं चलता हूँ.” यह कहकर फक्कड उस गाँव से अपने गाँव की तरफ चल दिए. लेकिन घर न पहुंचे.

घर के लोगों ने देखा की फक्कड अभी तक नही आये है और आज जुआ भी जीते थे. पास में पैसा भी था. सब लोगों के मन में खलबली मच गयी. सब लोग फक्कड को ढूढने के लिए चल दिए. अभी सब गाँव के बाहर तक भी न पहुंचे थे कि दूसरे गाँव का आदमी भागता हुआ आया. उसने इन लोगों को बताया की फक्कड की किसी ने हत्या कर दी है. और वो मेरे खेत की नाली में पड़े हुए है. यह सुनते ही घर के लोगों के होश उड़ गये.

फक्कड के घर के लोग गाँव वालों के साथ उस जगह पहुंचे जहाँ फक्कड का मृत शरीर पड़ा हुआ था. फक्कड की लाश पानी चलने वाली नाली में छिपा पड़ा हुआ था. हालत देख कर लगता था कि किसी ने उनसे छिना झपटी की है. और फिर मरते समय भी फक्कड ने हाथ पैर मारे होंगे.

हर समय चंचल रहने वाला फक्कड आज शांत निद्रा में पड़ा था. कुछ लोगों ने फक्कड के छोटे भाई भगत से कहा की पुलिस में शिकायत कर दो. लेकिन भगत इस बात के लिए तैयार न था. कहता था जो होना था सो हो गया. अब पुलिस में शिकायत कर किसी से दुश्मनी मोल नही लेना चाहता हूँ.

जबकि भगत चाहता तो फक्कड का हत्यारा पकड़ा जा सकता था. हाँ भगत की जगह अगर दिलेर फक्कड होते तो वह अपने भाई के लिए पुलिस में रिपोर्ट जरुर करते. फक्कड की लाश वहां से लाकर चिता में जला दी गयी. सब लोग गाँव लौट आये लेकिन उस मस्त मौला सत्तू उर्फ़ फक्कड जैसे गजब के 'जुआरी की मौत' हो गयी. सारा गाँव आज शांत था क्योंकि गाँव में आज फक्कड नही थे.

***

कातिल की मौत

चंदर का परिवार कुछ दिन पहले तक एक ख़ुशहाल परिवार था, चंदर के तीन लड़कियां और एक लड़का था. चंदर किसी ठेकेदार के यहाँ टावर लगाने का काम करता था, लेकिन अभी कुछ महीने पहले उसका काम छूट गया था. अन्य जगहों पर काफ़ी काम की खोज की लेकिन कोई भी काम चंदर को न मिल पाया.

अब चंदर की बेरोज़गारी वाली ज़िन्दगी बड़ी मुश्किल हो गयी थी, कभी-कभार बीवी से उसकी लड़ाई भी हो जाया करती थी, चंदर की बीवी उससे कहती, "देखिये आप तीन तीन लड़कियों के बाप हैं, ऐसे घर बैठ कर कैसे काम चलेगा, कुछ तो कीजिये, इस तरह से तो हम भूखे मर जायेंगे."
चंदर ने नौकरी ढूंढने की काफ़ी कोशिश की थी लेकिन कोई काम उसे मिलता तब ही तो वो कर सकता था. जब मिल ही नहीं रहा था तो करता क्या? बीवी की इस बात से खीझ उठता था, बोलता, "अरे बाबा मुझे तेरे से ज्यादा चिंता है लेकिन तू मुझे इस तरह तीन लड़कियों के ताने मत दिया कर, मैं तो पहले से ही इतनी चिंता में घिरा हुआ हूँ."

दिनों-दिन तंगी बढ़ती जा रही थी लेकिन कोई काम मिलने का नाम नहीं ले रहा था और जो मिलता भी तो उसके करने का न होता था, बेचारा चिंता का मारा सुबह काम ढूंढने जाता और शाम को ख़ाली हाथ घर लौट आता. कभी-कभी तो उसका मन करता कि लौटकर घर ही न जाए, आख़िर बीवी पूछेगी तो क्या कहेगा कि आज भी उसे काम नहीं मिला.
कभी-कभी तो रास्ते से गुज़रने पर चंदर का मन होता था कि ख़ुद को ट्रेन के आगे आकर मिटा दे, लेकिन फिर छोटे बच्चों की सूरत और बीवी की सूनी मांग उसे दिखाई दे जाती, यह सोच वह आत्महत्या करने का विचार त्याग देता था. लेकिन जो चिंता उसके मन में घर कर चुकी थी वो मिटने की जगह बढ़ती ही जा रही थी.

चार-चार बच्चों के पालन पोषण का खर्चा, उनकी पढ़ाई का खर्चा चंदर को उठाना भारी हो रहा था, दिन-प्रतिदिन चंदर अंदर से दीमक के खाए की तरह खोखला होता जा रहा था, उसे ख़ुद भी यह महसूस होने लगा था कि वो अब किसी काम का नहीं रहा. चंदर शहर की एक छोटी कालोनी में किराए के एक कमरे में रहता था, कुछ ही दूर एक कॉलोनी में चंदर का बड़ा भाई भी रहता था. एक दिन जब वो चंदर के घर आया तो उसने देखा कि चंदर की हालत बहुत बुरी है, सबसे छोटा बच्चा ठीक से खा-पी भी नहीं पा रहा था. चंदर का भाई हालत सुधरने तक छोटे बच्चे को अपने पास ले गया और उसको भी समझा कर गया कि वो चंदर के लिए कोई काम ढूंढने की कोशिश करेगा.

लेकिन चंदर तो मन ही मन घुल रहा था, उसके दिमाग में तो इस समस्या से निजात पाने के लिए तरह तरह के भयानक विचार आ रहे थे, लेकिन उन विचारो पर प्रयोग करने से चंदर का मन डरता था. वो किसी भी ऐसे काम को करने से डर रहा था जो उसके हित में नहीं था.

लेकिन जो होना होता है, जो इंसान के दिमाग़ में चल रहा होता है, शायद वो होकर ही रहता है. एक दिन चंदर की बीवी संग खूब लड़ाई हुई, दोनों ने एकदूसरे को बहुत बुरा-भला कहा, दोनों जानते थे कि ये परेशानी का हल उन दोनों के पास नहीं है और न ही उनके हाथों में, लेकिन फिर भी अपने मन की भड़ास तो निकालनी ही थी.
एक रात सब ने रुखा-सूखा खाया, फिर सोने चले गये. सुबह उसकी बड़ी लड़की उठी, तैयार हुई, फिर चंदर उसे उसकी कोचिंग सेंटर तक छोड़कर आया. लेकिन फिर कुछ समय बाद कोचिंग सेंटर पर चंदर का फोन बड़ी बेटी के पास आया, उसकी आवाज़ में बहुत उदासी भरी हुई थी, जिसे महसूस कर वह सहम गयी.

चंदर उसी उदास अन्दाज़ में अपनी बेटी से बोला, "मेरी बच्ची तुझसे मेरी ये आख़िरी बात है, आज मैं अपने आप को ख़त्म करने जा रहा हूं, तू अपने आप को संभाल कर रखना" . उसके बाद चंदर ने फ़ोन काट दिया. बेटी को अनिष्ट की आशंका ने आ घेरा, उसने साथ में पढ़ने वाले बुआ के लड़के को घर का हाल चाल जानने भेजा.

लेकिन घर का जो हाल था वो बयान नहीं क्या जा सकता था, चंदर ने अपनी बीवी और दो बच्चों की गला घोंट कर हत्या करने के बाद ख़ुद को भी गोली मार कर आत्महत्या कर ली थी, चारों लाशें कमरे में पड़ी हुईं थी, आज बेरोज़गार चंदर अपने दो बच्चो और बीवी के साथ चैन की नींद सो चुका था. आज उसे कोई काम करने की ज़रूरत नहीं थी.

बस दो बच्चे बचे थे, एक जो चन्दर का भाई ले गया था और एक लड़की जिसे सुबह के समय चन्दर कोचिंग छोड़ कर आया था, आज सब शांत था, मरने वाले तो मरे ही, मारने वाले कातिल की मौत भी साथ ही हो गयी थी. चंदर की लड़की ने जब अपने पूरे घर को मरा हुआ देखा तो बेहोश हो गयी, आज उसके पास परिवार के नाम पर कुछ भी नहीं था, उसके माँ बाप, भाई बहिन सब के सब चले गये थे, बस एक छोटा भाई रह गया था जिसे कुछ पता ही नहीं था कि हुआ क्या है, मेरे घर वाले कहाँ गये हैं. बस जानती थी तो केवल बेहोश पड़ी बेटी कि असली कातिल था कौन.

***

लावारिश लाशें

सुबह का अख़बार आ चुका था. मैंने उसे उठा कर पढना शुरू किया. शहर वाले पन्ने पर सबसे बड़ी खबर थी एक बिजली घर में आग लगने की. जिसमे काफी लोगों के मरने का आंकड़ा दिया गया था.

फिर उसी दिन मुझे उस तरफ जाना हुआ जहाँ वो विजली घर बना था. वहां पर हंगामा हो रहा था. लोग अंदर जाना चाहते थे लेकिन पुलिस उन्हें अंदर जाने से रोक रही थी. लोगों का कहना था कि उन्हें अपने घर के आदमी को देखना है. लेकिन पुलिस उनसे कह रही है कि अंदर अभी जांच हो रही है इसलिए अंदर नही जाने दे सकते हैं.

जब मैंने कुछ उसी बिजली के पास रहने वाले लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि ये आग जो बिजली घर में लगी है वो किसी तरह की गैस लीक होने की वजह से लगी है. जिसमे बीस तीस लोगों की मौत का अनुमान है.

दरअसल मसला ये था कि जब मजदूर अंदर काम कर रहे थे तो अंदर काम में आने वाली किसी तरह की ज्वलनशील गैस का रिसाव होने लगा. किसी ने उस गैस की तरफ ध्यान न दिया. और देता भी कौन? जो अंदर मजदूर काम कर रहे थे वो वेचारे तो जानते ही नही थे कि इस गैस से उन्हें क्या नुकसान हो सकता है.

जैसे ही बिजली घर में आग फैली तो वहां रखे सिलेंडर फटने शुरू हो गये. किसी को भागने का मौका भी न मिल पाया. कुछ लोगों के शरीर के तो कतरे कतरे हो गये. कुछ आग में आलू की तरह भुन गये.

चूँकि गलती सरकारी बिभाग की थी तो उसे दवाना परम आवश्यक था. आग की खबर आला अधिकारियों तक पहुंची. उन्होंने खबर की उस प्रदेश के आला अधिकारियों को. ऊपर से आर्डर आया मौत का आंकड़ा कम से कम करके दिखाओ. किसी को अंदर घुसने ही मत दो जिससे लाशों की गिनती कर सके.

और हुआ भी यही. पुलिस ने किसी भी आदमी को अंदर न जाने दिया. जिनके घर वाले जानते थे की हमारा कोई आदमी इस बिजली घर में काम करता है सिर्फ उसी को उसके आदमी की लाश मिली. वाकी की लाशों को ठिकाने लगा दिया गया.

अब मुआवजा मिलने की बात आई तो मुआवजा भी उन्ही को दिया गया जिनकी लाशों की पहचान हो चुकी थी. वहां के लोगों में तरह तरह की चर्चाएँ थी लोग कहते थे कि कम से कम दस लोग और मरे है जिनका पुलिस ने कोई आंकड़ा दिखाया ही नही है.

एक दुकान वाला कह रहा था कि में कई ऐसे लोगों को जानता हूँ जो इस विजली घर में काम करते थे जो इसमें आज मारे गये है. लेकिन पुलिस ने ये बात छिपा ली है. दुकान वाला उन लोगों को इसलिए जानता था कि वो लोग रोजाना उसके पास रोजमर्रा का सामन लेने आते थे.

पूरा मामला ये था कि उस विजली घर में स्थानीय लोगों के साथ साथ कुछ बिहार के लोग भी काम करते थे. जिनका इस जगह कोई घर वाला नही था और न ही उनका कोई पंजीकरण. जिससे कि उनकी पहचान की जा सके. उन्हें तो ठेकेदार ने रोजाना की मजदूरी के आधार पर काम में लगा लिया था.

जब ये बात आला अधिकारियों को पता चली तो उन्होंने मौतों का आंकड़ा कम दिखने के लिए इस बात का फायदा उठाया. उन्होंने उन सब लावारिस लाशों को छिपा कर ठिकाने लगा दिया और कह दिया की विजली घर में ये ही गिनी चुनी मौतें हुई है. लोगों के हंगामे पर मीडिया ने जाकर पड़ताल की.

एक पत्रकार बड़े जोशोखरोश में गये. लेकिन उन्हें अधिकारीयों ने थोडा सा मुआवजा दे दिया. दूसरे दिन अखबार में खबर आई कि बस इतने ही लोगों की मौत हुई थी. लेकिन जो बिहारी लोग उस बिजली घर में काम कर रहे थे उनके परिवार जब उनकी तलाश करेंगे तो वे उन्हें कहां ढूढेंगे.

क्योंकि उन बिहारियों का तो नौकरी करने का कोई ठिकाना ही नही. आज यहाँ तो कल वहां. घर वालों को क्या पता की हमारा एक साथी कहाँ काम कर रहा था?

उन्हें तो बस उसके हर महीने मिलने वाली तनख्वाह के पैसे से मतलब था जो उन्हें लगभग मिल ही जाती थी. लेकिन अब उन घर वालों को पैसे कौन भेजेगा क्योंकि उनका घर वाला तो बिजली घर के धमाके में मर चुका है. और उन्हें तो मुआवजा भी नही मिलेगा क्योंकि मरने वाले का कोई रिकॉर्ड जांच में मौजूद ही नही है.

जांच अधिकारी जांच कर जा चुके थे. विजली घर में काम फिर से शुरू हो गया था. लेकिन उन मजदूरों का कुछ अता पता नही था जो बिहार से आकर यहाँ काम करते थे. विजली घर में आग लगने की सुबह को भी लोगों ने उन्हें देखा था. लेकिन अब वो कहाँ गये कोई नही जानता था. क्योंकि विजली घर में हुई जांच में उन लोगों के मरने का कोई सबूत ही नही मिला था.

सब लोग चुपचाप अपने कामों में लग गये. कोई नही जानना चाहता था की 'वे' लोग कहाँ गये जो रोजाना उनसे सलाम करते हुए इसी रास्ते से विजली घर में काम करने जाते थे. उनके परिवारों का अब क्या होगा? शायद वो लोग उन लोगो की गुमशुदगी की रिपोर्ट लिखवायेगे. और फिर वही लोग उनकी जांच करेगे जिन्होंने इस विजली घर की जाँच की थी.

***

विदाई

आज चंदा की सहेली माधुरी की शादी थी. चंदा ने दौड़ दौड़ कर खूब काम किया. जिस दिन से उसे माधुरी की शादी के बारे में पता चला तब से लेकर आज तक उसने माधुरी की खास देखभाल की थी. और करती भी क्यों न? माधुरी उसकी सुख दुःख की सहेली जो ठहरी. उसे माधुरी से बिछुड़ना भी तो था.

चंदा मोहल्ले की दुलारी लड़की थी. बूढ़े से लेकर बच्चे तक सभी चंदा से प्यार करते थे. चंदा जब भी घर से निकलती सर पे चुनरी जरुर ओढ़े होती थी. मोहल्ले के बुजुर्गों की नजरों में चंदा के लिए सम्मान था. सभी से रामराम करती हुई जाती. छोटे बच्चो से छेडती हुई जाती. चंदा के माँ बाप थे. उनकी आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी न थी लेकिन उन्होंने चंदा को पढाया लिखाया. उसे बारहवीं तक पढाई करवा दी. उसके बाद पढाई बंद करवा दी. उसके साथ पढने वाली उसकी सहेली माधुरी की शादी होने जा रही थी.

अब चंदा के माँ बाप को भी चंदा की शादी की फिकर होने लगी. चंदा की माँ उसके बाप से रोजाना कहती कि इस लडकी के पीले हाथ करवा डालो. बेटी पराया धन होती है न जाने कब क्या हो जाय. चंदा के पिता बाबूलाल भी चंदा की शादी को लेकर फिकर मंद थे. उन्होंने इधर उधर के लोगों व रिश्तेदारों से कह रखा था कि कोई सही सा लड़का हो तो बताना. अपनी चंदा की शादी के लिए.

चंदा का मन शादी से कोसों दूर था. उसका मन तो अभी पढाई करने को करता था लेकिन माधुरी की शादी ने चंदा को सारे मंसूबों पर पानी फेर दिया था. घर वालों ने अकेली पड़ने के कारण उसकी पढाई रुकवा दी और उसकी शादी के लिए लड़का भी ढूढना शुरू कर दिया.

माधुरी की बारात आ चुकी थी. चंदा अपनी प्रिय सहेली माधुरी के साथ उसके कमरे में बैठी हुई उससे मजाक किये जा रही थी. चंदा माधुरी से कह रही थी, “क्यों माधुरी देवी ससुराल जाकर अपनी इस बुरी सहेली को तो भूल ही जाओगी. और वहां तो तुम्हे एक तुम्हारा साथी भी मिल जाएगा जो दिन भर तुम्हे हाथों में लिए घूमेगा.”

माधुरी जानकार भी अनजानी बनती हुई बोली, “कौन साथी”. चंदा तंज से बोली, “ओह हो कितनी भोली हो. साथी होगा तुहारा खूसट पति जो तुम्हे मुझसे दूर ले जा रहा है. अगर ये न आता तो तुम मेरे पास न रहती.”

माधुरी थोडा इतराकर बोली, “खूसट मत बोल बहन. इसमें उनका क्या दोष मेरी शादी तो मेरे घरवालों ने तय की है”. चंदा फिर से माधुरी को चिड़ा कर बोली, “हाय रे दैय्या अभी से 'उनके' गुण गाने लगी भूल गयी इस सहेली को. जा में तुझसे बात नही करती”. इतना कह चंदा मुंह फेर कर बैठ

गयी.

माधुरी अपनी सहेली की इस तरह की मजाकिया तरकीबों से वाकिफ थी. उसे पता था कि चंदा उससे कभी रूठ ही नही सकती है. उसे चंदा को मनाने का तरीका भी पता था. माधुरी ने चंदा के पास जा उसे बाहों में भर लिया और बोली, "सुन मेरी प्यारी सखी आज में जा रही हूं. कल तू जायेगी. एक दिन हर लडकी को जाना होता है. कोई भी लडकी हमेशा तो क्वारी नही रह सकती है. तो फिर में कैसे तेरे पास हमेशा रही आऊंगी."

चंदा की आँखों में आंसू आ गये. माधुरी भी अपने को गमगीन होने से न रोक सकी. चंदा रोते हुए माधुरी से बोली, "माधुरी ऐसा क्यों नही होता कि हम जाए और लडके से शादी करके उसे अपने घर ले आये. हमें ही क्यों जाना पड़ता है. हम भी तो इंसान ही है. फिर हमारे साथ ऐसा वर्ताव क्यों."

माधुरी ने चंदा के आंसू अपने साडी के पल्लू से पोंछे और उसका माथा अपने गुलाबी होंठो से चूमकर बोली, "मेरी बहन वो लडके हैं और हम लडकी. हम ऐसा नही कर सकते. ऐसा करने का अधिकार तो सिर्फ उन लोगों का ही है. तू समझ रही है न में क्या कह रही हूं."

चंदा ने माहौल को बदलते हुए ठिठोली की बोली, "हां में समझ रहीं हूं तू क्या कह रही है. तुझे तो अपने अपनी शादी की जल्दी पड़ी है. सोचती होगी जल्दी से जल्दी अपने पति के पास पहुंच जाऊं". इतना कह चंदा ने माधुरी को उसकी कमर में नोंच लिया.

माधुरी 'उई माँ' करती हुई बोली, "ठीक है तू मुझे परेशान कर ले. में तेरे पास आया ही नही करुँगी तू मुझे...". आगे बोलने से पहले ही चंदा ने उसका मुंह अपने नर्म हाथों से बंद कर दिया और बोली, "मेरी सखी. मेरी बहन दोबारा अपने मुंह से ये बात न बोलना. अगर तू न आया करेगी तो में जहर खा मर जाउंगी. या कुए में कूद अपनी जान...".

अभी चंदा कुछ कह ही रही थी कि माधुरी का मेहँदी लगा नाजुक हाथ चंदा के शरारती होठों पे आ लगा. माधुरी चंदा को अपनी बहन की तरह मानती थी. वो चंदा के मुंह से उसके मरने की बात सुन सहम उठी और चंदा का हाथ अपने चाँद से मुखड़े से हटाती हुई बोली, "चंदा मेरी बहन तुम मेरी मजाक की बातों को इतना दिल पर ले गयी और मरने मारने की बातें करने लगी. तुम क्या समझती हो मेरी सखी कि में तुम्हारे विना खुश रहूंगी. अरे मेरी भी जिन्दगी तुम्हारे बिना अधूरी ही रहेगी. मुझे भी हर वक्त तुम्हारे साथ बिताये हुए वो आलसी दिन याद आयेंगे जिनमे न शादी की चिंता थी न अपने घर से जाने की."

माधुरी बोलती ही जा रही थी, "में ये कैसे भूल सकती हूँ सखी कि तुम हमेशा मेरे साथ मेरा साया बनकर रहीं. मेरे दुखों को बाटां. मेरे सुखों का कितना ध्यान रखा. मेरे साथ रोई. मेरे साथ हंसी. में तुम्हारे बिना अधूरी हूं मेरी सखी. और तुम हो कि सोचती हो कि में तुम्हे छोड़कर खुश हो जाऊंगी."

चंदा के गुलाब की पंखुड़ियों की तरह गुलाबी और नर्म होठों पर माधुरी का मेहँदी लगा कोमल पतला हाथ अभी भी रखा था. लेकिन चंदा ने उसका हाथ अपने से अलग न किया और चुपचाप माधुरी की भावुक बातों को सुनती रही. चंदा की आँखे किसी झरने की तरह वह रहीं थी. जिसके पानी से चंदा का मुंह व माधुरी का कोमल हाथ भीग रहा था.

फिर दोनों सहेलियां ने एक दूसरे को अपनी बांहों में भर लिया. दोनों के हाथ एक दूसरे को ऐसे जकड़े थे मानो ये अब कभी एकदूसरे से अलग नही होंगी. दोनों की साँसे एक लय में चल रहीं थी. दोनों की आँखे अपनी सखी से बिछड़ने के गम में रोये ही जा रहीं थी.

माधुरी के कमरे का वातावरण करुनायुक्त हो गया लेकिन तभी माधुरी की माँ कमरे में दाखिल हुई और बोली, "अरे तुम दोनों यहाँ बैठी हो. चलो मंडप तैयार है. जल्दी अपने कपडे ठीक कर लो. माधुरी को संभाल के लाना चंदा और ये बाकी की लडकियाँ कहाँ चली गयी उन्हें...".

माधुरी माँ की बात बीच में काटती हुई रुंधे गले से बोली, "माँ सब हो जाएगा तुम परेशान मत होवो". माँ ने माधुरी की आवाज को सुना जो रुंधी हुई थी. फिर उसकी आँखों में देखा जो आंसुओ से भरी हुईं थी. माँ का दिल बेटी के लिए तडप उठा. उन्होंने माधुरी को गले से लगा लिया और बोलीं, "तू रो क्यों रहीं है मेरी बच्ची. तू कहीं विदेश में थोड़े ही जा रही है. वहां भी तेरा घर ही है और यहाँ भी. जब भी मेरी याद आये घूम जाया करना. क्या करूं मेरी बच्ची में भी नही चाहती कि तू मेरे पास से दूर जाय लेकिन ये एक न एक दिन करना ही पड़ता है."

इतना कह माँ कमरे से बाहर चली गयी. चंदा ने नम आखों से माधुरी को तैयार किया. फिर मंडप ले कर गयी. माधुरी की शादी पूरी हुई. अब उसकी विदाई होनी बाकी थी. चंदा और माधुरी दोनों के दिलों में बिछुड़ने का गम था और गम ऐसा कि लगता था कि अभी जान निकल जायेगी. लेकिन दुनिया का दस्तूर है मिल के बिछड़ना जो आज उन्हें भी निभाना था.

माधुरी का पति इतनी सुन्दर बीबी पा खुश था. उसे तो अपने घर जाना था तो रोये क्यों. रोने का काम तो माधुरी का था जो अपने आधे जीवन की यादें अपने पीहर छोड़ चली थी. सहेली. माँ. बाप. घर द्वार. पड़ोसी. मोहल्ला. गाँव. गलियाँ. नुक्कड़. बस्ती. सारी शरारतें. अठखेलियाँ और न जाने क्या क्या.

उसका सब कुछ तो यहीं था फिर वो ये सब छोड़कर क्यों जा रही थी. इसका जबाब आज तक कोई भी आदमी किसी भी पीहर से विदा होती लडकी को नही दे पाया है. आखिरकार माधुरी जैसे तैसे विदा हुई. चंदा माधुरी के जाने के बाद वहां एक पल भी न रुकी. सीधे अपने घर आई और कमरे में ओंधे मुंह लेट गयी. सोचती थी अब जल्दी ही ये सब उसके साथ भी होना है.

***

(समाप्त)